डॉ. मनोहर शर्मा का राजस्थानी साहित्य को योगदान

लेखक

डॉ. सोम नारायण पुरोहित

प्रकाशक

राजस्थान साहित्य समिति

बिसाऊ (राजस्थान)

समर्पण

जिनका शुभाशीर्वाद ही इसमें पल्लवित

हुआ है, उन्हीं पूज्य "बाबा"

पं. लक्ष्मीनारायणजी पुरोहित

(एडवोकेट साहब) को

सादर समर्पित

अनुक्रमणिका

	पृ० सं०
अध्याय—१	
डॉ० मनोहर शर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व	१
अध्याय—२	
रचनाओं का वर्गीकरण	८
अध्याय—३	
पद्य-साहित्य : विश्लेषण एवं मूल्यांकन	१८
अध्याय—४	
अनूदित साहित्य : विश्लेषण एवं मूल्यांकन	६८
अध्याय—५	
गद्य-साहित्य : विश्लेषण एवं मूल्यांकन	७७
अध्याय—६	
नाट्य-साहित्य : विश्लेषण एवं मूल्यांकन	१०१
अध्याय—७	
अन्य-साहित्य	११३

प्रस्तावना

स्मृतिकार मनु ने एक कल्पना करते हुए लिखा है कि विद्या की अधिष्ठातृ देवी ने स्वयं ब्राह्मण अध्यापक के पास जाकर कहा, "मैं तुम्हारी निधि हूं। तुम मेरी रक्षा करो।" (विद्या ब्राह्मणमेत्याह, शेवधिष्टेऽस्मि, रक्ष माम् — २।११४)। इस प्रकार प्रार्थिनी विद्या को 'तथास्तु' कहकर आश्वस्त करने वाले एक आदर्श अध्यापक की खोज में भटकती आंखें, आज आस्था और विश्वास के साथ जिस व्यक्ति-विशेष पर टिकती हैं, वह स्वनामधन्य व्यक्तित्व है डॉ मनोहर शर्मा का।

पूरी अर्द्ध शताब्दी तक डॉ शर्मा ने भोगपक्ष से ऊपर उठकर संयम और तपश्चर्या का जीवन जीते हुए अध्ययन तथा अध्यापन के ब्राह्मण-धर्म का निर्वाह किया है। इन हजार हजार दिनों के क्षण-क्षण को चिन्तन-मनन सर्जन, संकलन-सम्पादन अनुसंधान प्रकाशन आदि के विविध आयामों मे साहित्य का परिशीलन करते हुए आपने वाग्देवी को दिए हुए अपने वचन का अक्षरशः पालन तो किया ही, साथ-साथ उसे बलवती भी बनाया।

डॉ शर्मा द्वारा रचित, संकलित और सम्पादित साहित्य का परिमाण और विस्तार इतना अधिक तथा व्यापक है कि आज की परिस्थितियों मे यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि यह सब एक ही व्यक्ति का कृतित्व है।

प्रस्तुत पुस्तक में श्री सोम नारायण पुरोहित ने इस कृतित्व के कलेवर को सुष्ठु अध्ययन द्वारा सम्भवतया वर्गीकृत कर प्रभावोत्पादक रीति से प्रकाशमान किया है। इस प्रयत्न से एक सुयोग्य कृतिकार को अपनी सम्पूर्णता में आलोकित करने के साथ-साथ राजस्थान के साहित्य संस्कृति और इतिहास के अनेक अज्ञात अथवा अल्पज्ञात पक्षों को अध्येतृ जिज्ञासुओं के लिए सुलभ भी कर दिया है।

इस कृत्य की अर्थवत्ता और गरिमा डॉ शर्मा के संदर्भ में अधिक सराहनीय इस लिए भी कही जा सकती है कि आधुनिक प्रचार-माध्यमों के प्रति आपका नैसर्गिक सम्मान नहीं है। अपनी स्वाभाविक सौम्य एवं निश्छल प्रकृति से आप ने सम्मानों और पुरस्कारों की अवमानना तो नहीं की परन्तु उनके लिए कभी अंश-मात्र भी ललक नहीं रखी। जो स्वाभाविक रूप से होता गया, उसे आप निःस्पृह भाव से अंगीकृत करते गए।

श्री पुरोहित ने डॉ शर्मा के समग्र साहित्य को सात अध्यायों में विभाजित कर व्याख्यायित किया है। प्रथम दो अध्यायों में व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय तथा समस्त रचनाओं का वर्गीकरण दिया गया है। तीन से छ तक के चार अध्यायों में क्रमश पद्य, गद्य, नाट्यविधा एव अनूदित साहित्य का विश्लेषण तथा मूल्याङ्कन प्रस्तुत किया गया है। अंतिम सातवें अध्याय में उपर्युक्त के अतिरिक्त अनुसधान विषयक कृतित्व की जानकारी दी गई है। इस प्रकार श्री पुरोहित का प्रस्तुत अध्ययन सर्वांगीण तथा पर्याप्त बन गया है।

इतनी रचनाओं को पढना, मनन करना और साहित्य–जगत् के सामने उनका मूल्यांकन प्रस्तुत करना अपने आप में एक दुष्कर कार्य है, जो श्रम एव समय–साध्य होने के साथ–साथ विद्वत्ता–सापेक्ष भी है। विश्लेषण पद्धति में वैज्ञानिकता अपनाई गई है। विद्वानों की सम्मतियां तथा समीक्षाए भी यथास्थान उद्धृत की गई हैं जिनसे अध्ययन की प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

श्री पुरोहित ने जिस निष्ठा, निष्पक्षता और जिज्ञासु–भाव से यह कार्य किया है, वह सर्वथा अभिनन्दनीय है। श्री पुरोहित इस पौराहित्य के लिए, जिसमें यजमान और पुरोहित दोनों जन्मना तथा कर्मणा ब्राह्मण हैं, सभी की ओर से भूरि–भूरि साधुवाद रूपी दक्षिणा के सुपात्र हैं।

रावत सारस्वत

निवेदन

शताब्दियों का समृद्ध एव समुन्नत परम्परावाला राजस्थानी साहित्य उन्नीसवीं शताब्दी मे ऐसी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एव धार्मिक परिस्थितियों के दौर से गुजरा कि बीसवी सदी मे प्रवेश करते-करते उसका स्वरूप मध्यकालीन साहित्य की अपेक्षा आधुनिक भाव-बोध और सामयिक चेतना से समन्वित हो गया। यही चेतना आधुनिक राजस्थानी साहित्य मे मध्ययुगीन सस्कारो से मुक्ति तथा साधारण जन से सहज सम्पृक्ति का ठोस आधार बनी। गत दशको मे जिस त्वरा के साथ राजस्थानी साहित्य का सृजन हुआ, उसी अनुपात में उसके मूल्याकन की आवश्यकता भी बलवती होती गई।

आधुनिक राजस्थानी-साहित्य का प्रणयन एवं उन्नयन करने वाले लब्धप्रतिष्ठ रचनाकारो मे डॉ मनोहर जी शर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है। आपकी बहु-आयामी सृजनात्मक चेतना स्फूर्ति पैंतीस से अधिक पुस्तको तथा सैकडो निबन्धो मे प्रस्फुटित हो चुकी है। इस समग्र साहित्यिक सम्पदा का मूल्याकन करने का प्रयास सात अध्यायो मे विभक्त प्रस्तुत कृति मे किया गया है। इस प्रयास को साकार रूप देने मे बडो का शुभाशीर्वाद ही प्रतिफलित हुआ है। मेरे परम पूज्य बाबा प लक्ष्मी नारायणजी, हर नारायणजी, युगल नारायणजी का वरद हस्त मेरा सबल रहा है। मेरे मान्य गुरुदेव डॉ देवी प्रसादजी गुप्त के चरणों में बैठकर मेरी यह साधना-पूजा सम्पन्न हुई। श्रद्धेय गुरुदेव डॉ कन्हैया लालजी शर्मा, डॉ ईश्वरानन्दजी शर्मा, डॉ मदनजी केवलिया, डॉ पुरुषोत्तम प्रसादजी आसोपा, डॉ. पुष्करदत्तजी शर्मा, डा दिवाकरजी शर्मा, प प्रेमरतनजी व्यास की कृपा-दृष्टि भी मुझ पर रही है। मेरे बडे भाई साहब प श्रीनारायणजी, सरजूनारायणजी, डा दाऊनारायणजी, गणेशनारायणजी, नारायणदासजी आदि ने सदा ही मेरा मार्ग प्रशस्त किया। पूज्य प. मूलचन्दजी व्यास तथा अग्रज डॉ श्रोमनारायणजी मुझे उत्साहित करते रहे हैं। मेरे अनुज श्री मुकुन्दनारायण एम ए तथा श्री रमेशनारायण (बाबू) ने मेरे कार्य मे हाथ बटाया।

इस साधना यज्ञ मे डा मनोहरजी शर्मा, प. बाबूलालजी 'लालकवि, पं. बच्छराज-जी व्यास (कविराज), प. सत्यनारायणजी वैद्य (बैदराजजी) का स्नेह मिलता रहा है।

इस विषय की मूल प्रेरणा मुझे परम पूज्य पिताजी डॉ. ब्रज नारायण जी पुरोहित (व्याख्याता-हिन्दी-विभाग) से प्राप्त हुई। आपने अनुपम वात्सल्य-भाव से इस अनुष्ठान की पूर्ति मे योगदान किया है।

पुस्तक का प्रकाशन डॉ उदयवीरजी शर्मा, श्री तुलसीरामजी जोशी व श्री अमोलक चन्दजी जांगिड की महती कृपा से ही इतना जल्दी सभव हो सका।

मैं उन सभी महानुभावो, विद्वानो व हितैषियो का हृदय से आभार प्रदर्शित करते हुए इस शोध-प्रबध के माध्यम से मां भारती की सेवा मे एक भाव सुमन अर्पित करता हू।

सोमनारायण पुरोहित
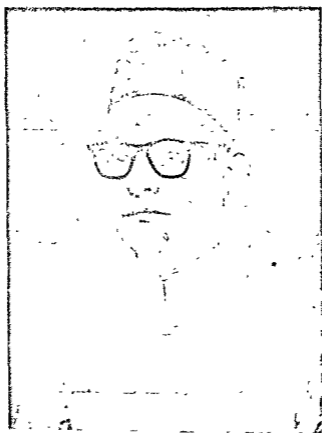
डा. मनोहर शर्मा

अध्याय—१

डा. मनोहर शर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व

डा० मनोहर शर्मा ने अपनी समर्थ लेखनी से मातृभाषा राजस्थानी की अनेक विध अपूर्व सेवा की है। अर्वाचीन साहित्य हो या प्राचीन, गद्य हो या पद्य, नाटक हो या जीवन चरित्र, शोध-पत्रिका 'वरदा' का सम्पादन हो या किसी अन्य ग्रन्थ का तथा लोक साहित्य हो या साहित्यिक शोध-कार्य, डा० मनोहर शर्मा ने प्रत्येक विधा में जिस निष्ठा से अपने योगदान द्वारा मातृभाषा के भण्डार की अभिवृद्धि की है, यह स्पृहणीय है।[1]

साहित्य और संस्कृति के जिन साधकों ने पिछले युग में विशेष साधना की है और विशेष स्तरीय साहित्य की रचना की है, उनमें डा० मनोहर शर्मा विशेष रूपेण उल्लेखनीय है।[2]

संक्षिप्त जीवनी

जन्म—

बहुत वर्षों पहले हरियाणा के देवशर (भिवानी) से छाजूरामजी नामक एक सज्जन सपरिवार राजस्थान के बिसाऊ (झुन्झनू) मे आकर आबाद हुए। इसलिए इस परिवार को बिसाऊ मे 'हरियाणियां' नाम से पुकारा गया। छाजूराम जी के पुत्र श्री गणेशनारायणजी ने 'वैदगी' का धन्धा किया और पटना (बिहार) मे यथेष्ट सपत्ति अर्जित की। उनके पुत्र श्री विश्वेश्वरलालजी हुए। उनके चार पुत्र थे। जिनमे पडित जगन्नाथजी साधु प्रकृति के सज्जन थे। राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति की सेवा मे मौन साधनारत, निरभिमानी व्यक्तित्व के धनी डा० मनोहरजी शर्मा का जन्म प० जगन्नाथजी शर्मा की धर्मपत्नि श्रीमती धन्यदेवी की कुक्षि से मिति आश्विन कृष्णा द्वितीया सवत् १९७२ वि. को शेखावाटी के बिसाऊ नगर मे हुआ।[3]

---

१ डा. मनोहर शर्मा अभिनन्दन ग्रंथ—[illegible] लक्ष्मीप्रसाद सारिया

२ वही- डा. रघुवीरसिंह

३ डा. मनोहर शर्मा अभिनन्दन ग्रंथ— डा. उदयवीर शर्मा, पृ १

शिक्षा-दीक्षा—

आपका बाल्यकाल प्राय कलकत्ते मे व्यतीत हुआ और प्रारंभिक शिक्षा महाजनी में हुई महाजनी विद्या का अच्छा अभ्यास हो चुकने के बाद आपको देवनागरी लिपि तथा हिन्दी भाषा का ज्ञान कराया गया। कलकत्ता से लौटने पर अपनी जन्म भूमि बिसाऊ की मिडिल स्कूल मे आपने पढाई की। मिडिल पास करने के बाद आपने मैट्रिक से लेकर एम० ए० तक सभी परीक्षाएं, अध्यापन कार्य करते हुए, स्वयपाठी छात्र के रूप मे उत्तीर्ण की।

व्यवसाय—

सन् १९३४ मे मैट्रिक परीक्षा पास करके बिसाऊ की प्राईमरी स्कूल मे आप अध्यापक हो गए, इसके बाद उत्तरोतर पढाई मे और पद मे आगे बढते गए।

राजस्थानी भाषा के लाडले सपूत डा. मनोहर शर्मा काफी समय तक बिसाऊ मे अध्यापन कार्य करने के बाद रुइया कालेज, रामगढ़ मे प्रोफेसर रहे[4] और फिर श्री शार्दूल सस्कृत विद्यापीठ, बीकानेर से हिन्दी प्रवक्ता के रूप मे सन् १९७२ मे अवकाश ग्रहण किया। तदुपरान्त आपने श्री अखिल भारतीय साधु मार्गी जैन सघ, बीकानेर के मुख्य पत्र (पाक्षिक) 'श्रवणोपासक' के सम्पादन का कार्यभार सभाला और सन् १९८१ तक इसी पद पर कार्य करते रहे। वर्तमान मे आप घर पर ही साहित्य सेवा मे सलग्न है।

कलकत्ते में जिस बाडी (मकान) में आप रहते थे वहां के बालको मे इकट्ठे होकर भजन गाने का बडा प्रचार था। परन्तु उस अवस्था मे आपको महाजनी विद्या आती थी और हिन्दी का लिपि ज्ञान न था अत 'ब्रह्मानन्द भजनमाला' के अधिकाश भजन मण्डली के साथ गाते गाते आपने सग्रह कर लिए। यहीं से आप मे साहित्यिक रूचि का बीजारोपण हुआ। इसके बाद सम्वत् १९८२ म यह परिवार बिसाऊ आ गया और वहां की मिडिल स्कूल में पढाई चालू हुई। वहा एक हस्तलिखित पत्र 'सोरभ' का प्रकाशन पडित श्रीलालजी मिश्र (प्रधानाध्यापक) की देख रेख मे होता था। उस पत्रिका ने आपकी साहित्यिक रूचि को और भी अधिक बढाया। आपने उसमे अनेक प्रकार की बालोपयोगी छोटी-छोटी रचनाएं देनी प्रारभ की। कालान्तर मे सन् १९३४ मे अध्यापन कार्य प्रारभ करने के बाद तो आपकी रूचि साहित्य की ओर इतनी अभिवृद्ध हुई कि आपने श्री हिन्दी पुस्तकालय बिसाऊ के लगभग सभी साहित्यिक ग्र थ अत्यन्त ध्यानपूर्वक पढ डाले और उसके साथ ही बगाल

४ डा. मनोहर शर्मा अभिनन्दन ग्रथ—
डा. उदयबीर शर्मा, पृ. २

की संस्कृत परीक्षाएं भी (अन्तिम उपाधि काव्यतीर्थ तक) उत्तीर्ण कर ली। इसी प्रकार हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की भी प्रथमा से लेकर 'साहित्य-रत्न' तक सभी परीक्षाएं उत्तीर्ण की। इनके साथ यूनीवर्सिटी की परीक्षाओं का क्रम भी जारी रहा। आपने आगरा यूनीवर्सिटी से बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की और नागपुर विश्वविद्यालय से एम०ए० (हिन्दी) परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद राजस्थान विश्वविद्यालय से सन् १९६५ मे पंडित कन्हैयालालजी सहल (पिलानी) के निर्देशन मे आपने पी-एच.डी उपाधि प्राप्त की।[5]

सर्जनात्मक उपक्रम—

सन् १९३४ से अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ आपका लेखन श्रम भी आज तक बराबर चालू है। मारवाड़ी सम्मेलन के मुख पत्र 'समाज-सेवक' मे सन् १९३४ से ही आपके लेख प्रकाशित होने लगे। ये सभी लेख राजस्थानी भाषा एवं राजस्थानी साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित थे। सन् १९३७ मे 'हंस' मे[6] आपका २५ पृष्ठो का एक लेख 'राजस्थान का एक कवि राजिया' नाम से प्रकाशित हुआ जिसके सम्पादक उस समय श्री जैनेन्द्रकुमारजी जैन थे। इसके बाद तो आपका लेखन-श्रम बहुत ही तीव्र गति से आगे बढा परन्तु प्रकाशन की सुविधा न होने के कारण वह इकट्ठा ही होता रहा। जब उदयपुर से शोध पत्रिका (त्रैमासिक) का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ तो क्रमशः उसमे आपके बडे-बडे लेख नियमित रूप से प्रकाशित होने लगे। इसके बाद 'बिडला एजूकेशनल ट्रस्ट, पिलानी' से 'मरु भारती' त्रैमासिक का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ तो उसमे भी आपके लेखो का ताता ही बंध गया।

लेखन-कार्य मे विशेष प्रेरणा आपको 'टाड' राजस्थान के अध्ययन से हुई। इसी प्रकार 'शोध' कार्य की रूचि 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका काशी' की फाइलो के अध्ययन से जागृत हुई। डा वासुदेवशरणजी अग्रवाल से आपको लोक-साहित्य के संग्रह सम्पादन तथा विवेचन की प्रेरणा मिली। श्री अग्रवाल जी से उनके अन्तिम समय तक आपका घनिष्ट सम्पर्क बना रहा।

व्यक्तित्व—

लम्बा कद, काली टोपी, श्वेत केश, तेजस्वी नेत्र, धोती बंद गले का कोट तथा चश्मे की वेशभूषा से आपका शरीर अलंकार विहीन होते हुए भी सादगी से ऐसा शोभायमान है कि दर्शक या आगन्तुक झट पहचान जाता है कि यह कोई मौन साधक है। मधुर मुस्कान, मितभाषण, तत्व एवं सारयुक्त कथन, विषय की गहराई,

---

५ पी-एच. डी. का विषय— राजस्थानी बाल साहित्य : एक अध्ययन

६ हंस, सन् १९३७

तक त्वरित पैठ तथा सहयोग एवं सहकार भावयुक्त गति आपके स्वाभाविक गुण हैं। एक बार सम्पर्क सूत्र मे बंधने वाला व्यक्ति आपसे कभी दूर नही हो सकता। आपका आकर्षक मेल मिलापी एवं सहयोगी व्यक्तित्व ही दूसरों को अपनी ओर खींचता है, दूसरों के हृदय मे स्वतः ही डा. शर्मा जी के प्रति पूजनीय भाव स्थापित करता है तथा सभी को जीवन मे अग्रसर होने की सजीवनी देता है। यह आपकी साधना की देन है। 'सादो खाणो अर ऊंचो गाणो' आपके सरल जीवन का मूल मंत्र है। इस आदर्श को सदैव सम्मुख रख कर ही आप एक अथक पथिक बने और अपने जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति हेतु परम निष्ठा से सदैव अग्रसर होते जा रहे हैं। आपकी साहित्य साधना एक उज्जवल आदर्श है।[7]

पद

आप राजस्थान-साहित्य समिति बिसाऊ के उपाध्यक्ष हैं।

आप 'राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर' की सरस्वती सभा के करीब बीस वर्ष तक लगातार सदस्य रहे।

आप साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के राजस्थानी एडवाईजरी बोर्ड के सदस्य सन् १९८२ तक रहे।

आप बिड़ला एजुकेशनल ट्रस्ट, पिलानी की 'शोध-पत्रिका' 'मरु भारती' के परामर्श मण्डल के सदस्य हैं।

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान बीकानेर के पीठ स्थविर पद पर आप प्रतिष्ठित हैं।

आप 'श्री संगीत भारती, बीकानेर' (संगीत महाविद्यालय) की प्रबन्ध कारिणी समिति के अध्यक्ष सन् १९८१ तक रहे।

'वरदा' त्रैमासिक शोध पत्रिका के पिछले पच्चीस वर्षों से आप अवैतनिक सम्पादक हैं। -

हिन्दी विश्व भारती, बीकानेर की त्रैमासिक शोध-पत्रिका 'विश्वम्भरा' के पिछले पाच वर्षों से आप अवैतनिक सम्पादक है।

'राजस्थान-भारती', 'वैचारिकी', 'कला-अनुसंधान' पत्रिका (बीकानेर आदि) के सम्पादक मण्डल मे आप रह चुके हैं।

पुरस्कार

१ राजस्थानी लघु कथा संग्रह 'सोनल-भींग' पर तीन पुरस्कार प्राप्त हुए हैं-

(क) राजस्थानी प्रचारिणी सभा कलकत्ता (सन् १९७२)

७ डा० मनोहर शर्मा अभिनन्दन ग्रंथ— डा० उदयवीर शर्मा, पृ. २

(ख) मारवाडी सम्मेलन बम्बई (सन् १९७६)

(ग) राजस्थानी भाषा साहित्य संगम बीकानेर (सन् १९७६-७७)

(२) धोरा रो संगीत

'धोरा री संगीत' काव्य संकलन पर 'मारवाडी सम्मेलन बम्बई' का 'वागेश्वरी' पुरस्कार (सन् १९८०)

(३) बाल-बाडी

'बाल-बाडी' नामक बाल कथाओं के संग्रह अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के अन्तर्गत 'राजस्थानी भाषा साहित्य संगम बीकानेर' का पुरस्कार (सन् १९७९-८०)

सम्मान एवं अभिनन्दन

— राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा 'विशिष्ट साहित्यकार' के रूप में सम्मानित (सन् १९६७-६८)

'श्री संगीत भारती, बीकानेर' द्वारा सम्मानित तथा लोक-कला एवं लोक साहित्य की सेवा हेतु 'कला श्री' उपाधि से अलंकृत (सन् १९७०)

'राजस्थान रचनाकार दिल्ली' की ओर से 'प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार' के रूप में सम्मानित एवं पुरस्कृत (सन् १९७६)

'साहित्य परिषद, लक्ष्मणगढ' की ओर से सम्मानित (सन् १९७५)

श्री तरुण साहित्य-परिषद् बिसाऊ की ओर से 'अभिनन्दन ग्रंथ' एवं 'सम्मान राशि' भेंट (सन् १९७८)

राजस्थान के विद्वानों की दृष्टि में डा. मनोहर जी

श्री कन्हैयालालजी सेठिया के अनुसार— 'डा० शर्मा राजस्थानी भाषा रा मूंठा लिखारा, हिमतावान कवि अर मायड भाषा रै खातर घणी रमाणिया मोटा तपसी है। लोक साहित्य रै खेतर में वां रो योगदान घणमोलो है।'[8]

डा० महेन्द्रजी भानावत के अनुसार— 'डा० मनोहर शर्मा सुलेखक हैं, साफ लेखक हैं। सज्जन, सरल और सहज लेखक हैं। उनके लेखन में जहां सरसता है, वहीं सम्पन्नता है, माधुर्य है, चित्रात्मकता है, मोहकता है, सजीदगी है, एक निरन्तरता का भाव है। वे हिन्दी, संस्कृत और राजस्थानी तीनों में लिखते हैं और हर विधा के विद्वान हैं।'[9]

---

८ डा० मनोहर शर्मा अभिनन्दन ग्रंथ, पृ ८   ९ वही पृ ११

डा नरेन्द्र जी भानावत के शब्दो मे— 'डा० शर्माजी उन साहित्य-मनीषियो मे से हैं, जिन्होने मा मरुधरा को अपनी साहित्य-साधना से सरस और समृद्ध बनाया है।'

आप लोक-भूमि और लोक-धम की गध व जीवन्तता से जुड़े हुए साहित्यकार हैं। लोक-साहित्य के सग्रह, सम्पादन, विश्लेषण और मूल्यांकन के क्षेत्र मे आपकी सेवाए बहुमुखी और मार्गदर्शक हैं। लोक साहित्य के सभी पक्षों— क्या लोक-गीत, क्या लोक नाटध, क्या लोक-भाषा, क्या लोक - कथा और लोकोक्ति पर आपने गहरी अनुभूति के साथ लिखा है। लोक-जीवन के कई अज्ञात और अनछुए क्षेत्रो को आपने अपने श्रम और सामर्थ्य से ज्योतिरमान किया है। आप लोक - साहित्य के उद्धारक और व्याख्याता ही नहीं हैं अपितु सर्जनधर्मी रचनाकार भी हैं।[10]

श्री दुर्गाप्रसादजी दाधीच के मत से— 'आप राजस्थानी - काव्य के मार्मिक व्याख्याकार, लोक कथाओ के प्रमुख टीकाकार, गम्भीर आलोचक, भावुक कवि, प्रेरणादायक लेखक और प्रकाश-पुज साहित्यकार के रूप मे प्रतिष्ठापित हैं।'[11]

शर्माजी का बहुआयामी कृतित्व राजस्थानी, हिन्दी व सस्कृत मे प्रस्फुटित हुआ है। आपकी मौलिक कृतिया ता साहित्य-श्री की अभिवृद्धि करती ही हैं, अनूदित रचनाए भी मौलिक प्रतीत होती हैं। आपने सस्कृत से राजस्थानी मे अनुवाद किया [12] तो राजस्थानी से सस्कृत मे भी।[13] अग्रेजी से राजस्थानी मे किया हुआ अनुवाद [14] अति सटीक है।

'राजस्थान के वरिष्ठ साहित्य साधको मे डा० मनोहर शर्मा का उल्लेखनीय स्थान है। लम्बे समय से निरन्तर साहित्य साधना मे रत है। उनके बहुत से ग्रथ व अनेकों महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हो चुके है। राजस्थानी लोक साहित्य के तो वे मर्मज्ञ विद्वान हैं। राजस्थानी की अनेक विधाओं मे उनकी लेखनी अबाध गति से व समान रूप से चलती रही है। एक ओर वे कवि हैं, दूसरी ओर निबन्धकार तो तीसरी ओर एकाकी आदि भी लिखते हैं। राजस्थानी भाषा और लोक साहित्य को उनकी सेवाए सदा स्मरणीय रहेंगी।[15]

---

१० वही, पृ० १३
११ डा० मनोहर शर्मा अभिनन्दन ग्रथ, पृ १६
१२ द्रष्टव्य अध्याय ३—६
१३ राजिया रा दूहा का सस्कृत मे अनुवाद
१४ ऊमर खैयाम री रूबाइयां
१५ वही, पृ ८

निष्कर्ष

सन् १९५८ से नियमित प्रकाशित होने वाली शोध-पत्रिका 'वरदा'[16] के यशस्वी सम्पादक डा॰ मनोहर शर्मा ने मातृभाषा की अन्यतम सेवा की है। राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ [राजस्थान] के माध्यम से अपने सहयोगियों के साथ राजस्थानी-भाषा की चौमुखी समृद्धि में जी-जान से जुटे हैं।[17]

लोक साहित्य के मर्मज्ञ, शोधकर्ता, कवि, नाटककार, अनुवादक और समालोचक के रूप में इस प्रौढ़ साहित्यकार ने अनेक प्रयोग किये हैं और उनमें सफलता प्राप्त हुई है। आधुनिक राजस्थानी में आपने सर्वाधिक काव्य रचना की है, जो गुण और संख्या दोनों ही दृष्टियों से प्रशंसनीय हैं।[18]

---

१६ वरदा- [स०] डा- मनोहर शर्मा, प्र० राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ

१७ आधुनिक राजस्थानी साहित्य- श्री भूपतिराय साकरिया, पृ. ६६

१८ वही

अध्याय—२

रचनाओं का वर्गीकरण

साहित्य-साधना मे ही अपना सम्पूर्ण जीवन लगा देने वाले डा. मनोहरजी शर्मा जीवन के एक चौथे-आश्रम मे पहुचने के उपरान्त आज भी पूरी निष्ठा, लगन और धैर्य से साहित्य के सर्जन और सवर्धन मे लगे हैं।[1] मौन-साधना-रत मनोहर जी ने अत्यधिक लिखा है।

किसी भी साहित्यकार की रचनाओ का समग्र रूप से अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी सभी रचनाओं का समुचित रूप मे वर्गीकरण किया जाय। जिन साहित्यकारो ने प्रचुर मात्रा मे लिखा है उनके साहित्य का वर्गीकरण किये बिना तो पाठक के सामने कोई चित्र स्पष्ट ही नही हो सकता। डा० मनोहरजी शर्मा की रचनाए बहुत बडी सख्या मे हैं, इसके साथ ही उनकी रचनाओ मे भाषा, विषय तथा शैली की दृष्टि से विविधता है। उन्होंने हिन्दी मे भी बहुत लिखा है। उनके हिन्दी लेख भी प्राय किसी न किसी रूप मे राजस्थान से सबन्धित हैं। भले ही उनमे प्राचीन-राजस्थानी भाषा - साहित्य का महत्व प्रकट किया गया हो अथवा उनमे राजस्थान की सस्कृति का पुरातत्व और इतिहास वर्णित हो अथवा उनमे राजस्थानी लोक - साहित्य की महिमा हो। आपने अनुसधान व समीक्षा के साथ ही नवीन मौलिक रचनाओ का प्रणयन भी प्रचुर मात्रा मे किया है।[2] राजस्थानी-लोक-साहित्य के क्षेत्र मे भी सग्रह व सम्पादन का बहुत अधिक कार्य आपने किया है। इतना सब कुछ होते हुए भी यह तथ्य ध्यान मे रखने योग्य है कि आपने राजस्थानी-साहित्य और

---

१. परम्परा (भाग ५३-५४)-(स०) डा० नारायण सिंह भाटी, पृ० ६६

२. 'सोनल भीग' सुहावणी, पोथी परम पुनीत।
रची बिसाऊ नगर का, विप्र मनोहर मीत॥
विप्र मनोहर मीत, डाक्टर पदवी - धारी।
लिख्या थान का थान, कलम का अथक पुजारी॥
कह वाका कविराय, गद्य मे 'मैंप' बडो हो।
रच दी 'सोनल भीग,' ताकि यो 'मैंप' बडो हो॥
('नैणसी'— कलकत्ता, अगस्त १९७५, बरस ४, अक २)

संस्कृति को भारतीय-साहित्य और संस्कृति का एक अभिन्न अंग मानते हुए उसके महत्व का प्रकाशन किया है।

डा० मनोहरजी के साहित्य का वर्गीकरण एवं संक्षिप्त परिचय इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है। यथा–

(क) राजस्थानी भाषा में रचित स्वतंत्र रचनाएं तथा अनुवाद

राजस्थानी पद्य[3]

अरावळी की आतमा

इसमें विविध विषयों पर दोहामय कविताएं हैं।

गीत–कथा

इसमें वीर रसात्मक पद्य कथाएं हैं।

गांधी–गाथा

यह गांधी जी के जीवन पर आधारित गेय काव्य है, जो अंग्रेजी की लम्बी कविता के रूप में है। इसका 'रिकार्ड' बन चुका है।

कूंजां

यह गेय काव्य है जो संस्कृत के 'सदेश' काव्य 'मेघदूत' की शैली पर लिखा गया है।

गोपी-गीत

यह भी गेय काव्य है जिसमें उद्धव-गोपी संवाद का प्रसंग गुम्फित किया गया है।

धोरां री संगीत

इसमें राजस्थान, गुजरात, सिंध तथा मालवा की विशिष्ट प्रेम कथाएं गेय काव्य के रूप में प्रस्तुत की गई हैं।

अमर-फळ

यह राजस्थानी खण्ड-काव्य है जो उपनिषद् वर्णित 'नचिकेता और यम' के कथानक पर आधारित है।

अन्तरजामी

यह भी अमरफळ की भांति एक आध्यात्मिक काव्य है जिसमें 'केनोपनिषद्' के प्रसंग का नवीन ढंग से प्रस्तुतीकरण किया गया है।

जय जन नायक

यह प्रशस्ति काव्य है जिसमें भारत के प्राचीन, मध्यकालीन तथा वर्तमान युग के विशिष्ट व्यक्तियों के सम्बन्ध में दोहे लिखे गये हैं।

---

३ विस्तृत विवेचन अध्याय ३ में

आरजधारा

इसमें भारत के विशिष्ट वीरों का डिंगल गीतो के रूप मे यशोगान किया गया है।

पछी

यह एक दोहामय खण्ड-काव्य है जिसमे एक शुक की करुण कथा वर्णित है।

अबला

इसमें भारतीय नारियों के सबध मे दोहे लिखे गये हैं, परन्तु उन्ही नारियो की चर्चा की गई है जिनका जीवन किसी विशिष्ट समस्या मे उलझा हुआ रहा है।

गजमोती

इसमें चितन प्रधान फुटकर पद्य हैं, जो मुख्य रूप से प्रकृति से सबधित हैं।

फूल-पाखडी [4]

इसमे फूटकल कविताओं का सग्रह है, जो प्राय दोहामयी हैं। दोहो की सख्या के अनुसार उनको पच्चीसी, बत्तीसी, बावनी और बहत्तरी आदि नामों से भी अभिहित किया जा सकता है, यद्यपि उनका नामकरण इस रूप मे नही होकर नये शीर्षकों के साथ हुआ है (प्रकाशक— हिन्दी विश्व भारती, बीकानेर)। सन् १९८३.

ऊपर जितनी काव्य-कृतियो का उल्लेख किया गया है उनमे स सख्या एक से लेकर छह तक पुस्तक रूप में प्रकाशित हैं। इसके बाद सख्या सात से लेकर अन्य सभी रचनाए पत्र पत्रिकाओं मे प्रकाशित हो चुकी हैं।[5] अमरफळ नामक

४ 'फूल पाखडी' माय भरया है, रस अर सोरभ रो भडार।
सुबरण-रग रचाय सजाई, सगळी खूब सुवार-सुवार ॥ १ ॥
'कवि-किलोळ' रै साथ बनै है, 'राजस्थानी-रस' री धार।
'भान-भात रा फूल' खिल्या है, सुघड 'मुरगी रत' आधार ॥ २ ॥
'जुग-चरचा' मे हमता-हसता, पायो 'वाणी रो वरदान'।
'अविनासी री जोत' पाण हो, 'मिनखाचार' बण्यो छविमान ॥ ३ ॥
'विग्यानी नै चेत' करायो, दीन्यो 'रग पीथल राठोर'।
'तारा छाई रात' विवाळै, बोलै 'मरुवाणी रा मोर' ॥ ४ ॥
मरम मनूगा दूहा सगळा, माय भरया इमरत - उपदेस।
जुग-जुग अमर रवै आ वाणी, धन-धन है म्हारो मरुदेस ॥ ५ ॥
(श्री महावीरप्रसाद जोशी, सादुलपुर)

५ विस्तृत विवेचन अध्याय- ४ में

आपका एक काव्य-संग्रह भी है। इसमे संख्या सात से लेकर संख्या तेरह तक वर्णित कई रचनाएं संकलित हैं। इनके अतिरिक्त आपने फुटकर रूप से, विविध विषयों पर राजस्थानी मे रचनाएं प्रस्तुत की हैं, जो समय-समय पर विविध पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित होती रही हैं ।

(ख) राजस्थानी मे पद्यात्मक अनुवाद[6]

डा० मनोहरजी शर्मा ने अन्य भाषाओ की अनेक महत्वपूर्ण कृतियो का राजस्थानी मे पद्यबद्ध अनुवाद भी प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है—

राजस्थानी मेघदूत—

यह महाकवि कालिदास विरचित विश्व विख्यात खण्ड काव्य 'मेघदूत' का राजस्थानी अनुवाद है ।

राजस्थानी उमर खैयाम

सुप्रसिद्ध फारसी कवि उमर खैयाम की रुबाइयो का राजस्थानी अनुवाद प्रस्तुत कृति म किया गया है, जो अ ग्रेजी कवि फिटजेराल्ड के अ ग्रेजी रूपान्तर पर आधारित है ।

वीतराग री वाणी

इसमे 'धम्मपद' (पालि म रचित) और 'महावीर वाणी' (प्राकृत मे रचित) के चुने हुए अ शो का राजस्थानी दोहो म अनुवाद प्रस्तुत किया गया है ।

राजस्थानी गीता सार

इसमे श्रीमद्भगवद्गीता के चुने हुए श्लोको का राजस्थानी दोहों में अनुवाद किया गया है ।

राजस्थानी अन्योक्ति शतक

यह कृति पडितराज जगन्नाथ के 'भामिनी विलास' के नीति शतक का विविध छन्दो म रूपान्तर है ।

राजस्थानी रवीन्द्र वाणी

इसमें विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की चुनी हुई बगला कविताओ का राजस्थानी में रूपान्तर किया गया है ।

(ग) राजस्थानी-गद्य[7]

वर्तमान युग में राजस्थानी गद्य-साहित्य के विकास की आवश्यकता की ओर साहित्यकारो का ध्यान गया है। राजस्थानी का पुराना गद्य-साहित्य तो अति

६ - वही

७ - विस्तृत विवेचन अध्याय ५ मे

विस्तृत व महत्वपूर्ण है परन्तु राजस्थानी के वर्तमान गद्य की स्थिति इतनी सन्तोष जनक नहीं है। इस कमी को ध्यान में रखते हुए डा० मनोहर शर्मा ने राजस्थानी में अनेक गद्य रचनाए प्रस्तुत की हैं जो इस प्रकार हैं —

कहानी विधा

कन्यादान

यह राजस्थानी कहानी-सग्रह है। इसमें तेरह कहानियां हैं।

सोनल भींग

यह राजस्थानी लघु कथा सग्रह है। जिसमे सतार कथाएं हैं।

बाल-वाडी

'बाल-वाडी' मे राजस्थानी बाल-कथाए लिखित है।

निबन्ध विधा

रोहिड़े रा फूल

यह व्यग्यात्मक राजस्थानी निबन्ध सग्रह है। इसमे तेबीस निबन्ध हैं।

एकाकी विधा[8]

नैणसी रो साको

'नैणसी रो साको' राजस्थानी एकाकी सग्रह है।

इनके अलावा भी आपके फुटकर लेख तथा कहानिया विविध राजस्थानी पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित हैं।

(घ) प्राचीन राजस्थानी साहित्य का सकलन एवं सम्पादन

बातां रो झूमखो

राजस्थानी में कहानी को 'बात' (वात) कहते हैं। ये बातें असख्य हैं। 'झूमखो' के तीन भाग प्रकाशित हो चुके हैं जिनमे पुरानी राजस्थानी बातों का पाद-टिप्पणियो सहित सग्रह किया गया है।

कुंवरसी साखळो

यह राजस्थानी की बडे आकार की पुरानी बात है, जिसे आधुनिक लघु 'उपन्यास' के रूप मे माना जा सकता है। इसमे राजस्थान के सामन्ती जीवन का सुन्दर चित्रण है। भूमिका लेखक श्री रावत सारस्वत के अनुसार प्रस्तुत रचना माय राजस्थानी सामन्ती जीवण रो विस्तृत अर स्वाभाविक चित्र परगट है। दैनिक

---

८ विस्तृत विवेचन अध्याय ६ मे

व्यवहार अर पारस्परिक सिष्टाचार रो इसो खरो चित्रण दूजी ठौड दुरळभ है।... ...
ई रचना माय रावळै रै जीवण रो चित्रण तो भौत ही घणो विस्तृत अर स्पष्ट है।
पुराणी युद्ध-प्रक्रिया भी देखबा जोग है। रीति-रिवाजा रो विवरण तो भूंयो ई कोनी जा सकै। प्राचीन भारत रै 'योधेय-गण' रै टळतै दिनरी दसा भी जाईया जाति रै रूप मे ध्यान देवण लायक है।[9]

राहब साहब

यह भी राजस्थानी की पुरानी बडी बात है, जो 'कुंवरसी सांखळो' की भांति ही रोचक है।

रणमल खावडिये री बात

यह भी राजस्थानी की पुरानी बात है।

प्राचीन राजस्थानी बात - संग्रह

श्रीलाल नथमल जोशी के सहयोग मे सम्पादित तथा साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से प्रकाशित

चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि

राजस्थानी मे चन्द्रसखी के नाम से गाये जाने वाले भक्ति भाव के पदो को प्रस्तुत कृति मे संकलित किया गया है।

गोपीचंद

यह राजस्थानी का लोक-प्रचलित जन काव्य है जिसको जोगी लोग सारंगी पर गाते है। इसकी कथा विख्यात है।

पार्वती जी रो ब्यावलो

यह भी राजस्थानी का विस्तृत जन काव्य है जिसे जोगी लोग सारंगी पर गाते हैं। राजस्थानी महिला-समाज मे यह काव्य अति लोकप्रिय है। जिस रचना मे विवाह का वर्णन हो उसे 'ब्याहुलो' या 'ब्यावला' कहते हैं। इसे मंगल काव्य भी कहा जाता है।

राजस्थानी जन काव्य

इसमे जन साधारण मे गाये जाने वाले 'जीडो' का संकलन किया गया है। राजस्थान मे कई 'जीडो' काव्य जनसाधारण मे प्रचलित है। लम्बे लोक-गीतो को 'जीडो' भी कहा जाता है। रुपादे, तोलादे, भरथरी आदि से संबंधित 'जीडे' प्रकाशित किये गये हैं।

---

९ कुंवरसी सांखळो - (सं०) डा० मनोहर शर्मा। भूमिका, पृ० ६

राजस्थानी प्रवाद

प्रवाद ऐसे पद्य को कहा जाता है जो लोक प्रचलित हो और जिसके साथ कोई छोटा मोटा प्रसग भी जुड़ा हो। राजस्थानी प्रवादो के सात शतक लिपिबद्ध किये गये हैं और उनको 'वरदा' पत्रिका मे धारावाहिक प्रकाशित किया गया है।[10]

'राजस्थानी प्रवाद' नामक आपकी एक स्वतन्त्र पुस्तक भी श्री अग्रसेन भवन कलकत्ते मे प्रकाशित हो चुकी है।

राजस्थानी पहेलिया

राजस्थानी प्रवादो के समान ही राजस्थानी पहेलियो के दस शतक प्रकाशित किये गये हैं।[11]

राजस्थानी चुटकला

राजस्थानी के लोक प्रचलित चुटकलो के दो शतक प्रकाशित किये गये हैं।[12]

राजस्थानी अधूरा-पूरा[13]

सामान्यत राजस्थानी मे 'अधूरा-पूरा' उस पद्य का कहते हैं जो किसी प्रसग के साथ अन्त मे कहावत लिए हुए होता है। ऐसा प्रसग उस कहावत के अभिप्राय को स्पष्ट करता है।

(ड) हिन्दी लेखन कार्य[14]

डा० मनोहरजी शर्मा ने हिन्दी म बहुत अधिक लिखा है परन्तु वह लगभग सारा का सारा ही राजस्थानी भाषा, साहित्य, सस्कृति आदि से सबधित है। यथा—

शोध प्रबन्ध

'राजस्थानी वात साहित्य एक अध्ययन' यह आपका पी-एच०डी० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध है। इसम राजस्थानी की पुरानी वातों का विस्तृत एव तात्त्विक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा

इसम राजस्थानी लोक-साहित्य विषयक विस्तृत लेखो का सग्रह है। जिनमे

---

१० वरदा - विविध अको म क्रमिक रूप से प्रकाशित

११ वरदा— विविध अकों म प्रकाशित

१२ वरदा - विविध अकों में क्रमिक रूप से प्रकाशित

१३ वरदा - क्रमिक रूप से प्रकाशित

१४ - विस्तृत विवेचन अध्याय ७ म

राजस्थान के सांस्कृतिक परिवेश के साथ भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल प्रकाश देदीप्यमान है।

राजस्थानी लेख संग्रह

यह (राजस्थानी पुरातत्व और प्राचीन राजस्थानी साहित्य के विषय में) अनुसंधानात्मक लेखों का संग्रह है।

राजस्थानी संस्कृति की रूपरेखा

इसमें राजस्थानी लोक संस्कृति के एक पक्ष (राजस्थान की धर्मप्रियता) के संबंध में विस्तार से प्रकाश डाला गया है। पूज्य विनोबा भावे जब पद - यात्रा करते हुए बिसाऊ नगर में पधारे थे उस समय यह पुस्तक उन्हें भेंट की गई थी।

रससिद्ध रामनाथ कविया

राजस्थानी साहित्य - समिति बिसाऊ के तत्वावधान में महाकवि 'ईश्वरदास ग्रासन' से दिया गया यह विस्तृत अभिभाषण है। इसमें राजस्थानी कवि रामनाथ कविया की रचनाओं का सांगोपांग विवचन किया गया है।

राजस्थानी कथा गीत एक पर्यावलोचन

यह भी एक विस्तृत अभिभाषण है जो 'राजस्थानी शोध संस्थान' चौपासणी, में दिया गया था।

राजस्थानी हरजस

यह भी एक अभिभाषण है जो श्री संगीत भारती बीकानेर के 'कृष्णानन्द-ग्रासन' से दिया गया है। इसमें उन लोक गीतों का विवचन है जो हरि (राम व कृष्ण) के जीवन से संबंधित हैं।

डा० दशरथ शर्मा लेख-संग्रह

इस ग्रंथ मे राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार डा० दशरथजी शर्मा के लिखे हुए विविध अनुसंधानपूर्ण लेखों का संग्रह व सम्पादन डा दिवाकरजी शर्मा (बीकानेर) के सहयोग में किया गया है। इससे प्रकट होता है कि डा. मनोहरजी की साहित्य के साथ-साथ इतिहास मे भी गहरी रुचि है।

(च) लेख मालाएं

डा मनोहरजी शर्मा ने विविध पत्र पत्रिकाओं में अनेक लेख मालाएं प्रकाशित करवायी हैं जिनके लेख किसी रूप में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

राजस्थानी बात-विवेचन

उपर्युक्त 'भूमखो' के अतिरिक्त बहुत अधिक राजस्थानी बातें विवेचन सहित मूल रूप मे प्रकाशित करवायी गयी हैं। राजस्थानी बात आपका प्रमुख विषय रहा है अत इस विषय म आपकी देन सदा ही अविस्मरणीय रहेगी।

राजस्थानी की मौखिक सत वाणी

इसमें राजस्थानी जनसाधारण मे गाये जाने वाले निर्गुण पदों के सबध मे विस्तृत लेख लिखे गये है। इनम से प्रत्येक लेख मे किसी एक सत कवि की वाणी पर प्रकाश डाला गया है।

राजस्थानी की मौखिक भक्त वाणी

प्रस्तुत लेख माला राजस्थान मे गाये जाने वाले सगुण भक्ति के पदों के सबध मे है।

राजस्थानी लोक गीतो मे भारतीय सस्कृति

इस लेख माला के प्रत्येक लेख मे किसी एक राजस्थानी लोक गीत का सास्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिसम केवल राजस्थान का ही नही अपितु समस्त भारत की सस्कृति का सुमधुर तथा समग्र स्वर गु जायमान है।

राजस्थानी शब्द चर्चा

इस लेख माला मे प्राचीन साहित्य म प्रयुक्त कतिपय विशिष्ट शब्दो पर विस्तृत चर्चा की गई है जिनका अर्थ अस्पष्ट अथवा सन्देहपूर्ण माना जाता रहा है

राजस्थानी कहावतो की कहानियां

यह ग्रथ दो भागो मे प्रकाशित है। इनम वे लोक-कथाए दी गई है जिनसे किसी न किसी कहावत का प्रचलन हुआ है। निश्चय ही यह विषय बडा रोचक है। विशेषता यह है कि प्रत्येक कहावती कहानी के अ त में विवेचनात्मक टिप्पणी भी दी गई है जो लेखक के विस्तृत अध्ययन की सूचक हैं।

(छ) सस्कृत मे रचनाए

डा मनोहरजी ने 'कवि का गाव' नाम से एक हिन्दी काव्य की रचना की है। इसम बिसाऊ नगर (कवि का जन्म स्थान) के प्रति कवि के हृदय की रसधारा प्रवाहित हुई है। इसी प्रकार आपन 'पत्र पुष्पम्'[15] नामक सस्कृत रचना प्रस्तुत की है जिसम समय समय पर आपके द्वारा विरचित सस्कृत श्लोकों का सग्रह है।

---

१५ यह कृति हिन्दी विश्व-भारती बीकानेर की त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वम्भरा' मे प्रकाशित हो चुकी है।

आपने संस्कृत से जितना राजस्थानी में अनुवाद कार्य किया है उतना मौलिक अथवा अनुवाद कार्य संस्कृत में नहीं किया। संभवतः इसका मुख्य कारण संस्कृत पाठकों की कमी अनुभव की गई हो।

निष्कर्ष

राजस्थानी साहित्य का शायद ही कोई ऐसा प्रेमी होगा जो डा० मनोहरजी शर्मा के नाम से अपरिचित हो। राजस्थानी लोक-साहित्य के तो डा० शर्मा अधिकारी विद्वान् है। गद्य के साथ - साथ पद्य में भी आपकी गति प्रशंसनीय है।[16]

शर्मा जी का बहुआयामी कृतित्व आपकी सर्वतोमुखी प्रतिभा का परिचायक है।[17] आपका सर्व श्रेष्ठ कार्य 'वरदा' का सम्पादन है—

"'वरदा' के शोधपूर्ण लेखों की यदि कहीं कोई चर्चा चले तो उसके सम्पादक प० मनोहर शर्मा सामने आकर खड़े हो जाते हैं और मनोहरजी की विद्वता, कार्य-कुशलता और सम्पादकत्व की बात चले तो 'वरदा' सामने आ जाती है।[18]

---

१६ परम्परा (भाग ५३-५४)- (स०) डा० नारायणसिंह भाटी, पृ. ६६

१७ डांसळो

वयोवृद्ध डाक्टर मनोहर शर्मा, बिसाऊ
बगतां देख छोरै बूझ्यो, "ओ कुण है, माऊ ?"
बोली — "ओ राजस्थानी रै,
कविता, शोध कहाणी रै,
धणखराक लेखक रो है 'बेटा, ताऊ।
— माहुन 'आलोक'

(इतवारी पत्रिका, जयपुर, दि. २४-१२-७८)

१८ - आचार्य बद्रीप्रसाद साकरिया, बल्लभ विद्यानगर (गुजरात) 'वरदा'- शोध प्रबन्ध विशेपाक मे प्रकाशित हार्दिक अभिनन्दन से।

पद्य-साहित्य : विश्लेषण एवं मूल्यांकन

राजस्थानी काव्य : परम्परा एवं प्रयोग

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में राजस्थान को परम गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। राजस्थानी वीर-वीरांगनाओं ने देश की स्वाधीनता और अपनी मान-मर्यादा हेतु असीम त्याग और बलिदान किया है। इन्होंने मरण को महान त्यौहार के रूप में अंगीकृत किया।[1] राजस्थान वीर भूमि के रूप में विख्यात है[2] पर राजस्थान को वीर-भूमि बनाने का प्रधान श्रेय राजस्थान के साहित्य एवं साहित्यकारों को है। यहां के साहित्यकार तलवार के धनी होते हुए लेखनी के धनी थे। वे स्वयं युद्ध भूमि में जाकर मरने मारने को तत्पर रहते थे। ऐसे वीर रसावतार कवियों की प्रभावशाली वाणी से प्रेरित होकर अगणित वीर-वीरांगनाओं ने अपने प्राण सहर्ष उत्सर्ग कर दिये।

आज भी सामान्यतः राजस्थानी काव्य वीर काव्य का पर्याय बना हुआ है किन्तु राजस्थानी साहित्य को केवल इसी कारण वीर काव्य तक सीमित कर देना सर्वथा अनुचित है। वीर काव्य की भांति ही राजस्थानी का भक्ति एवं प्रेम काव्य भी उतना ही महत्वपूर्ण बना हुआ है। १३वी से १५वी शताब्दी के मध्य का राजस्थानी गुजराती साहित्य तो दोनों ही भाषाओं की समान थाती है किन्तु उसके पश्चात् का विपुल परिमाण में उपलब्ध राजस्थानी का काव्य धर्माधिकारियों, राज्याश्रय प्राप्त कवियों और सामान्य जनों द्वारा समान उत्साह के साथ लिखा जाकर सहज ही यह प्रति-

---

१ औ त्यौंहारा देवड़ों, तिथ पर हुवे त्यौंहार।
विना वार तिथ आवणो, मोटो मरण त्यौंहार।।

परम वीर- नारायणसिंह भाटी, पृ. ६१

२ वीरों की फसल यहां होती
रहता नित आंगन हरा - भरा।
है कौन इसे कहता उजाड़
मरुधरा रही उर्वरा-धरा।।

— मरुधरा- भरत व्यास

पादित करता है कि राजस्थानी साहित्य का क्षेत्र किसी वर्ग विशेष या रस विशेष तक ही सीमित नहीं था।[3] वीरता, प्रेम और भक्ति के क्षेत्र मे उसकी समान गति रही। उसमे जिस उत्साह से योद्धाओ के रोमाचक वीरत्व का चित्रण हुआ है, उसी उत्साह से अमर प्रेमियो की प्रणय-गाथाओ का अकन भी। वीरता और प्रेम की भाति भक्ति के क्षेत्र मे भी तन्मयतापूर्वक उसम प्रभु भक्ति के गीत गाये गये हैं। आज तक यह अजस्रधारा प्रवाहित हो रही है।

आधुनिक राजस्थानी काव्य के प्रबन्ध और मुक्तक क्षेत्र के अन्तर्गत ये प्रवृतिया दृष्टिगत होती हैं- प्रबन्ध काव्य, प्रकृति काव्य, गीति काव्य, वीर एव प्रशस्ति काव्य हास्य–व्यग्य, प्रगतिशील काव्य, भक्ति काव्य, नीति काव्य, पद्य कथाए, नई कविता आदि।

डा० माहेश्वरीजी ने इस काव्य की चार मुख्य शैलियाँ मानी हैं— (१) जैन शैली, (२) चारण शैली (३) सत शैली और (४) लौकिक शैली।[4] पर डा० मदनगोपाल शर्मा ने इस साहित्य को इस प्रकार वर्गीकृत किया है- (१) अध्यात्म धारा, (२) नीति काव्य धारा (३) शौर्य या वीर काव्य धारा (४) प्रणय और श्रृगार काव्य धारा, (६) हास्य-व्यग्य काव्य धारा और (७) लोक काव्य धारा।[5]

राजस्थानी की परम्परागत काव्य धारा को इतिहास चेतना का सदा ध्यान रहा। वह युग-सदर्भों से न तो कभी कटी और न ही अलग हुई। डा० मदनगोपाल शर्मा के शब्दो मे— 'वीर अर श्रृगार धारा री कविता री हुण ओल ख्याण सू आ बात चौडे है कै राजस्थानी कविता आपरी परम्परा सू' अटूट रूप सू जुडियोडी है। उण मे लहरा उठै, उण रो बहाव पळटै पण मावली रगत अर छवि लारली उमर सू उणियारो लेव। •• राजस्थानी कविता जुग री पळट रै सागै आपरो रग रूप अर चाल-ढाळ पळटती चाली आवै पण उणरी सासा मे प्रतीत री धडकण आज भी गूजती सुणाई देवै। नूवै अर जूनै रो यो सगपण ही राजस्थानी कविता री सम-प्राणता केयी जा सकै है।[6]

राजस्थान अनेक रूपो मे प्राचीन परम्पराओं का प्रेमी आधुनिक काल मे भी बना रहा है; अतएव आधुनिकता से प्रभावित होते भी अनेक प्राचीन साहित्यिक परम्पराए राजस्थान म प्रचलित रही है। राजस्थान म पश्चिमी शैली स प्रभावित

३ आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा स्रोत और प्रवृत्तिया- डा. किरण नाहटा पृ-१३५

४ राजस्थानी भाषा और साहित्य— डा हीरालाल माहेश्वरी

५ जागती जोत (समीक्षा अक) भाग ३ अक ३, पृ ३३

६ वही, पृ ३६

'मीरा' कविता मे मीराबाई का यशोगान किया गया है। मीरा की काव्य-धारा की विशेषता का इस प्रकार गुम्फन हुआ है—

> 'मुख रै मधुरा बोल सू, चाली इमरत धार।
> धरती पर सगीत रो, प्रगट्यो साचो सार।।'[21]

'लालादे' मे 'वेलि क्रिसण रूकमणी री' के प्रणेता महाकवि पृथ्वीराज राठौड की पत्नी लालादे की मृत्यु से कवि पृथ्वीराज को असह्य वदना हुई। उसी प्रसग मे पृथ्वीराज के उद्गार द्रष्टव्य हैं —

> 'बो सोनै रो दिन गयो, बा चादी री रात।
> फुलडा बिखरी धण गई, हसती करली बात।'[22]

'राजगुरु' कविता म मेवाड के राजगुरु के बलिदान का कारुणिक प्रसग मार्मिक ढग से प्रस्तुत किया गया है। एक बार महाराणा प्रताप एव शक्तिसिंह शिकार खेलने गये। एक जगली सूअर मारा गया। किसने मारा (किसके बाण से सूअर मरा), इसी बात पर विवाद इतना बढा कि तलवारें तन गई अत मेवाड के राजगुरु ने बीच मे पड कर शाति-रक्षार्थ आत्म-बलिदान कर दिया —

> 'गुरू रै त्याग अनूप सू माच्यो हाहाकार।
> भ्रातृ द्रोह रो बीच सू, टूट पड्यो ससार।।'[23]

'मेवाड-मदानिकी' कविता मे मेवाड के गौरव-स्तम्भ बाप्पा रावल, राव खुमान, पद्मिनी, वीर बादल हम्मीर, चुण्डाजी, कु भाजी, मीराबाई, सग्रामसिंह (महाराणा सागा) पन्नाधाय, वीर जयमल और पत्ता, देवदूत के समान महाराणा प्रताप दानी-मानी एव मातृभूमि की रक्षा करने के लिए अपना बृहद् खजाना प्रताप के चरणो मे समर्पित करने वाले भामाशाह, वीर चुण्डावत एव शक्तावत, कृष्ण कुमारी आदि की अक्षय कीर्ति कवि की प्रभावोत्पादक लेखनी से अमर हुई है। अन्त मे मेवाड की पावनता के प्रति कविवर नत मस्तक हुई हैं—

> 'ठोर-ठोर मन्दाकिनी, तीरथ राज प्रयाग।
> धन धरती मेवाड री, हिन्दवाणै रो भाग।।'[24]

---

२१ वही— मीरा।६, पृ. ४२

२२ अरावली की आत्म - ब्रजलालजी बिहाणी, लालादे।७ पृ. २६

२३ अरावली की आत्मा- ब्रजलालजी बिहाणी (राजगुरु। ३३-३५) पृ. ८०-८१

२४ अरावली की आत्मा- ४१

भाव सौष्ठव एव भाषा सौन्दर्य की दृष्टि से प्रस्तुत कृति मे विरचित अधिकाश कविताए वीर रसात्मक हैं तो 'ल लादे' 'पीव' आदि शिष्ट शृ गार की उत्तम रचनाए हैं। मार्मिक स्थलों का चयन रचनाकार की कुशल लेखनी का प्रमाण हैं।

वीर रस का वर्णन करते हुए जो उपमान प्रयुक्त हुए वे सभी सार्थक हैं—

'सारगपुर रै खेत मे, भिडी फौज सू फौज।
ज्यू दो समदर आ मिल्या, धार पून रो ओज।।
कै दो परवत क्रोध मे, चाल्या पाव उठाय।
जाय भिड्या रण खेत मे, पिरथी दई हिलाय।।'[25]

सयोग और वियोग का नमूना द्रष्टव्य है-

सयोग - 'पीव मिन्या आसू भड्या, कोयल गाया गीत।।
ई गीता रै तान री, कुण जाणै रसरीत।।'[26]

वियोग - 'रूप नहीं, रगत नहीं, गध न मुखडे आब।
जिणनै मु रो मूलियो, सो मे फूल गुलाब।।'[27]

भाषा की दुरहता स बचकर 'अरावली की आत्मा' मुखरित हुई है। उसमे डिंगल की वह क्लिष्टता दुरुहता नही जिसे समय की दूरी ने हमारे लिए अगम्य सा बना दिया है और उसके अत्यन्त सूक्ष्म एव चमत्कृत काव्य सौदय से हमे वचित सा कर दिया है।[28] भाषा की सरलता, सरसता एव लालित्य की त्रिवणी सर्वत्र दृष्टिगत होती है।

दोहा छन्द का प्रयोग करके भी अथ गौरव का निर्वाह प्रशसनीय है। 'गागर मे सागर' की उक्ति प्रस्तुत सग्रह के लिए चरिताथ होती है। यथा—

'सोट घुमा ऊचो करचो, बोल्यो जोर अवाज।
मो सूप्यो गुवाळ नै, ई रैवड रो राज।।'[29]
'मोमल, थानै कुण दियो, यो इमरत रो रूप।
पीतां पीता ना धवधा दोनू नैण अनूप।।'[30]

प्रस्तुत काव्य सग्रह म अनुप्रास, यमक, श्लेष, रूपक, उत्प्रेक्षा, उपमा आदि

---

२५ वही। ३०-३१, पृ ७२
२६ वही (पीव। ७), पृ ६५
२७ वही। ११
२८ अरावली की आत्मा, भूमिका पृ ५
२९ वही, १०१ पृ. ६२
३० वही। १०, पृ. ५५

अलकारो के उदाहरण सर्वत्र व्यापक हैं। 'मृत्युलोक' कविता मे जीवन और मृत्यु के उपमान कवि की सूझबूझ के परिचायक हैं–

> 'जिदगाणी मे मौह ज्यू, धूवी आगी माय।
> त्यू जीवण-रस मौत मे, काठ मायली लाय ॥'[31]

जैसे आग मे धुआ है, उसी तरह जिन्दगी मे मौत है। जैसे काठ मे आग है, उसी भाति मौत मे जीवन रस है।

उत्प्रेक्षा अलकार का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

> 'सतियां सत सू ऊजळी, चाली आज चिताह।
> सूरज री किरणा चली, ज्यू अस्ताचल छाह ॥'[32]

सतिया सत्य से उज्ज्वल होकर आज चिता की ओर चली, मानो सूर्य की किरणें अस्ताचल की छाया की ओर चली हों।

कही - कहीं लोकोक्तियों एव मुहावरो का प्रयोग होने से भाषा सशक्त रूप से प्रभावी हुई है –

> 'च्यार दिनां रो च्यानणी, फेर अधेरी रात।
> रात ढळी छाया फिरी, अब लाली परभात ॥'[33]

समाहार के रूप मे प्रस्तुत कृति मे एक विशेष स्वर मुख्य रूप से मुखरित हुआ है– मातृभूमि पर बलिदान होने की महिमा।

गीत कथा

राजस्थान के लोक-जीवन की अध्यात्मिक निष्ठा, धार्मिक भावना, उसके सामाजिक - नैतिक धरातल को प्रभावित और अनुप्राणित करने मे सिद्ध पुरुषो, सन्तो, चारणो आदि का बहुत बडा हाथ रहा है।[34] इनके चरित्र राजस्थान मे बडे चाव से गाये जाते हैं। लोकगीतो मे इनके ऐतिहासिक चरित्र अति मार्मिक रूप से चित्रित किये गये हैं। वास्तव मे ये ऐतिहासिक चरित्र अपने त्याग, वीरता और परोपकारिता के कारण राजस्थान मे देवी देवताओं की तरह पूजे जाते हैं।[35]

समय-सरिता के प्रवाह को अपने शौर्य से नवीन मोड देने वाले वीर ही इतिहास के पन्नो मे अमिट स्थान प्राप्त करते हैं। वे अपने अनुपम सत्यकार्यो द्वारा

३१ अरावली की आत्मा- ६, पृ० ८५
३२ वही। १७ पृ० ३८
३३ वही। ११, पृ० ८३
३४ राजस्थानी भाषा और साहित्य–डा० हीरालाल माहेश्वरी, पृ २७२
३५ शोध पत्रिका, भाग- १ अक-३ (म० २००४)

द्वारा अमरत्व प्राप्त करने के साथ-साथ लोक-मानस पर भी अपनी अमिट छाप अंकित करते हैं। ये समादृत महापुरुष अपने त्यागमय जीवन से दीन-दुखियों के आंसू पोंछने के लिए तथा सत्य और अपनी संस्कृति की रक्षा हेतु अपना रक्त प्रवाहित करने में किंचित भी देर या सकोच नही करते।

'गीत कथा' हमें उस भव्य लोक का दर्शन कराती है, जहां की धरती शूरवीरता की सास लेती है और जिसकी धड़कनों में धर्म-रक्षा, प्रतिज्ञा-पालन, सत्य-परायणता, दानशीलता और स्वामिभक्ति के स्वर स्पष्ट सुनाई देते हैं।[36] महापुरुषों के यश-सुरभित कार्य-कलाप उच्चादर्शों की स्थापना करते हैं तथा भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा-स्रोत होते हैं। धन धरती नाशवान् हैं पर यश दीपक कभी नहीं बुझता। उसमें (यश दीपक में) अखण्ड-साधना का स्नेह परिपूर्ण होता है. इसी ज्योति को जगमग करने वाले ये नवरत्न (नवदीपक) 'गीतकथा' के आलोक-स्तम्भ हैं—

सुजानसिंह शेखावत, पाबूजी राठौड, बलूजी चपावत, जगदेव पवार, सांगो गौड, उडणो पिरथीराज, सगमराय, मानसिंह झाला और चुण्डाजी।

प्रस्तुत कृति के ये प्रकाश-स्तम्भ राजस्थान एवं गुजरात की अत्यन्त लोकप्रिय कथाओं के नायक रहे हैं। डा॰ सहलजी के शब्दों में— प्रत्येक कथा के मार्मिक स्थलों को चुन-चुन कर अतीव सरस कर दिया है और कहीं-कहीं कल्पना द्वारा नवीन उद्भावना भी की है, जिससे काव्य-सौन्दर्य खिल उठा है। सम्पूर्ण पुस्तक में वीर रस की प्रधानता है परन्तु अन्य रसों का भी प्रसंगानुकूल बड़ा हृदयस्पर्शी वर्णन किया गया है।[37]

१– सुजानसिंह शेखावत

जयपुर राज्यान्तर्गत खण्डेला के मंदिर को विध्वंस करने के लिए जब औरंगजेब की सेना पहुंची तो किसी का भी साहस नहीं हुआ कि उस मंदिर की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो परन्तु छापोली गांव के वीर सुजानसिंह जी शेखावत ने जब यह समाचार सुना तो उनका रक्त खौल उठा और वे अपनी नववधू के प्रेम-पाश को तोड़कर मन्दिर की रक्षा करने जा पहुंचे। उन्होंने जीते जी शत्रु को मन्दिर पर अधिकार करने नहीं दिया। सिर कटने पर भी वह वीर लड़ता रहा—

'सीस कट्यो पर काया जूझी, हाथ कट्यां कौतुक छायो।
टूटी मूरत, दिव्य रूप धर, देवराज रो रथ आयो॥

---

३६ गीत कथा - डा. कन्हैयालाल सहल, प्रस्तावना
३७ वही, पृ २

६– उडणो पिरथीराज

वीर पिरथीराज सिसोदिया राजकुमार थे। एक बार उन्होंने शिकार खेलते समय सोलकी-वंशीया तारादे के शौर्य से अभिभूत होकर उससे विवाह करने की चाह की परन्तु कुंवरी के पिता ने शर्त रखी- 'पहले टोडे के लल्लाखां पठाण को हरा दो तो में अपनी पुत्री का विवाह तुम्हारे साथ करूं।'

पृथ्वीराज ने उस पठाण पर शीघ्र आक्रमण करके उसे परास्त किया। तदुपरान्त उनका विवाह तारादे के साथ हुआ। इनको उडणा पृथ्वीराज कहा जाता है –

'तीर वेग सूं उड़कर आयो, पून वेग सूं सारया काज
रजपूती रो रूप दिखायो, बाज्यो उडणो पिरथी राज ।।'[48]

७– संगमराय

संगमराय की स्वामिभक्ति का कथानक प्रस्तुत कविता मे गुम्फित किया गया है। एक बार युद्ध मे मूर्छित पृथ्वीराज चोहान को गिद्धो ने घेर लिया। गिद्ध उनके नेत्रो का नाश करना चाहते थे, अत: पास ही पड़े हुए वीर संगमराय ने अपने शरीर से मास काट-काटकर गिद्धों की ओर फेंकना शुरू किया, जिससे पृथ्वीराज के नेत्रो की रक्षा हो सकी। संगमराय का यह अनुपम आत्म-त्याग सराहनीय है—

'सिविराजा रो सत सो दीप्यो, अग अंग मुस्काया।
बन दिवेह जस-काया राखी, नृप का नैण बचाया ।।'[49]

८– मानसिंह झाला

सादडी के अधिपति मन्ना जी झाला (मानसिंहजी झाला) ने हल्दीघाटी के युद्ध मे प्रताप की रक्षा की थी। उन्होंने राजचिन्ह अपने सिर पर धारण कर लिया, जिससे शत्रुओं ने उन्हे प्रताप समझा और इस प्रकार महाराणा प्रताप की रक्षा हुई। मन्नाजो के इस त्याग एव बलिदान की गाथा ही प्रस्तुत कविता मे प्रस्फुटित हुई है। यथा–

'जगत रो सार मझधार दीप्यो भलो,
भगत भगवान् को भेस धारयो।
सुफळ पूजा खरी सिद्ध झालो करी,
धरम रो धरण-सरणो काज सारयो ।।'[50]

---

४८ वही, पृ० ४८
४९ वही, पृ० ५३
५० गीत कथा, पृ० ५९

९– चुण्डाजी

चुण्डाजी महाराणा लाखाजी के पुत्र थे। वे पाटवी राजकुमार थे। एक बार दरबार मे मंडोवर की राजकुमारी का 'टीका' उनके लिए आया। पर भूल से वृद्ध महाराणा ने उसे (उस टीके को) अपने लिए समझा। अतः चुण्डाजी ने उस राजकन्या को मातृवत् माना और बहुत समझाने पर भी उस सम्बन्ध को स्वीकार नही किया। उन्होंने शर्त के अनुसार चितौड से अपना भावी स्वत्व भाई के लिए त्याग दिया। कालान्तर मे चितौड से निर्वासित भी हुए परन्तु अन्त मे चितौड राज्य की रक्षा भी उन्होंने ही की। वे प्रतिज्ञा पर अटल रहने वाले थे—

"चुण्डाजी भीसम तणो, अन्तर एक असँख।
वे सतजुग में जलमिया, ये कलजुग री रँख।।[51]

अन्त मे इतना कहना ही पर्याप्त होगा— 'जिस कवि मे वर्णन करने तथा रसमग्न करने की क्षमता हो, वही गीत - कथाएं लिखने मे सफलता प्राप्त कर सकता है। 'गीत कथा' लिखने मे कवि को जो सफलता मिली है, उसका कारण है उनकी सरस और सरल शैली, अलंकारो का अनायास प्रयोग, स्थान-स्थान पर मुहावरों और सूक्तियो का संयोजन तथा बीच बीच मे प्रसग गर्भत्व का समावेश, जिसके कारण राजस्थानी साहित्य और वातावरण मे सास लेने वाले पाठक के मन मे रस की लहरिया सी उठने लगती हैं। कवि की भाषा मे प्राचीन डिंगल की सी क्लिष्टता नहीं, उनकी कृति मे स्थानीय लोक भाषा का सुन्दर रूप निखर उठा है।"[52]

गांधी–गाथा

गाधी-जीवन और गाधी–विचार धारा को जनवाणी मे, कीर्तन-संकीर्तन के रूप मे प्रस्तुत करने के उद्देश्य से प्रस्तुत कृति की रचना हुई है। प्रस्तुत रचना के रेडियो रिकार्ड भी तैयार करवाये गये हैं व गाधी - जन्म - शताब्दी वर्ष मे (१९६९ मे) यह प्रसारित भी हुए है।[53] प्रस्तुत कृति का नामकरण आवरण पृष्ठ पर 'गाधी गाथा' मुद्रित है पर अन्दर के प्रथम पृष्ठ पर इसका नाम मुद्रित है- "गाधी - कीर्तन" (राजस्थानी लोक गीत तथा नरसीजी के माहेरे की धुन पर आधारित)। प्रारम्भ मे सूत्रधार की घोषणा प्रस्तुत कृति की कथावस्तु को स्पष्ट करती है - "भाई लोगो, आज म्हे आपणे देस का राष्ट्रपिता महात्मा गाधी, ज्या ने म्हें 'बापू' भी केवा हा था रे जीवण री कथा, राजस्थानी मे, नरसी जी रै माहेरे री धन पर सुणाऊं हूं....।[54] तदुपरान्त मगलाचरण इस प्रकार है —

५१ वही पृ. ६०। प्रारम्भिक छन्द
५२ गीत कथा, प्रस्तावना
५३ गाधी गाथा, प्रस्तावना के आधार पर
५४ वही पृ. २

दोहा—

'वरदे माता सारदा, हित चित सूं सरसाय ।
बापू री गाथा बिमळ, वरणूं सरल सुभाय ।।

अन्त म 'राम' उपशीर्षक के साथ 'गाधी गाथा' का समापन किया गया है।

सरल, सरस एव प्रवाहपूर्ण राजस्थानी मे रचित प्रस्तुत कृति राष्ट्रपिता के जीवन की साकार एव सक्षिप्त झाकी प्रस्तुत करती है। गयता इसकी प्रमुख विशेषता है। युग - बोध की गूज इसमे झकृत हुई है—

'पुन्य भई विरथी सदा, करुणा रे वरताप ।
जिण हिरदै करुणा बसै, उण हिरदै हरि आप ।।'

दिव्य सदेश

"तावड़ै मे खट्टै खड्यो, नहीं यो मजूर ।
नारायण आस ऊभो प्रेम – भरपूर ।।
सारा ही समान लोग, ना कोई अछूत ।
भेद मिटावे सोई हर रो प्यारो पूत ।।
खेतीखड़ री भूपडी या देवता रो धाम ।
पाया परसाद नर होवे पूरण काम ।।
हारयोड़ा पड्योड़ा अर दब्योड़ा दुख्यार ।
ज्यारू कानी खोल्या बैठ्या मुक्त दुवार ।।
बोलो जन रिछपाळ ।
बोलो दीनदयाल ।।[55]

धोरां रो संगीत

'धोरा रो संगीत' मे राजस्थान रै कुछैक लोकप्रिय कथानका नै 'सगीत रूप' दियो गयो है। कई कथानक सिंध, गुजरात, अर माळवै सू सबधित भी है पण वर्तमान राजस्थान समेत या सम्पूर्ण भू-भाग सदा सू सास्कृतिक इकाई समझ्यो जावे है अर यो ही कारण है कै राजस्थान री 'ख्याता' बाता अर 'गीता' म इणा नै पूरी आत्मीयता के साथ सम्मान मिल्या है। [56] इस काव्य ग्रथ की भूमिका श्रीमान् लक्ष्मीनिवास जी बिड़ला ने लिखी है।

---

५५ गाधी गाथा, पृ २२
५६ धोरा री धरती श्रीयुत् श्रीलाल मिश्र, प्रस्तावना।

'धोरा रो सगीत' मे सेणी बीजानन्द, सोहनी-महीवाल, ऊजळी, राणकदे आदि शीर्षकों के अन्तर्गत ग्यारह प्रेमाख्यानो को काव्य रूप मे प्रस्तुत किया गया है। इनमे अधिकाश कथानक लोक-कथाओ पर आधारित हैं, जो प्राचीन काल से यहा के लोक जीवन से जुडे हुए हैं। कुछ ऐतिहासिक आख्यान जैसे— राणरद, रठीराणी आदि भी हैं।[57]

राजस्थानी साहित्य की यह महती विशेषता रही है कि इसमे शृगार एव वीर रस का अद्भुत व अनुपम सयोग मिलता है। वीर रस के इस भडार म अनेक प्रेमाख्यान भी हैं, जो लोगो को भाव-विभोर कर देते हैं।

प्रस्तुत कृति के सभी प्रेमाख्यान मार्मिकता एव प्रेम की व्यजना से युक्त है। इस प्रकाशन मे काव्य, सगीत और चित्रकला की त्रिवेणी प्रकट हुई है। इन रचनाओ की भाव प्रवणता, प्रवाहमय सगीत रूप मे मुखरित है।

'धोरा रो सगीत' मे चित्रित शृगार शुद्ध प्रेम-तत्व पर आधारित है। इसमे सयोग के लिए तडफ है पर कायिक वासना का रूप कही भी प्रकट नही हुआ है।

शृंगार रस की स्रोतस्विनी को प्रवाहित करते हुए रचनाकार ने इसमे अपनी काव्य-प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया है। यथा—

"मन मुळकं हिरदो सरसावै, चिमकै चचळ नैण।
थिरकै चाव भाव भळ दोवै, गावै इमरत वैण ॥"[58]

१– सेणी बीजानन्द

छप्पन छन्दी मे बीजानन्द चारण एव वेदोजी की पुत्री सयणी (सैणी) के प्रेमाख्यान को प्रस्तुत कविता (सेणी बीजानन्द) मे गुम्फित किया गया है। भ्रमण करते हुए एक दिन, गान विद्या मे प्रवीण बीजानन्द चारण को प्यास लगी। वह कुए पर पानी पीने गया पर सयणी के रूप को देखकर मोहित हो गया। सयणी भी उसके सगीत पर मुग्ध हो गई। तदुपरान्त बीजानन्द ने वेदोजी के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा पर उन्होने एक कठोर शर्त रखी— "एक साल मे नौ नवचन्दी भैंसें लाकर अपना पुरुषार्थ दिखलाओ।"[59] बीजानन्द भैंसे लाने चला गया। एक वर्ष

५७ परम्परा, भाग- ५३-५४, पृ. ६६

५८ धोरां रो सगीत- चारुमति, पृ. १०।१४

५६ धोरा रो सगीत, पृ. ८।२८ नवचन्दी भैंस की पहचान—

"धोळा खुर अर धोळो टीको, धोळी पूछ निचाण।
धोळा थण अर धोळो मूडो, परपी भैंस पिछाण।।
या नवचन्दी सोभा
बिणना री माया पूरी उतरया
परदेसी पावे ॥ ३५, पृ. ६

बीत गया पर वह नही आया, अत सयणी हिमालय मे गलने के लिए चली गई।[60] जब बीजानन्द को यह बात ज्ञात हुई तो वह उसे वापस लाने के लिए गया पर सफल न हो सका। सयणी हिमालय की गोद म सो चुकी थी। अत म बीजानन्द ने भी अपनी वीणा के तार तोड दिये और ससार म भटक गया।[61]

२- सोहनी-महिवाल

सोहनी और महिवाल गाय भैंस चराया करते थे। सोहनी सिंधु नदी के इस पार और महिवाल परले पार अपना कार्य करते थे। एक बार महिवाल सिन्धु इस पार आया। उसने सोहनी को देखा। वह उसके रूप पर मुग्ध हो गया। दोनों के हृदय मे एक दूसरे के प्रति प्रेम जागृत हो गया। फलस्वरूप महिवाल उसके पास जाने लगा। कालान्तर म महिवाल सोहनी के पिता के यहा नोकर के रूप में रह गया। कुछ समय बाद सोहनी के पिता ने बिरादरी के लोगो की इच्छा के अनुसार उसे निकाल दिया। अत महिवाल सि धु के परले पार चला गया परन्तु वह सोहनी क वियोग को सहन नही कर सका। अत एक रात वह मिट्टी का घडा लेकर नदी मे उतर गया। नदी पूरे उफान मे थी। थोडी दूरी पर घडा मझधार मे ही फूट गया। और महिवाल डूबने लगा। एसी स्थिति मे उसने देखा कि सोहनी भी पानी म तैरते हुए उसके पास आ पहुची है और जलधारा म उसके साथ मिल गई है—

'अग थक्या जल जुद्ध जोर मे, भयो सिथिल सो गात।
पण हारयो ना धय बटाव, मोचक पाटो रात॥
प्रगटयो पुन्न पुराणों
मुळकै बतळावै समभुख सोहनी
नैणां री भासा॥[62]

"पलक मारतां बादळ फाटया, पग्णी पून प्रकोप।
मिट चाल्या सखा ससारी, भयो सिंध नद लोप॥
चित मै चैन समायो
अम्मरफळ पायो सुरता सोहनी
महिवाळ तपस्वी।[63]

यह कविता का अन्तिम छन्द है, जिसको आध्यात्मिक रूप मे भी समझा जा सकता है।

---

६० वही, पृ ११।४१-४५
६१ वही पृ. १४।५६
६२ धोरा रो सगीत पृ. २२।२६
६३ वही पृ २२/३०

३ ऊजळी

अमरोजी चारण की पुत्री जगल मे पशुआ को चराया करती थी। एक दिन भयकर वर्षा हुई। वहा का राजा मेहजिठया अपने साथियों से बिछुड़ कर अमरोजी की भोपड़ी के द्वार पर पहुचा। अमरोजी व ऊजळी ने उसका अतिथि-सत्कार किया। राजा उसके रूप सौन्दर्य पर मोहित हो गया। अमरोजी ने ऊजळी का विवाह उसके साथ करने का प्रस्ताव रखा, जिसे राजा ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। राजा अपनी राजधानी को लौट गया परन्तु लम्बे समय तक उसने ऊजळी की कोई खबर नहीं ली। अत: अमरोजी उसे लेकर राज-दरबार म गये। वहा राजा ने चारण कन्या से विवाह करने से इन्कार कर दिया। ऊजळी दु खी होकर समुद्र में कूद पडी। राजा को जब यह बात ज्ञात हुई तो वह भी पश्चाताप की अग्नि म दग्ध होता हुआ राजमहल छोड़कर समुद्र म कूद पडा।[६४]

'राज तज्यो, जग भार तज्यो, वो आयो लीलें लोक।
एक रूप मे रग कर पाछो, मेह भयो गत-सोक।।
नैणा उच्छब छाया
परगट मुसकाती निरखी ऊजळी
रस - मेळ निराळो।।[६५]

उपर्युक्त सोहनी महिवाल के समान ऊजळी सबधि कविता को अन्त मे आध्यात्मिक वातावरण मे समाप्त किया गया है, जो इस छन्द म सहज ही देखा जा सकता है।

४ राणकदे

राणकदे ने पाटन (गुजरात) के अधिपति सिद्धराज के प्रणय-प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। उसका विवाह रा'खेंगार (सोरठ के स्वामी) के साथ हुआ था। कालान्तर मे सिद्धराज ने रा'खेंगार को मार डाला और राणकदे बन्धन म आ गई।

सिद्धराज ने पुन उससे प्रणय-याचना की, जिसे उसने तिरस्कारपूर्वक अस्वीकार कर दिया। इस पर सिद्धराज ने उसके सामने ही उसके दोनो पुत्रो को मार डाला पर वह विचलित न हुई। कालान्तर मे उसने अग्नि - प्रवेश करके अपनी इहलीला समाप्त कर दी।

५ मुंज मृणाल

तैलगाना के राजा तैलप ने मालवा के अधिपति मुज पर आक्रमण किया पर

---

६४ धारा रो सगीत, पृ. ३४।४८
६५ वही पृ.।

वह पराजित हो गया। मुंज ने उसे छोड़ दिया।

कालान्तर मे मुंज ने उस पर आक्रमण किया पर मुंज पकड़ा गया। उसे अपमानित करने तैलप की बहिन मृणालवती कारागार मे गई पर वह उससे प्रभावित हो गई। अन्त मे मुंज को हाथी के पैर से कुचलवाकर समाप्त करने का राजसभा मे निर्णय लिया गया। जब हाथी ने उसे कुचलने के लिए अपना पैर उठाया तो मृणालवती दौड़कर उससे लिपट गई और हाथी के पैर के नीचे दोनों एक साथ कुचले गये।

६ मोमल

मोमल माडदेव (वर्तमान जैसलमेर) की प्राचीन राजधानी लोद्रवा नगर मे अपने स्वतन्त्र महल मे निवास करती थी। उसकी सत्ता भी स्वतन्त्र और वैभवपूर्ण थी। वह अत्यन्त रूपवती थी। अमरकोट का राणा महेन्द्र उसके प्रेम-पाश मे आबद्ध हो गया। महेन्द्र प्रति रात्रि वहा आता था और सूर्योदय से पहले ही लौट जाता था।

एक बार उसकी सखी ने (अथवा बहिन ने) पुरुष वेश धारण कर रखा था। दोनो सो रही थी। महेन्द्र वहा आया और मोमल को दुश्चरित्रा समझकर उल्टे पावो लौट गया। मोमल ने वस्तु-स्थिति समझ ली और वह महेन्द्र की राजधानी मे पहुची। वह महेन्द्र क पास गई परन्तु उसने बात करने से भी इन्कार कर दिया। फलत असह्य वेदना के कारण उसने प्राण त्याग दिये। महेन्द्र ने भी जब सही स्थिति जानी तो वह भी जीवित नही रह सका—

"मोमळ आयो आप समेटचो, माच्यो हाहाकार।
कण-कण सू करुणा भर चाली, हाल उठ्यो ससार॥
अम्बर काळस छाई
हिरदै मे लागी ओचक हूक सी
सका मिट चाली॥[66]

मोमल ऐतिहासिक पात्र है परन्तु उसकी ऐतिहासिकता का कोई ठोस प्रमाण नहीं बचा है, उसके महल के खडहर अवश्य बिखरे पड़े हैं। उसकी जीवन कथा भी गुजरात, सिंध और राजस्थान में अनेक रूपो म कही सुनी जाती है और वह बड़ी रगीन है।

७ रूठी राणी

जैसलमेर की रूपवती राजकुमारी उमादे का विवाह राव मालदेव (मारवाड) के साथ हुआ था पर प्रथम रात्रि मे ही जब वह पति के महल म गई तो उनको

६६ धोरा रो सगीत, पृ. ६६।४१

रावजी को) दासी के प्रेमपाश में आबद्ध देखा, अत वह क्रोधित होकर लौट गई। उसने रावजी से 'अबोलणा' (नही बोलना) व्रत धारण कर लिया और वह 'रूठी राणी' के नाम से विख्यात हुई। रावजी उसे राजी नही कर सके। आखिर ईसरदासजी बारहठ ने उसे हठ छोडने पर राजी कर लिया।

जब उमादे रावजी के पास जाने लगी तो बारहठ आशानन्द ने रावजी की अन्य रानियों के प्रलोभन से प्रेरित होकर कहा—

"सतवंती नैणा सूं निरखो, पुरख धरम री रीत।
दिवस गया अर मास गया, अब बरस घणेरा बीत॥
क्यूं माया मे आई
निरमळ काया रै निरमळ जीव रै
क्यूं काट लगावै।[67]

अत: उसने फिर 'अबोलणा' धारण कर लिया। इस प्रसग का वर्णन दर्शनीय है—

"उमादे झट कान उठाया, ऊंडो करयो विचार।
दोनूं कानों सूं टकराई, हिरदै में दो धार॥
आधी सी उठ आई
अम्बर में छाई रेत उठाण ले
ना मारग सूझे।"[68]

"मारग में थिर डेरा कीन्या, काया व्यापी सून।
मानवती क्यूं मान मिटावै, अम्बर गूंजे पून॥
तारा सूं बतळावै
आखर कुण बांच्या लीलै भेद रा
पट गैरयो भारी।"[69]

अन्त मे रावजी का स्वर्गवास हुआ तो उमादे भी उसके साथ सती हो गई—

'नैण मूंद, अन्तर - पट खोल्यो, रोम-रोम में लाय।
मन री मछली दु:ख सागर में, ऊंडी ऊंडी जाय॥
पंछी पांख उपाड़ै

---

६७ धोरा री सगीत, पृ. ८२।४६
६८ वही, पृ० ८२।४७
६९ वही, पृ० ८२।४८

पाळो तज त्याई मरुधर देस में
कुण पीड पिछाणै ।।[70]

इस छन्द मे उमादे (रूठी राणी) के हृदय की वेदना बह चली है, जो पाठक को भी सहज ही करुण रस मे आप्लावित कर देती है।

८ कोडमदे

मोहिल भूपति माणकराय ने अपनी पुत्री कोडमदे की सगाई मडोवर के राजकुमार अरडकमल्ल के साथ की थी, परन्तु एक दिन कोडमदे ने पूगल के राजकुमार शार्दूलसिंह को देखा और वह उस राजकुमार के ओजपूर्ण व्यक्तित्व के प्रति मोहित हो गई तथा उसी के साथ विवाह करने का निश्चय किया।

यथासमय शार्दूल व कोडमदे का विवाह हुआ। जब बारात लौटते समय मार्ग मे जा रही थी राठौडो कि सेना ने उन्ह घेर लिया। फिर निश्चय किया गया कि अरडकमल्ल व शार्दूल का द्वन्द्व युद्ध हो। इस युद्ध से ही हार-जीत का निर्णय हो फिर दानों ही राजकुमार द्वन्द्व - युद्ध मे स्वर्गवासी हो गये।

तदुपरान्त कोडमदे ने नववधू-वेश म अपने हाथ से अपना हाथ काटा और उसे पूगल अपने श्वसुर के पास भेज दिया—

'कोडमदे सतरूप हाथ सूं, काट्यो निज रो हाथ।
लाल सुरगो सदा सोवणो, कागण-डोरां - साथ।।
कुळ रो भाट बुलायो
पूगळ नै भेज्यो 'बदळो म्होड़ सी
लख लाल निसाणी'। [71]

उसने अपना दूसरा हाथ अपने पिता के पास भेजा तथा अपने पिता को कहलवाया—

"हाथ कटायो बोल दूसरो, सूप्यो देव उदार।
बावल बदळो जीतां म्हाडै, कहज्यो कर विस्तार।।
लौ लागी चौफेरी
जय-जय धुन गूंजी पिरथी पून मे
भट सीस निवायो।।[72]

---

७० धोरा रो सगीत, पृ ८४।५६
७१ वही, पृ० ८६।३७
७२ धोरा रो सगीत, ८६।३८

कोडमदे वहीं सती हो गई—

'कोडमदे सत रूप सु'बारयो, पिव मे जोग जुडाय।
सिर गोदी मे लेकर बैठी, चन्नण चिता चिणाय।।
भाटी कुळ कवराणी
नैणा थिर ज्योती जागे पुन्न री
भट ऊभा भारी।'[73]

कहा जाता है कि कोडमदे जहा सती हुई, वह स्थान बीकानेर से चौबीस किलोमीटर पश्चिम की ओर है। यहा एक बडा तालाब है जिसे कोडमदेसर कहते हैं। इस तालाब के पास के गाव का नाम भी कोडमदेसर है।

कोडमदेसर सबधी आख्यान मुंहते नैणसी री ख्यात मे भी लिखित है। इस घटना का उल्लेख जैसलमेर की ख्यात मे भी वर्णित है।[74]

हिन्दी मे भी इस मार्मिक आख्यान का काव्यमय वर्णन श्री शभुदयाल जी सक्सेना ने 'कल्पलता' के नाम से किया है।

श्री मेघराज 'मुकुल' की कविता 'कोडमदे' राजस्थानी भाषा की प्रसिद्ध रचना है।

श्री लक्ष्मी निवास बिड़ला ने इस कथानक के आधार पर 'प्रेम की देवी' नामक उपन्यास हिन्दी मे लिखा है।

९ चारुमती

चारुमती रूपनगर की राजकुमारी थी। उसके रूप-यौवन की प्रशसा सुनकर बादशाह औरगजेब ने उसके साथ विवाह करने का आदेश रूपनगर भेजा। चारुमती ने मेवाड-नरेश महाराणा राजसिंह से विवाह करने हेतु पत्र लिखा। महाराणा बारात लेकर रूपनगर की ओर रवाना हुए। उन्होने चुण्डावत सरदार को सेना-सहित मुगल-सेना का मार्ग रोकने के लिए दूसरी तरफ जाने की आज्ञा दी।

चुण्डावत सरदार का विवाह हुआ ही था। वे अपनी हाडी राणी के मोह के कारण युद्ध मे जाने मे ढील कर रहे थे। राणी ने प्रबोध-वचन कहे। चुण्डावत सरदार जब घोडे पर आरूढ हो रहे थे तो उन्होने 'सहनाणी' (निशानी) मगवायी। राणी ने अपना सिर काटकर उनके पास(अपने पति के पास)'सहनाणी' भिजवा दी। उन्होने

७३ वही, पृ. ६६।३६
७४ जैसलमेर री ख्यात मे कोडमदे का वृतान्त- श्री दीनदयाल ओझा, 'वरदा'

उस सहनाणी को गले मे धारण कर लिया और वीरतापूर्वक मुगल सेना को मार्ग मे रोक लिया।

प्रस्तुत कृति मे हाडी राणी के आत्म-बलिदान की गौरवपूर्ण गाथा है। यथा—

"चाहमती मन जोग जुडायो निरख्यो इमरत-रूप।
थिर नैणा मे नीर समायो, अन्तर-प्राण अनूप ।।
सरधा सीस नवायो
अम्मरफळ पायो सत - ससार रो।
वरदान सुरगों ।।"[75]

श्री मेघराज 'मुकुल' की 'सहनाणी (सैनाणी) नामक राजस्थानी कविता इसी कथावस्तु से सबधित है, जिसको अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई है। श्री शिव-पूजनसहाय की हिन्दी कहानी 'मुण्डमाल' की वस्तु भी यही है। इस कथा मे वीर-वधू राजरानी ने आत्म-बलिदान का जो आदर्श स्वरूप प्रकट किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

१० मरवण

'ढोला मारू री लोक कथा' राजस्थानी साहित्य की चिर परिचित गाथा है। उसी से कथा-सूत्र चयनित करके 'मरवण' कविता की रचना की गई है। यह 'धोरा री सगीत' की सबसे बडी कविता है, जिसमे एक सौ एक गेय पद्य हैं। इस प्रकार यह रचना तो एक स्वतत्र खण्डकाव्य सा प्रतीत होती है। 'मरवण' का शिशु-अवस्था मे नरवलगढ के राजकुमार ढोला (साल्हकुमार) के साथ विवाह कर दिया गया था परन्तु जवान होने पर भी वह अपने ससुराल न जा सकी क्योकि पूगल दूरी और मार्ग की विकटता के कारण ढोला का दूसरा विवाह मालवा की राजकुमारी के साथ कर दिया गया और मरवण का नाम तक ढोला के सामने प्रकट न हो सका। ऐसी स्थिति मे मरवण ने अपना सदेश देकर ढाडियो को (गायको को) गुप्त रूप से अपने पति के पास भेजा। राजकुमार ढोला (साल्हकुमार) ने वर्षा के समय मरवण का सन्देश ढाडियो से सुना। उसे पता नही था कि यह मरवण उसी की पत्नी है, जिससे उसका विवाह बचपन मे हो गया था।

मरवण अपने पीहर पूगल मे वियोग की पीडा भोग रही थी। ढोला पूगल पहुचा। वहा उत्सव छा गया। कुछ समय बाद वह विदा हुआ। रास्ते मे ऊमर सूमरा से वे बचकर निकल गये। वह उन्हे लूटना चाहता था। आगे

७५ धारा री सगीत, पृ. ११०।१६

चलकर रात्रि मे विश्राम करते हुए मरवण को 'पीवणा' सर्प डस गया। फिर एक योगी ने उसे स्वस्थ किया। बाद मे वे सकुशल नरवलगढ पहुचे। वहा पहुचकर ढोला अपनी दोनो पत्नियो (मालवणी और मरवण) के साथ सुख पूर्वक रहने लगा—

"मालवणी सूं राग रग रस, मान्या साल्हकवार
म्हैला री राणी ना ल्याई, मन मे रच विचार ॥
बो परतीती धारी
पाणी मे बिलसै पोयण पान ज्यूं
पण बूद न लागै ।"[७६]

प्रस्तुत सग्रह की यह अनूठी कविता है। कवि ने राजस्थान के एक सुप्रसिद्ध कथानक को ग्रहण करके इसमे लौकिकता के साथ अलौकिकता का समन्वय किया है। इस अलौकिकता का काव्य मे जहा - तहा सकेत मिलता है। परन्तु अन्त मे तो उसे एकदम ही स्पष्ट कर दिया गया है। साल्हकुवार के दो पत्निया है— एक मालवणी अर्थात अविद्या और दूसरी मरवण अर्थात् विद्या परन्तु कथा-नायक अविद्या को साथ रखते हुए भी उसमे आसक्त नही है। वह तो विद्या मे ही लीन है। इस प्रकार यह एक प्रकार का 'प्रेमाख्यान - काव्य' है, जिसको फारसी के मसनवी रूप से हटाकर शुद्ध भारतीय रूप मे मे प्रस्तुत किया गया। हिन्दी के प्रेमाश्रयी काव्य 'पदमावत' आदि के साथ 'मरवण' काव्य की वस्तु की तुलना करना एक रोचक विषय होगा।

११ मीरां

भारत की प्रमुख भक्त कवयित्रियो मे मीरा का बहुत ऊचा स्थान है। इसी प्रकार इसके पद भी बहुत बडे भू-भाग मे बडे आदर व प्रेम के साथ गाये जाते है। प्रस्तुत सग्रह की मीरां कविता कोई साधारण प्रेम कथा नहीं है परन्तु यह तो भक्ति रस की एक अनुपम धारा है। इसमे दिव्य प्रेम का प्रकाश है। कविता की वस्तु का साराश इस प्रकार है— रात का समय था। सभी लोग सुख-निद्रा मे निमग्न थे किन्तु मीरा अपने महल मे अकेली जाग रही थी। उसने सुदूर-आकाश की ओर टकटकी लगा रखी थी। अचानक उसे सुदूर से वशी-ध्वनि सुनाई दी। अत: वह वशी-ध्वनि मे ध्यान लगाये ब्रजमण्डल की ओर चल पडी।

ब्रजमण्डल मे उसे सर्वत्र लीलाधर की लीला दिखाई पडी। उसने मथुरा के मदिर मे जाकर श्री कृष्ण के सामने नृत्य प्रारभ कर दिया मानो उसके साथ-साथ सम्पूर्ण चराचर मे नृत्य होने लगा हो—

---

७६ धोरा री सगीत, पृ. १३२।६६

'मीरा नाचै स्याम रग मे, मीरां रँ रग स्याम
सागै सागै त्रिभुवन नाचै, सम-रस नाच ललाम ।।
जग उपमा ना जाणी
अंतरपट खोल्यो ग्यान उजास रो
हर चीर बिरगो ।''[77]

इसी स्थिति म मीरा परम-धाम म जा पहुंची, जो पृथ्वी पर स्थित व्रजमण्डल के समान ही अपने मौलिक रूप म प्रकाशमान है। वह वहां के रास-नृत्य म सम्मिलित हो गई और अन्य गोपियो के समान ही कृष्ण म लीन हो गई—

"मीरां रो मन स्याम मनायो, रास रग कर सीर।
सागर माही बूंद समाई, अन्त नीर रो नीर ।।
निरमळ थोप उजाळी
नटवर सग नाची हुय रग राग म
मीरां मतवाळी ।।"[78]

मीरां के भक्ति रसपूर्ण जीवन के सबध म अनेक प्रकार की रचनाए हुई है। यहा तक कि इस विषय म महाकाव्य[79] तक लिखा गया है। डा० नारायण-सिंह भाटी द्वारा विरचित मीरां[80] नामक आधुनिक शैली का राजस्थानी काव्य भी सुप्रसिद्ध ही है। प्रस्तुत कविता में मात्र पैंतीस गेय छन्द हैं। परन्तु इतना होने पर भी इसकी सरसता और मार्मिकता रस धारा प्रवाहित करने मे सक्षम है।

धोरां रो सगीत निष्कर्ष

धोरां रो सगीत' मे राजस्थान के कुछ अति लोकप्रिय कथानकों को सगीत रूप दिया गया है। प्राय सभी कथानक प्राचीन हैं। पण्डित श्रीलालजी मिश्र के शब्दा म— 'प्राय सगळा ही कथानक घणा पुराणा है। 'मुज मृणाल' 'रामदे रा सिंगार', रूखधो दूहा ता उत्तरकालीन अपभ्रंश म भी मिल हैं। दूजै कथानका सू सबधी अनेक दूहा - सोरठा मध्यकालीन राजस्थानी अथवा गुजराती म भी है, जिणा सू परगट हुवै कै य कथानक घणै समय सू लोक हृदय रा हार बणर रीर है।[81]

काव्य - रचना को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए कहीं कहीं साधारण फेर बदल भी किया गया है।[82]

---

७७ धोरां रो सगीत, पृ १४२।२७
७८ धोरां रो सगीत, पृ १४३।३८
७९ मीरां (महाकाव्य)- परमेश्वर द्विरेफ, (विदावा)
८० मीरां- डा० नारायणसिंह भाटी
८१-८२ धोरां रा सगीत, प्रस्तावना

प्रस्तुत सकलन की प्रमुख विशेषताए हैं — विविध पात्रो का मनोवैज्ञानिक चित्रण। प्राय सभी कथानक दु खान्त होने के कारण अपने प्राप म ही अति मार्मिक हो गये हैं।

कायिक प्रेम का उदाहरण 'सोहनी-महिवाल' है। इसमे प्रेम की तडपन तो है पर परकीया सबध के कारण इसका रूप वासनामय कहा जा सकता है। वियोग दोनों के लिए असह्य है। अन्धा प्रेम तूफानी नद को नही देख पाता और दोनो उसमे डूब जाते हैं। 'मु ज-मृणाल' मे कायिक आकर्षण के होने पर भी प्रेम भूमि भिन्न है। यहा मु ज के बलिदान मे साथ रहकर मृणाल पवित्र प्रेम के आदर्श के गौरव को उदभासित करती है। 'राणकदे', 'रूठीराणी' 'उमादे' एव 'चारुमती' का आधार ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। प्रेम की एकान्तता के साथ इस काव्य म राजस्थानी आन बान के दर्शन होते हैं।

भाषा प्रसाद गुण से युक्त है। इसमें प्रवाह है, गति है। उसका साहित्यिक स्वरूप भी ध्यान देने योग्य है, जिससे राजस्थानी भाषा की अभिव्यजना शक्ति का सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

अमरफळ

डा॰ मनोहरजी ने अमरफळ' नाम से जो सग्रह प्रस्तुत किया है, उसमें ये सात लघु काव्य सगृहीत हैं– (१) रसधारा (२) गजमोती, (३) पछी (४) अबळा (५) जातरी, (६) धरती माता, और (७) अमरफळ।

रसधारा

प्रस्तुत सकलन की दो रचनाए - 'रसधारा' और 'गजमोती' मुख्यत प्रकृति काव्य है। 'रसधारा' मे सर्वप्रथम 'उषा' का मनोरम रूप प्रकट किया गया है—

"नभ लाली छाई सरस, जागी जोत अपार।
ऊसा देवी ऊतरी, स्वागत बारम्बार॥
सोने रो रथ भळकतो, सत आयो ससार।
प्रेम सुरगी देह सू, निसरै इमरत धार॥"

उषा का मनोरम चित्रण ऋग्वेद के 'उषा सूक्तम्[८३] मे भी प्राप्त है, जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है। 'रसधारा' के प्रसाद गुण-युक्त दोहे अध्यात्मिकता की पुट से सुवासित हैं —

८३ ऋग्वेद –१३।६१

'इमरत किरणां में रम्यो, मुख में मधरा बोल।
जोत जगावै ज्ञान री, अन्तर रा पट खोल ।।

प्रेम सुरंगी किरण सूं, खोल हिये रो द्वार।
महक उठै नरनाम कर, सौरम सूं संसार ।।'

'रसधारा' की अन्य कविताएं है— वनदेवी (१५ छंद), किरण (१३ छंद), भाडी (६ छंद), सुरंगी रुत (१४ छन्द) और विश्राम (१२ छंद)

'वनदेवी' कविता मे ग्रीष्म, वर्षा एवं सर्दी के प्रभाव का हृदयहारी वर्णन किया गया है। द्रष्टव्य है-

'सीळी सीळी पून अर, झिरमिर झिरमिर मेह।
गावै बैठी डाळ पर, झूले कंचन - देह ।।'[84]

सीधी - सादी बात और सीधी-सादी भाषा परन्तु चित्रात्मकता से अलकृत। 'झिरमिर झिरमिर' मे ध्वन्यात्मकता का रूप। यह वर्णन पढते ही सामने सबधित दृश्य उपस्थित। कालिदास ने भी 'ऋतुसहार' मे ऋतुओ का मन - मोहक वर्णन किया है। हिन्दी के कवियो ने ऋतु वर्णन किया है परन्तु 'रसधारा' मे वर्णित ऋतु वर्णन राजस्थान की प्रकृति से सबधित है और स्थानीय रंग (Local Colour) से युक्त है। यथा—

'लू बाजै जद जेठ री, लागै लेपर छांप।
मन रा मोती मोद में, पोवै कुंजां आप ।।
'इन्नै बैठ्यो गोयरो इन्नै बैठ्यो सांप।
लाड लडावै हेत सूं, जीव - विजाळै आप ।'[85]

'किरण' मे वर्णित चादनी रात मे चमकने वाले बालू के टीबो (धोरो) का कितना स्वाभाविक वर्णन किया गया है—

'चंदरमा रै हेत मे चिमकै निरमळ रेत।
बालू रा टीबा नहीं, ये चांदी रा खेत ।'[86]

इसमे अपहनुति अलकार के द्वारा 'बालू के टीबो को चादी के खेत प्रतिपादित किया गया है। ये बालू के टीबे नही, ये चांदी के खेत हैं और ये चमकते क्यो हैं ? इसका हेतु है- चद्रमा के प्रति प्रेम। यहा 'काव्यलिंग' अलंकार है।

---

८४ रसधारा - वनदेवी। ६
८५ वही
८६ किरण, १२

कही 'किरण' को 'ग्रम्बर री ग्रप्सरा' बतनाया है[87] तो कही 'काजळ बरणी कोटडी' को सफेद करने का कारण बताया है—

'दीपक ने वरदान दे, खूब दिखायो हेत।
काजळ बरणी कोटडी, कर दी जगमग सेत॥'[88]

'झाडी' के छह छन्द रस की छह धाराए हैं। एक दो धाराए देखिए—

'जेठ-साढ रो तावडो, यो टीबा रो देस।
ऊपर सू ग्रागी पडै, ग्रमी रमै हमेश॥
जद ग्रधियारी रैन मे, बिजळी झबका खाय।
धरती पर या एकली, झूमै मोद मनाय॥
फूल दिया तो ये दिया, काटा रो जजाळ।
बाको टेढो तन दियो, सूखी - फीकी डाळ॥'[89]

रीतिकालीन कवि सेनापति का 'छाहु चाहती छाह'[90] के समान ही 'विश्राम' मे छाया के डरकर भागने का कारण इस प्रकार बताया है—

'टीबा सू झळ नीसरै, ऊपर बरसै ग्राग।
जायर रूडवरी बापडी, छाया डरती भाग॥'[91]

'रसधारा' मे श्री मनोहर शर्मा विरचित प्रकृति सबधी कविताग्रो का सग्रह है। इनमे राजस्थानी प्रकृति का स्वाभाविक तथा चित्रात्मक रूप प्रकट हुग्रा है। कवि ने प्रकृति को भारतीय विचारधारा के ग्रनुकूल प्राणमय माना है। सभी कविताग्रो की भाषा बोलचाल की राजस्थानी है ग्रौर ग्रत्यधिक सरल है।[92]

गजमोती

इस सकलन की 'गजमोती' कविता म कवि का चिन्तन ग्रौर मनन विशेष रूप में ध्यातव्य है।[93]

---

८७ वही, ५
८८ वही, ३
८९ झाडी, ३—६
९० सेनापति-ऋतु वर्णन। ग्रीष्म ऋतु वर्णन
९१ रसधारा - विश्राम-२
९२ वरदा, २।३ पृ १५
९३ ग्रमरफळ- प्रस्तावना- पृ० श्रीलालजी मिश्र

'गजमोती' काव्य मे विविध प्रकार के चित्र प्रकट हैं। शर्माजी ने इसमे उषा, सूर्य, रात्रि, आकाश, पवन, मेघ, वर्षा, निर्झर, नदी, समुद्र, वन, पर्वत आदि से संबधित स्फुट पद्यो के रूप मे अपनी भावधारा को प्रवाहित किया है। समग्र काव्य मे प्रकृति प्राणवान एव जीवनमय रूप मे प्रस्तुत की गई है।

इस काव्य की रचना प्रसाद गुण-युक्त है। भाषा सरल होते हुए भी इसके भाव बड़े गूढ तथा मार्मिक हैं। कवि ने प्रकृति की विविध लीलाओ को दार्शनिक रूप मे वर्णित किया है।

इस समग्र काव्य मे अनेक मे एक की भावना व्यक्त हुई है, जो भारतीय दर्शन का मूल मत्र है।[९४]

'रसधारा' एव 'गजमोती' के विषय यद्यपि एक से हैं, फिर भी दोनों मे विभिन्न भावधाराए प्रवाहित की गई है। परन्तु रसधारा मे प्रकृति का सरल वर्णन है तो गजमोती मे इसके सबध मे रहस्यात्मक चिंतन है।

पंछी

'पछी' एक कथा-काव्य है, जो करुण रस से ओत-प्रोत है। सपूर्ण काव्य दोहा छन्द मे लिखा गया है और अत्यन्त सुबोध होने के साथ ही मार्मिकता से भरपूर है।[९५] राजस्थानी बोलचाल मे 'पछी' शब्द दयनीयता का द्योतक है। मनुष्य की यह कितनी भयकर हृदयहीनता है कि यह एकमात्र अपने चाव को पूरा करने के लिए एक गगन बिहारी और वह भी निरपराध प्राणी को पिंजरे मे डालकर रखता है। ससार की सभी भाषाओ में 'पिंजरे के पक्षी' के सबध में काव्य-रचना हुई है और यह विषय ही अत्यधिक करुणापूर्ण है परन्तु प्रस्तुत काव्य में एक विशेष कथानक के सहारे इसे और भी अधिक हृदयद्रावक बना दिया गया है।[९६] पछी काव्य निम्न-लिखित आठ उपखण्डो में विभक्त है— प्रभात, पछीकुळ, बाग-बिहार, पींजरो, मुक्ति, परिवर्तन, अन्त और काळचक्र। इसमें कुल १६५ दोहे हैं।

'पछी कुळ' के त्याग, प्रेम एव सीधे सादे स्वभाव का सुन्दर वर्णन देखिए—

"बनवासी पछी भला, निरमळ जान सुभाव।
एक डोर हिरदो बध्यो, जाणे नाय दुराव॥

९४ साधना (अंक-३), पृ. २६
९५ अमरफळ- प्रस्तावना- श्री श्रीलालजी मिश्र के उद्गार
९६ वरदा, २।४, पृ. २१

भोळे भावां रो भलो, पंछी-कुळ रम-झोल।
वन में वस वनफळ भखै, वन में करै किलोळ।
मन साचो, वाणी विमल, सीधो जात सुभाव।।
पंछी-कुळ भायप भलो, ना माया रा भाव।।'[97]

बनवासी पंछी 'बागों का व्यवहार' नही जानता —

'बनवासी जाणै नहीं, बागां रो व्योहार।
मुख ऊपर मीठो घणो, हिरदै पाप अपार।।'[98]

'बाग' यहा प्रतीक है— शहरी सभ्य नागरिक का। 'मुख ऊपर मिठियाम, घट-घट में खोटा घडै'[99] का भाव प्रकरित किया गया है।

बागवान् ने एक ढेला मार कर पक्षी को आहत कर दिया। वह अचेत हो गया। प्रात: पक्षी ने अपने आपको पिंजरे में कैद पाया। वह व्याकुल हो उठा—

"जड़ सुवरण रै पींजरे, घणा लडाया लाड।
कूवै सूं तो नीसरयो, आप पड़यो पण खांड।।"[100]

फिर पिंजरे मे पड़ा हुआ विवश पक्षी अपने बच्चों एवं मादा के विषय मे चिंतित होता है। एक दिन पिंजडे का द्वार खुला रह जाता है और शकित भाव से पक्षी उड जाता है परन्तु आगे पतझड का वातावरण 'दिन के फेर' प्रकट होता है—

'बो ही वन, बौ ही विरछ, बा ही हियै हुंसेर।
पण पंछी भूल्यो फिरै, पड़यो दिनां रे फेर।।[1]

बेचारा पंछी खूब भटका परन्तु उसे कही भी अपने परिवार का अता-पता नही ज्ञात हो सका।

'कालचक्र' बलवान होता है। परिवर्तन ही सृष्टि का नियम है। फिर वन हरा-भरा हो गया। परन्तु दुःखी पंछी तो फिर नही उड सका और न ही उसने फिर घर बसाया। वह तो चुपचाप पड़ा रहा और मृत्यु को प्राप्त हो गया—

---

९७ पंछी, १५-१६
९८ पंछी, ३०
९९ राजिये रा दूहा— कृपाराम
संस्कृत उक्ति- मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे, हृदये तु हलाहलम्।।
१०० पछी, ४७
१ वही, १०३

'नर नारी रे नेह रो, नमो बरमो ससार ।
बेल बधी, फूली फळी,, फ`ल-फ`ल विस्तार ।।
पण वो पूठो ना उठ्यो, पड्यो एपलो भून ।
माटी मे माटी मिली, भून समाई भून ।।'[2]

ऐसा प्रतीत होता है कि पिंजरे के पक्षी की वेदना के सबध मे लिखी हुई अनेक कवियो की भावधारा से कवि प्रभावित हुआ है। 'नैषधीय चरित'[3] काव्य में हस पकडा जाता है और करुण विलाप करता है। इस काव्य मे वही करुण ध्वनि सुनाई देती है। इसके अलावा 'उर्दू' कवि इकबाल की सुप्रसिद्ध कविता 'आता है याद मुझको, गुजरा हुआ जमाना' की वेदना भी इस काव्य मे फूट पडी है।

हिन्दी मे भी 'पछी' नामक एक पूरा काव्य रचित है। फिर भी प्रस्तुत काव्य की मौलिकता स्पष्ट है। इसको एक प्रतीक रूप मे भी ग्रहण किया जा सकता है, जो एक साधारण गृहस्थ के कष्टपूर्ण जीवन और करुणा पूर्ण अन्त का चित्रण प्रकट करता है।

अबला

'अबला' काव्य मे नारी-जीवन की समस्या का सहानुभूति से पूर्ण चित्रण हुआ है। भारतीय पुराण एव इतिहास के नौ नारी चरित्रों के मार्मिक उद्‌गार प्रस्तुत कृति मे प्रकट हैं, जो नारी-जीवन की समस्याओ पर ध्यान देने एव सोचने के लिए पाठक को प्रेरित करते हैं। ये नौ महिलाए इस प्रकार हैं— सीता, शकुन्तला, दमयन्ती, द्रौपदी, यशोधरा, ध्रुवदेवी, राज्यश्री, आमेरकुमारी और कृष्णाकुमारी। इन नारी चरित्रो मे से प्राय सभी के बारे में दूसरे कवियो की भी भिन्न-भिन्न रचनाए उपलब्ध हैं एव 'अबला' काव्य की कुछ अपनी विशेषताए हैं। यह काव्य बहुत ही लघु है एव इसमे प्रस्तावना के अतिरिक्त केवल ७२ राजस्थानी दोहे हैं। इसलिए इसमे प्रत्येक नारी चरित्र के जीवन का एक ही प्रसग काव्य का मुख्य आधार बनाया गया है और अत्यन्त थोड़े शब्दो मे बहुत गहरी बात प्रकट की गई है।

जिन नौ नारी-चरित्रो के जीवन-प्रसगो पर कवि ने अपने उद्‌गार प्रकट किये हैं, वे सभी विविध परिस्थितियो मे हैं। इनमे नर-नारी के सबध का विकट रूप उपस्थित है परन्तु ये सभी प्रसग अत्यन्त करुणापूर्ण है, इसलिए सम्पूर्ण काव्य मे करुण रस की धारा सी प्रवाहित हुई है। ऐसी स्थिति मे 'अबला' काव्य को 'करुण बहतरी' नाम देना भी समुचित प्रतीत होता है।[4]

२ पछी, १६४-६५
३ नैषधीय चरितम् (महाकाव्य)- श्रीहर्ष (नल-दमयन्ती की कथा-विषयक सस्कृत महाकाव्य)
४ अबला— वरदा ३।४ पृ, ३४

आगे कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

सीता

भगवान रामचन्द्रजी ने लंका-विजय करने के बाद अयोध्या लौट कर शासन भार सभाला। कालान्तर मे सीताजी के सबध मे भिन्न-भिन्न प्रकार से फैली हुई नगर-चर्चा उन्होने सुनी। फलस्वरूप रामचन्द्रजी ने अपनी गर्भवती पत्नी सीताजी को वन मे छोड आने के लिए लक्ष्मणजी को आज्ञा दी। रामचन्द्रजी की आज्ञा को शिरोधार्य करके लक्ष्मणजी उन्हे रथ मे बिठाकर भ्रमण के बहाने वन मे ले गए और वहा सीताजी को रामचन्द्रजी की आज्ञा सुनाई। इसी प्रसंग पर आठ दोहे सीताजी के मुख से कहलवाये गये हैं। यथा—

'समंदर बांध्यो सेतु वपू, राकस मारघा जोर।
जे करणी ही आज दिन, मेरी गत इण ठोर॥
ऊंडी बात विचार तूं हिरदै लिछमण वीर।
के जगती मे टूटसी, नर-नारी रो सीर॥' (दोहा सं० १-२)

यहा करुणामय क्रन्दन है, वेदना तथा मर्मस्पर्शी भाव-प्रसार है, इन छोटे-छोटे दोहा-छन्दो मे।

शकुन्तला

मेनका अप्सरा व विश्वामित्र की पुत्री शकुन्तला महामुनि कण्व की पालिता कन्या थी। एक समय मुनिवर कण्व तीर्थ करने के लिए गये हुए थे, पीछे से उनके आश्रम मे भटका हुआ पुरुवशी राजा दुष्यन्त आया और उसने शकुन्तला के साथ गन्धर्व-विवाह कर लिया। विवाह के बाद वह अपनी राजधानी चला गया और जाने से पहले अपनी मुद्रिका (अंगुठी) दे गया। कुछ दिनो में ही जब मुनि कण्व तीर्थ-यात्रा करके लौटे तो उन्हें शकुन्तला व दुष्यन्त के विवाह की बात मालुम हुई। इस पर वे प्रसन्न हुए और दुष्यन्त द्वारा कोई सन्देश व अपनी राजधानी मे बुलवाने की व्यवस्था न देखकर उन्होने शकुन्तला को अपने शिष्यो के साथ ससुराल के लिए विदा कर दिया। जब शकुन्तला महाराजा दुष्यन्त के सामने उपस्थित हुई तो राजा ने उसे एकदम झूठी बतलाकर अस्वीकार कर दिया। दुर्वासा के शाप के कारण वह विवाह की बात को भूल गया था। यह बात न दुष्यन्त को ज्ञात थी और न ही स्वय शकुन्तला को। शकुन्तला की सखी को यह भेद ज्ञात था। शाप के वशीभूत राजा शकुन्तला को अस्वीकारता है,[५] इसी प्रसग मे कविवर ने ये दोहे शकुन्तला के मुख से कहलवाये हैं—

'वन री वाता याद कर, आवडतै रा बोल।
आंख मींच मत, जागतो, राजा हिरदो खोल॥

---

५ प्रस्तुत प्रसग महाभारत के 'शकुन्तलोपाख्यानम्' में तथा कविकुल गुरु कालिदास के 'अभिज्ञान शकुन्तलम्' नाटक के पंचम अंक मे गुम्फित है।

रस भोगी भूरा फिरै, करी कळी तू भूल।
पडदो खाल्यो चाव मूं, सार लुटायो मूळ ॥
नर तो पूरो पारधी, रच बातां रो जाळ।
भोळी हिरणी बापडी, फास करी पैमाल ॥"[6]

उपर्युक्त (प्रथम) दोहे मे 'भाव मीच मत, जागतो' म सभी कुछ कह दिया गया है। इसके साथ ही नारी को वाकजाल मे फसाने वाले भ्रमण वृद्धि राजा को सीधी सादी एव भोली शकुन्तला ने गहरी फटकार सुनाई है।

द्रौपदी

कौरवों ने कपट-द्यूत मे युधिष्ठिर का सर्वस्व जीत लिया और अन्त मे द्रौपदी के अतिरिक्त कुछ नही शेप रहा। तब तपे हुए जुवारी के स्वभावानुसार युधिष्ठिर ने बिना-सोचे विचारे ही द्रौपदी को दाव पर लगा दिया। यह बाजी भी युधिष्ठिर हार गया। उसी समय दु शासन द्रौपदी को केश पकडकर राजसभा मे खीच लाया और भरी सभा मे उसके (द्रौपदी के) वस्त्र उतरने लगा। निम्न दोहे इसी प्रसग पर करुणा व ग्लानि मे रत द्रौपदी के मुख से कौरवो की राजसभा मे कहलवाए गये हैं—

"भूल करी, पाचू तज्यो, बी बामण रो भेस।
बेरी खींचे जीवतां, कुळवती रा केस ॥
धरमी डूब्या धरम में, पापी डूब्या पाप
ल्हुकगो कुण से लोक जा, नारायण हरि आप' ॥[7]

ध्रुव देवी

समुद्रगुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य का राज्य-भार रामगुप्त ने सभाला। रामगुप्त सर्वथा अयोग्य था। वह सुरा और सुन्दरी मे ही लीन रहता था तथा अपने सम्मान, कीर्ति व कर्त्तव्य पालन सबसे मानो बहुत दूर था। एक बार शको के द्वारा राज्य को घेर लेने की धमकी से रामगुप्त ने शको द्वारा की गई मागो को स्वीकार कर लिया और अपने प्राणो की रक्षा के लिए शक सरदार को ध्रुवदेवी को देना भी मजूर कर लिया। रामगुप्त के छोटे भाई चन्द्रगुप्त (द्वितीय) को यह असह्य था। जब ध्रुव देवी शक-सरदार के यहा पहुचा दी गई, तब चन्द्रगुप्त नारी का रूप धारण करके शको के डेरे मे गया और उनके सरदार को मार डाला। उसने इस प्रकार ध्रुवदेवी की लाज बचाई। इस नाटकीय कथानक मे ध्रुवदेवी की उस समय की मन स्थिति

---

६ अबला (शकुन्तला)- १ से ३
७ वही (द्रौपदी), पृ २६।७८

बहुत ही विकट थी, जब उसे डाकू-सरदार को सौंपना स्वीकार किया गया था। निम्नलिखित दोहों में इसी परिस्थिति का चित्रण है—

> 'मरद, धणी, राजा फिरयां, करी धरम री धूळ।
> अबला रो सत आज दिन, ज्यूं कुरडी रो फूल ॥
> दुनिया नासी चाव सूं, यो थारो जस सेत।
> बैरी नै मारो दई, प्राण उबारण हेत ॥'[8]

ध्रुवदेवी के ये उद्‌गार हृदय पर सीधी चोट करने वाले हैं।

आमेर-कुमारी

आमेर के राजा भारमल ने अपनी पुत्री का विवाह राजनीतिक संबंध स्थापित करने के लिए मुगल बादशाह अकबर के साथ कर दिया। प्रस्तुत दोहों में बादशाह के हरम में निवास करने वाली इस राजकुमारी की मनोदशा का चित्रण किया गया है—

> 'आरज कुळ में जलम ले, गई हरम में आय।
> गंगा ज्यों खारी हुई, सागर मांय समाय ॥
> भावूं भटका बीड में, भावूं राख संभाळ।
> ईं बाछी रो जेवडो, तेरै हाथ गुवाळ ॥'[9]

कृष्णाकुमारी

उदयपुर के महाराजा भीमसिंह की पुत्री कृष्णाकुमारी की सगाई जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के साथ हुई थी परन्तु दुर्भाग्यवश जोधपुर महाराजा का देहान्त हो जाने के कारण यह संबंध जयपुर के नरेश जगतसिंह के साथ कर दिया गया। इस संबंध को मुख्य आधार बनाकर जोधपुर और जयपुर के शासकों में भयंकर विवाद उपस्थित हो गया। महाराजा भीमसिंह (जोधपुर) के उत्तराधिकारी महाराजा मानसिंह ने कृष्णाकुमारी का संबंध जोधपुर की राजगद्दी से होना प्रकट किया। इधर उदयपुर की स्थिति इन दिनों में बहुत कमजोर थी। फलत. कृष्णाकुमारी को विषपान करवाकर इस संकट से उद्धार प्राप्त किया गया। कुछ समय उपरान्त अपनी पुत्री (कृष्णाकुमारी) के वियोग में उसकी माता ने भी प्राण त्याग दिये। निम्नलिखित दोहों में विषपान करती हुई कृष्णाकुमारी की मनोदशा का चित्रण है—

> 'कोयल नै क्यूं राग दी, अर नारी नै रूप।
> विधना क्यूं सौरभ भरी, फूलां मांय अनूप ॥

---

८ अबला (ध्रुवदेवी)- २, ६

९ वही (आमेर कुमारी), पृ. ३२॥१-२

खेल हुयो चौगान रो, नारी रो सनमान।
एक जीव रै कारणै, लाहू तजसी प्राण ॥'[10]

कृष्णाकुमारी की करुण दशा हृदय को द्रवित करने वाली है। मेवाड के इतिहास की गौरव गाथाएं सुप्रसिद्ध है। परन्तु कृष्णाकुमारी का यह करुण अन्त उसका आत्म त्याग है या उसकी हत्या है, यह विचारणीय है।

जातरी

'जातरी' मे प्राय लघु कथात्मक रचनाए है, जो विविध विषयो से सबधित एव प्रेरणादायक हैं।[11] 'जातरी' दस शीर्षको मे विभक्त है। ये शीर्षक हैं— जातरी, एकतार, बीज, हवा रो फेर, सुगणी सरमा, सनातन, न्याय, गोपा री भेंट, सार कमाई, रवीन्द्रनाथ और तैंस्सितारी री समाधि पर।'

इनमे से 'बीज' शीर्षक एक अग्रेजी कविता से प्रभावित है।[12] सुगणी सरमा एक वैदिक प्रसग पर आधारित है।[13] रवीन्द्रनाथ मे विश्व-कवि की महिमा वर्णित है। अन्तिम 'तैंस्सितोरी री समाधि पर' कविता इतालवी विद्वान एल०पी० तैंस्सितोरी की स्मृति मे रचित है। इतालवी विद्वान् तैस्सितोरी ने राजस्थानी भाषा और साहित्य के उद्धार मे अपना जीवन समर्पण कर दिया था। उनकी समाधि बीकानेर मे है। नमूने के तौर पर इसी कविता का कुछ अ श द्रष्टव्य है—

"कूल-कूल ने गळे लगायो, कण-कण रो अतर सरसाय।
भयो साधना लीन तपस्वी, ध्यानपीठ मे ध्यान लगाय ॥
रस-सोरम री निरमळ धारा' वह चाली तप रो फळ पाय।
भारत री माटी मे माटी, मगन भयो बो अन्त मिलाय ॥
तेरै पथ री पथी आज मैं, खोजा-खोजा आयो चाल।
मान राख, मेरो मा लेकर, भेंट मात सारदा रा लाल ॥'[14]

धरती माता

'धरतीमाता' लम्बी कविता (Longer Poem) है। इस कविता मे सम्पूर्ण मानव समाज से सबधित विश्व - समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया

१० अबला (कृष्णाकुमारी), पृ ३२।७८
११ अमरफळ (प्रस्तावना)- प० श्रीलालजी मिश्र
१२ अमरफळ- जातरी (पाद टिप्पणी), पृ. ३५
१३ वही, पृ ३६
१४ इतालवी विद्वान् एल. पी. तैस्सितोरी री समाधि पर

के अनुसार — 'सग्रह के अन्त मे 'अमरफळ' नामक एव दार्शनिक खण्ड काव्य दिया गया है, जो किसी अ श म कठापनिषद् की कथा पर आधारित है। परन्तु उसके कथानक का उत्तर भाग कवि की स्वतत्र उद्भावना है। काव्य का मूल सदेश 'समरस भाव' (समता दर्शन) है, जिसे बडे ही आकर्षक एव मार्मिक रूप म प्रकाशमान किया गया है।'[22]

राजस्थानी काव्य अमरफळ का नाम ही विशेष ध्यान देने योग्य है। राजस्थानी लोक-वार्ता म 'अमरफळ' एक ऐसा कल्पित फळ है, जिसको खाने से बूढा आदमी भी जवान हो जाता है और वह कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। यह शारीरिक अमरता का सकेत है परन्तु कवि ने अपने 'अमरफळ' काव्य मे सम्पूर्ण आत्मतत्व की एकता और अमरता का बडे ही रोचक ढग से चित्रण किया है। इसम 'उपनिषद्' के प्रारम्भिक कथा - प्रसग के अलावा सपूर्ण वस्तु कवि की मौलिक उद्भावना है।

सम्पूर्ण वस्तु चार खण्डों मे विभाजित है और प्रत्येक खण्ड मे विविध उपशीर्षक हैं। बालक नचिकेता अपने पिता से विदा होकर यमलोक के लिए प्रस्थान कर देता है। उसे मार्ग मे सिह, भुजग, नदी आदि बाधाओ को पार करना पडता है, परन्तु वह आत्मबल से विजयी होकर आगे बढता है फिर आगे मरुदेश आता है। इसको भी बालक पथिक पार कर लेता है तो अन्त मे वह घोर गुफा मे प्रवश करता है। गुफा-मार्ग समाप्त होने पर वह यमलोक मे जा पहुचता है।

कहना न होगा कि यमलोक की यात्रा मे नचिकेता को सिह आदि का सामना करना पडता है और फिर उसे मरुदश के कष्ट उठाने पडते हैं। ये सभी मानवीय मनोविकारो के प्रतीक हैं, जिनम प्रत्येक सामान्य प्राणी उलझा रहता है। बालक नचिकेता इनको पार कर लेता है। ऐसी स्थिति मे उसकी भौतिक यात्रा वास्तव मे आध्यात्मिक यात्रा है।

यमलोक और यम - भवन का कवि ने जो वणन किया है, वह भी अत्यन्त रहस्यात्मक है। जिस प्रकार मृत्यु रहस्यमयी है उसी प्रकार यमलोक और यम-भवन भी रहस्यमय है। यमराज बालक नचिकेता को अनेक प्रकार से प्रलोभन देते हैं, परन्तु वह उन सब को छोडकर वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने का इच्छुक है। इस पर उसे यमराज स समरस-भाव का उदबोधन मिलता है, जिसे वह अपने जीवन-व्यवहार मे सम्मिश्रित कर लेता है। जब वह लौटकर आकाश माग स अपने पिता के आश्रम मे आता है तो ससार के कण कण मे 'समरस-भाव' धारण करके वह स्वय को एकाकार कर देता है। वास्तव म इस काव्य का मूल उद्देश्य 'समता-दर्शन' का चित्रात्मक

२२ अमरफळ- प्रस्तावना

वर्णन करना है, जिसमे कवि ने अपूर्व सफलता प्राप्त की है और कठोपनिषद् के कथानक को एक नये ढग से आगे बढाया है।

प्रस्तुत काव्य के कुछ स्थल अवलोकनीय है— भुजग विषयक प्रसग द्रष्टव्य है—

'ओचक आ विखधर डस लीन्यो, रग रग मे ज्वाला जागी।
चेतनता चित सू मिट चाली, तन काप्यो अर तिस लागी॥
काया डिग डोलै, पग धूजै, चाल्या जा पण व्रतधारी।
अन्तर रो आर्मी-रस उमड्यो, दूर हुयो विख ससारी॥'[23]

मरुभूमि से सम्बन्धित एक दृश्य भी द्रष्टव्य है, जो राजस्थानी कवि के लिए सहज स्वाभाविक है—

'अम्बर सू आगी सी बरसै, लपटा सी ये लू चालै।
भाड भई या धरती सिलगै, तीन ताप बळता चाळै॥'
पाणी बिन पाणी दरसावै, भेद - भरी लीली छाया।
कुण जागै, कुण पूठा आया, तिस मरता कुण कुण धाया॥'[24]

अब कवि के शब्दो मे यमलोक का दृश्य द्रष्टव्य है—

'बाग बगीचा, खेत नगर ना, धरती रा भूठा सा भेद।
पान फूल फळ एक बरोबर, राव रक रा हरख न खेद॥
नर नारी रा राग - रग ना, ना बिछोह री काळी रात।
कमल-नैण सध्या सरमा कर, ना पूठा जागै पर भात॥'[25]

इसी क्रम मे यम-भवन भी दर्शनीय है—

'रात दिवस रा भेद भुला कर, सदा खुला ये विकट कपाट।
अणगिणती जन आवै, पाण सूनी लागै या वाट॥'[26]

व्यावहारिक रूप द्रष्टव्य है—

'पान-पान मे नचिकेता निज, आतम जोत लखी छविमान।
एक अनेक हुयो अणगिणती, रूप सज्या धर समरस ध्यान।'[27]

---

२३ अमरफळ, पृ ५१।२७।२८
२४ अमरफळ, दूसरा सर्ग पृ ५३।४८ ४६
२५ वही, तीसरा सर्ग, पृ ५४-५५।-६-१०
२६ वही तीसरा सर्ग, पृ ५५।१५
२७ वही चौथा सर्ग, पृ. ५८।१२

किसी भी दार्शनिक सिद्धान्त को चित्रात्मक कथा के रूप में प्रस्तुत करना अपने आप में एक कलापूर्ण कृत्य है और 'अमरफळ' काव्य में यही कार्य सम्पन्न हुआ है।

अन्तरजामी

कवि के दार्शनिक काव्य अमरफळ के बाद इसी क्रम में इसी वर्ग का 'अन्तरजामी' (अन्तर्यामी) काव्य भी विशेष है। इसमे (भूमिका रूप मे) केनोपनिषद् का प्रारम्भिक अंश गृहीत है परन्तु आगे कवि की स्वतंत्र उद्भावना है, जिससे इस कथावस्तु में सर्वथा नवीनता और मौलिकता आ गई है। (यह काव्य 'वरदा' पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।)

असुरों पर विजय प्राप्त करके देव-समाज गर्वान्वित हो जाता है 'इन्द्र' की राज सभा में विजयोत्सव मनाया जा रहा है। इसी समय कुछ दूरी पर एक विशाल यक्ष की आकृति दिखलाई देती है। इन्द्र उसका परिचय प्राप्त करने के लिए अपने महावीरो को क्रमश भेजते हैं। पवनदेव यक्ष के सामने रखे हुए तिनके को भी नहीं उडा सकते हैं। अग्नि उसे जला नहीं सकती है। इस प्रकार परास्त होकर वे राजसभा में लौट आते हैं। फिर देवराज स्वय यक्ष के सामने उपस्थित होकर अत्यन्त विनम्रता प्रकट करते हैं। इसके बाद यक्ष के स्थान पर एक देवी प्रकट होती है और वह इन्द्र को बालक के समान गोद में लेकर आकाश में ऊंची उड जाती है। वह प्रतिक्षण ऊंची-ऊंची ही जाती है और इन्द्र देखता है कि इस ब्रह्माण्ड का कोई पार नही है। विविध आकाश पिण्ड सामने आते हैं और फिर नीचे रह जाते हैं। आकाश म इतनी ऊंची आकर देवी इन्द्र से पूछती है कि उसका राज्य व उसके सेनापति अब कहा है और इस ब्रह्माण्ड में उनकी क्या स्थित हो सकती है? इन्द्र समझ जाता है कि एक विशेष अन्तर्निहित शक्ति के द्वारा यह अपार ब्रह्माण्ड सचालित है। इसे कवि ने 'अन्तरजामी' (अन्तर्यामी) नाम दिया है।

यह काव्य आधुनिक सभ्यता पर गर्व करने वाले लोगो के सामने उनकी स्थिति स्पष्ट करता है। इन्द्र के सेनापति तो प्रतीक मात्र हैं। वर्तमान विश्व का वैज्ञानिक तथा सत्ताधारी लोगो को समझना चाहिए कि वे अन्तर्यामी के सामने किस प्रकार नगण्य हैं। गर्व से पृथ्वी पर निवास करने वाली मानव जाति का विकास नहीं हो सकता, विकास का मूलाधार तो विनम्रता ही है— यही कवि का अमर सन्देश है।

आग कुछ चुने हुए उदाहरण द्रष्टव्य हैं। पहले पवनदेव का पराक्रम देखिए—

> 'जद पवन प्रभंजण रूप धरयो, जगती मे विकट विधा जागो।
> उडगा डूगर थिर रूप त्याग फिरथी थर-थर कापण लागो।।'[२८]

---

२८ अन्तरजामी, छन्द १५

इसी क्रम मे अग्नि देव का ओज - तेज भी द्रष्टव्य है—

'जद अगन काळ रो रूप धरचो, पिरयो पर बिकट लाय लागी ।
सूको नदी, उबळया सागर, जळ थळ नभ मे आगी - आगी ।।'[29]

आगे आकाश मे तीव्र गति से उडने का वर्णन देखिए—

'ऊपर को नीचै चाद गयो, अर सातरसी वै गया तळै ।
अब तो सूरज पण नीचो जा, दीवै की सी बस लोय बळै ।।[30]

अन्त मे काव्य का सार सन्देश कवि के शब्दों मे सुनिए—

'अंतरजामी रो बळ पावै, तो भाड फोड दे एक चणो ।
सारी पिरयी नै मेटण नै, बस अणु-परमाणु एक घणो ।।
ग्यानी विग्यानी अभमानी, नैणा रो अन्तर - पट खोलो ।
जा रै बळ सू ब्रह्माण्ड बध्यो, अन्तरजामी री जय बोलो ।।[31]

कहना न होगा कि अन्तरजामी काव्य मे भौतिकवाद के स्थान पर अध्यात्मवाद का महत्व प्रकट किया गया है । इसमे 'विज्ञान' के ऊपर 'ज्ञान' की महिमा गाई गई है ।

कूंजां (कुरजां)

'कूंजा' राजस्थानी सन्देश काव्य है । इसकी रचना सन् १६४८ मे बासवाडा मे हुई थी, जब कवि वहा राजकीय अतिथि के रूप म प्रवास कर रहे थे । कहना न होगा कि अर्वाचीन राजस्थानी काव्य की यह एक महत्वपूर्ण कृति है ।[32]

'कूंजा' शब्द संस्कृत के क्रौंच शब्द से व्युत्पन्न है । 'क्रौंच' कुररी पक्षी को कहते हैं । क्रौंच सारस या सारस पक्षी बगुले के प्रकार का होता है । इनके जोडे प्रायः खेतो मे जलाशय के पास दिखाई पडते हैं । इनमे परस्पर इतना प्रेम होता है कि यदि एक मर जाय तो दूसरा अत्यन्त करूण विलाप करके छटपटा कर प्राण दे देता है इसी पक्षी के व्याध द्वारा मारे जाने पर महर्षि बाल्मीकि ने यह श्लोक कहा था—

'मा निषाद प्रतिष्ठा त्वामगमः शाश्वतीसमाः ।
यत्क्रौंच मिथुनादेकमवधी काम मोहितम् ।।

२९ वही, छन्द २०
३० वही, छन्द २६
३१ अन्तरजामी, छन्द ५०-५१
३२ कूंजा (प्रस्तावना)— डा० दिवाकर शर्मा

संस्कृत का क्रौंच पक्षी ही राजस्थानी कूंजा है। इसकी बोली बडी मर्मस्पर्शी होती है। राजस्थानी साहित्य म कूंजा (कुरजा) का वर्णन बहुत पाया जाता है।[33]

एक सौ इक्कीस छन्दों म गुम्फित 'कूंजा' काव्य विप्रलभ शृंगार का सुन्दर नीति-काव्य है। यह राजस्थानी सन्देश-काव्य (किंवा दूत काव्य) है। महाकवि कालिदास द्वारा रचित मेघदूत' ही सर्वप्रथम दूत-काव्य उपलब्ध होता है। राजस्थानी काव्यों मे 'कूंजा' को सन्देश ले जाने के लिए माध्यम बनाया गया है। एक राजस्थानी लोकगीत में कहा गया है—

तूं छै ए, कुरजा, भायेली, तू छै धरम री भाण।
एक सदेसो, ए बाई म्हारी, ले उडो, ए म्हारी
राज, कुरजा, म्हारो पीव मिला दे ए।।

कूंजा को सन्देश का माध्यम बनाने का कारण सहानुभूति है। कूंजा स्वयं वियोग के कारण प्रति विलाप करती है। वह वियोग के कष्ट को जानती है, अत दूसरे के वियोग का निराकरण करने का कार्य वह स्वीकार कर लेगी। जोडी के बिछुडने पर वियोग स्वाभाविक है। नारी, नारी के वियोग का अनुमान लगा सकती है, अत कूंजा को दूत बनाने की कल्पना की जाती है।

महाकवि कालिदास के 'मेघदूत' के अनुकरण पर अनेक भारतीय कवियों ने अपने काव्य प्रस्तुत किये हैं। 'कूंजा' काव्य की प्रेरणा का मूल स्रोत भी वही है। 'कूंजा को राजस्थानी का 'मेघदूत' कहा जा सकता है। इसके कई स्थलों पर 'मेघदूत' की छाप है परन्तु यह एक सर्वथा स्वतंत्र कृति है और इसकी मौलिकता एकदम स्पष्ट है।[34]

कूंजा : कथानक

बीकानेर नरेश मुगल सम्राट की सेवा मे दक्षिण भारत मे गये हुए हैं। व अपनी प्रियतमा के वियोग के कारण अति दुखी हैं। वे 'कूंजा' को सन्देश वाहक बनाकर अपनी प्रिया के पास भेजते हैं। उन्हें यह जानकर प्रसन्नता होती है कि उनका सन्देश पहुच जायेगा। परन्तु सन्देशवाहक 'कूंजा' मार्ग से अच्छी तरह परिचित नहीं है। यह सोचकर वे उसको मार्ग बतलाते हैं। इसके अनंतर वे अपनी प्रियतमा को सन्देश देते हैं। यह सन्देश मार्मिक है।

समीक्षा

'कूंजा' के प्रारम्भिक छन्दों में कवि ने 'कूंजा' के रूप, गुण व स्वभाव का आलंकारिक वर्णन किया है—

---

३३ कूंजा (टिप्पणी), पृ. २४
३४ कूंजा (प्रस्तावना)— डा० दिवाकर शर्मा

'मन मोती, तन उजळो मिल्यो, निरमळ जात-सुभाव।
धारा चालो दूध री नई, इमरत रे दरियाव ॥
ए अम्बर री गगा,
मरवण नै लेज्या एक सदेसडो
रूक-रूक सुध आवै ।।'[35]

कही कूजां को स्वर्ग की अप्सरा बताया है[36] तो कहीं उसे अमृत की रसधारा कल्पित किया है ।[37] विभिन्न छन्दो मे उसके विभिन्न सबोधन है, जो विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं। यदि इन सभी सम्बोधनो को एक स्थान पर रख दिया जाए तो 'मालोपमा' की झडी सी लग जाएगी।

. आगे कूजा काव्य मे से कुछ चुने हुए उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं। सबमे पहले राजस्थान की बहुविध प्रकृति का दृश्य द्रष्टव्य है—

'डूंगर ऊपर डूगर जा में, अर धोरा री धार।
नरसिंधा रा गढ़ अणगिणती, सरवर नीर अपार ॥
बन रा साज निराळा
नदी मदमाती चालै मोद में,
वो देश निराळो ।।'[38]

इसके बाद कूंजा के मार्ग मे पडने वाली 'उज्जैन' नगरी का वर्णन देखिए—

"उतरादै अम्बर मे हालो, नैणा रो रस लेण।
सदा सुरगो देस माळवो, आ पूगो उज्जैण ॥
नगरी घणी पियारी,
आमों-बरसावू काळीदास री,
वो दूत घुमायो ।।'[39]

इस पद्य पर मेघदूत के एक छन्द की छाया है ।[40]

अब आगे ऐतिहासिक गौरव से सम्पन्न मन्दसोर नगर का महत्व देखिए—

३५ कूजा, छन्द ६
३६ कूजा, ७
३७ वही, ८
३८ वही, पृ ४।२०
३९ कूजा, पृ ६।२७
४० तुलनीय वक्र पन्था यदपि भवतः········ (मेघदूत।२६)

'आ पूगो अब मदगोर मे, भारत वीर अनूप ।
जुग जावे जस - धरम न जावै, नित सरसावै रूप ।।
जिण री नाम उचारयां,
हूप - उपाटी राजा भान सौ,
रोपी रजधानी ।'[41]

इसके बाद चितौड दुर्ग म उपस्थित कीर्ति-स्तम्भ का कवि-वाणी मे अवलोकन कीजिए—

'कीरत-खभ दूर सूं दीपै, यो मेवाडी ताज ।
जिण मे आसण धार विराजे, सारो देव समाज ।।
दूजो सिखर सुमेरु,
थांरै हिरदे री मनस्या पूरसी,
थे परचो पावो ।।'[42]

इसके बाद प्राचीन ऐतिहासिक स्थल 'हर्ष पहाड' (सीकर) का वर्णन कवि के शब्दो मे देखिए—

'उत्तरादै अम्बर मे ऊभो, ऊंचो हरस पहाड ।
पुन्नमयी धिरयी पर ऊग्यो, जाणो पुन रो भाड ।।
कर तूं रैन-बसेरो,
हिरदो बिगसवै थांरो फूल ज्यूं
रसधारा चालै ।।'

आगे 'ग्राम वधू' का चित्रण द्रष्टव्य है—

'जोवन रे मद खेत रुखाळै, कामणगारी नार ।
ध्यान बसै अन्तर री छाया, ना हिरणी री डार ।।
तू सुण-सुण ए कूजा,
नैणा में बसी बाजे प्रेम री
पग डगमग डोले ।।[43]

इस पर महाकवि माघ के 'शिशुपालवध' के एक छन्द का प्रभाव है ।[44]

---

४१ वही, पृ ७।३३
४२ वही, पृ. ८।४२
४३ वही, पृ १६।८६
४४ शिशुपाल वध महाकाव्य- महाकवि माघ— सर्ग १२।४३

कवि ने मेघदूत के समान ही अपने 'कू जा' काव्य में उत्तर-भाग का अलग संकेत किया है। इसमें बीकानेर नगर, यहां के राजमहल, नायिका और उसको प्रेषित संदेश का बड़ा ही रसपूर्ण वर्णन किया गया है। इसमें से संदेश का एक पद्य द्रष्टव्य है—

'ओरूं आवै झिरमिर मेहा, बागां बीच बहार।
ओरूं आवै छिटक च्यानणी, म्हैला रो सिणगार ।।
ओरूं फागण आवै,
बिछड्या मिल ज्यावै दोनूं तीर रा,
घण, धीरज धारो ।।'

जैसा कि ऊपर प्रकट किया गया है कि महाकवि कालिदास के मेघदूत काव्य से प्रभाव ग्रहण करके भारत की विविध भाषाओं में अनेक कवियों ने अपनी सरस कृतियां प्रस्तुत की, उनमें से यह राजस्थानी कृति भी एक सुन्दर नमूना है। काव्य का रस विप्रलम्भ शृंगार है। विरह वेदना की अभिव्यक्ति अत्यन्त मौलिक और सांगोपांग है··· ···· इस विप्रलम्भ रस-प्रधान काव्य में भी कवि का स्वर देश-भक्ति का है। उसने जगह-जगह राजस्थानी वीरों का स्मरण किया है।[४५]

गोपी-गीत

कवि ने अपने 'कू जा' काव्य में सांसारिक प्रेम का चित्रण किया है तो 'गोपीगीत' काव्य में भक्ति रस अर्थात परमात्मा से प्रेम का प्रकाशन किया है। यह काव्य चार खण्डों में विभक्त है और प्रत्येक खण्ड में विविध उप-शीर्षक हैं। यह भी कूंजा के समान ही गेय है। इसकी 'धुन' में कवि ने प्रचुर-परिमाण में रचनाएं प्रस्तुत करके एक प्रकार से इसे अपनी 'धुन' अर्थात् 'मनोहर धुन' ही बना दिया है। 'धोरां री संगीत' की सभी कविताएं भी इसी 'धुन' में हैं।

'गोपी गीत' की प्रस्तावना में प्रकट किया गया है— 'निर्गुण उपासना पर सगुण भक्ति की श्रेष्ठता प्रतिपादित करने हेतु अनेक भारतीय कवियों ने अपनी काव्य-कृतियां प्रस्तुत की हैं और इस स्थापना के लिए 'उद्धव-गोपी-संवाद' को मुख्य आधार बनाया है। ये रचनाएं भक्तजनों में आज भी कम लोकप्रिय नहीं हैं। इसी परम्परा में डा० मनोहर शर्मा ने अपना राजस्थानी खण्डकाव्य 'गोपी गीत' प्रस्तुत किया है।'[४६] इसी क्रम में प्रस्तावना में आगे कहा गया है— 'ऐसा प्रतीत होता है कि 'गोपी-गीत' के कवि ने इस परम्परा के पुराने हिन्दी कवियों सूरदास, नन्ददास के अतिरिक्त आधुनिक कवि सत्यनारायण कविरत्न, अयोध्यासिंह उपाध्याय (प्रियप्रवास)

४५ मरु भारती-पिलानी, वर्ष २९, अंक-१, अप्रेल १९८१, पृ. ५९-६०
४६ गोपी गीत (प्रस्तावना)— तुलाराम जोशी पृ १

ग्रौर जगन्नाथदास 'रत्नाकर' (उद्धव शतक) से भी पर्याप्त प्रेरणा ग्रहण की है ग्रौर बंगला कवि माईकेल मधुसूदनदत्त (बिरहिणी ब्रजांगना) का भी उस पर प्रभाव है। फिर भी कहना न होगा कि प्रस्तुत काव्य की नवीनता ग्रौर मौलिकता सर्वथा ग्रसंदिग्ध है।[47]

उद्धव को अपने ब्रह्मज्ञान का बड़ा अभिमान है। अतः श्री कृष्ण उन्हें गोकुल ग्राम में वहा के लोगो को ब्रह्मज्ञान का उपदेश देने के लिए भेजते हैं। वे सभी श्री कृष्ण के प्रेम मे व्याकुल थे। उद्धव गोकुल पहुचकर माता यशोदा, ग्वालबाल ग्रौर गोपियों को 'निर्गुण' भक्ति का उपदेश देते हैं परन्तु श्री कृष्ण के प्रति उनका निर्मल प्रेम इतना तीव्र है कि स्वयं उद्धव 'सगुण' भक्ति के समर्थक बन जाते हैं ग्रौर वहा से श्री कृष्ण के प्रेम-रंग मे सर्वतोभावेन रंगे जाकर मथुरा लौटते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत काव्य की प्रमुख विशेषता निर्मल प्रेम के दिव्य प्रकाश को प्रसृत करना है।

इस प्रसंग को परम्परा काव्य के अनुसार सामान्यतया 'भ्रमरगीत' अथवा 'उद्धव गोपी-संवाद' कहा जाता रहा है परन्तु इसका नया नामकरण 'गोपी गीत' भी कम आकर्षक नहीं है क्योंकि इसमे सर्वाधिक प्रधानता ब्रज की व्याकुल गोपियों को ही दी गई है। उनमे सर्व - प्रधान राधा है। आगे काव्य के कुछ चुने हुए उदाहरण देखिए। सर्वप्रथम मंगलाचरण का छन्द ध्यान देने योग्य है—

'मथरा रै मंदर में ऊभो, ऊंडो ध्यान बिचार।
अन्तर-छिब रमती सी जोवै, सुध भूल्यां ससार।।
अम्बर नैण जुड़ाया
आमोंरस प्यावै निरमळ प्रीत रो
नन्दजी रो लालो।'[48]

इसमे गोकुल छोड़कर मथुरा मे आ जाने के बाद श्री कृष्ण की मनोदशा का मार्मिक चित्रण हुआ है, जिससे प्रकट होता है कि गोकुलवासी श्री कृष्ण के विरह मे व्याकुल थे तो मथुरा-निवासी श्री कृष्ण भी गोकुलवासियो के विरह मे कम सतप्त नहीं थे। आगे एक छन्द मे ग्वाल-बाल सम्बन्धी प्रसंग देखिए—

'बिनरावन गोकल री गळियां, जमना धीर समीर।।
याद करै के रास भूलगो, बलदाऊ रो वीर।
चित रा चाव सुरगा,

---

४७ वही
४८ गोपी गीत, पृ १११

बसीवट रूरो, डाळ कदम्ब री
रस पुंज निराळो ।।'[49]

इस छन्द म भोले भाले गोप-बालकों का श्री कृष्ण भगवान के प्रति अगाध निर्मल प्रेम है, वह मानो उद्धव को देखकर धारा रूप म बह चला है। प्राग उद्धव गोपी सवाद का एक प्रसग द्रष्टव्य है—

'रास रसिक रा राग रग रस, नांव बखाण्या जाय।
जमना तट, गोकल री गळिया, बिनरावन रै माय।।
नटवर लीला कीनी,
हिरदै थिर तापी छिव री छाप-सो
नित रग सुरगो ।।'

यह प्रसग काफी लम्बा चलता है और इसमें तर्क-वितर्क भी काफी हैं परन्तु अन्त मे ब्रह्मवादी महाज्ञानी उद्धव इन ग्रामीण प्रेम-प्रतिमाओ (अर्थात् गोपियों) की सामने परास्त ही नही हो जाते, अपितु इनसे इतने प्रभावित होते हैं कि उनकी (उद्धव की) विचारधारा ही बदल जाती है और वे स्वय गोप-रूप धारण कर लेते हैं—

'आख्या चिमकी परम प्रेम सू, दूर गयो यो रोग।
जग्या ऊधो आज मळकता, माग्यो माखन भोग।।
मा रो हिरदो फूल्यो,
बेटो कर मान्यो सरबस लाडलो,
ऊधो अर माधो।।'

'गोपी गीत' एक सौ इक्यावन छन्दो का सगीतात्मक खण्ड काव्य है। इस प्रकार यह अधिक बडा नही है, फिर भी इसम निर्मल प्रेम की जो धारा प्रवाहित हुई है, वह सहृदय पाठको को भक्तिरस म तो मग्न करती ही है परन्तु साथ ही काव्य रस म भी लीन कर देती है।

'फूल - पांखड़ी'

'फूल पाखडी' डा० मनोहर शर्मा की अब तक विरचित राजस्थानी काव्य कृतियों मे सब से बाद की है। इसम समय-समय पर कहे हुए दोहे एक ढग से विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत सकलित हैं। यद्यपि छद-सख्या को देखते हुए इनको

४६ वही पृ. ११।५७

पुरानी परम्परा के अनुसार पच्चीसी, बावनी, छिहत्तरी आदि नाम दिए जा सकते है परन्तु कवि ने इस विषय में नए ही नाम दिए हैं, जैसे अविनासी री जात, मिनखाचार, कवि किलोळ, भात-भात रा फूल, जुग-चरचा, सातरसी, तारा-छाई रात, पछी-कुल, रग पीथळ राठोड, मरुवाणी रा मोर आदि । राजस्थानी में लघु-काव्यो की बडी सख्या है। ये लघु - काव्य अनेक विषयो से सबधित हैं और काफी पुरानी परम्परा से चले आ रहे हैं। 'फूल - पाखडी' को भी इसी प्रकार के लघु-काव्यो का सग्रह कहा जाए तो कोई अनुचित नहीं होगा।

प्रस्तुत काव्य - कृति का विषय - वैविध्य विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। इसमे प्रकृति-चित्रण, ग्राम-जीवन, नीति-तत्व, व्यग्य-विनोद, कवि-प्रशसा आदि अनेक विषयो पर कहे हुए दोहे सग्रहीत हैं जो बडे ही मार्मिक हैं।

आगे इस विषय मे कुछ उदाहरण दिये जाते हैं—

कवि का प्रकृति चित्रण बडा स्वाभाविक और आकर्षक है। यहां प्रकृति के सौम्य और रौद्र दोनो रूप प्रकट हुए हैं। पहले सौम्य रूप दर्शनीय है—

सरवर भरियो नीर सू, सोभा-सुख अणपार।
जाणै हिरदो बीड रो, निरमळ और उदार ॥
आती-जाती पून सू, नाच-नाच हस - बोल।
सरवर रो पाणी करै, मोद - विनोद - किलोळ ॥

इसी क्रम मे प्रकृति के रौद्र - रूप को भी एक दोहे मे देखिए—

धोरा मे भभूळियो, दीनो धूळ उडाय।
दारू पीकर दैतज्यू चक्कर खातो जाय ॥
(अविनासी री जोत)

'फूल-पाखडी' मे राजस्थानी ग्राम - जीवन के बडे ही सरल और सुहावने चित्र प्रकट हुए हैं—

भोळा भाई खेत मे कादा-रोटी खाय।
पीवै पाणी पालरो सो सुख कह्यो न जाय ॥
दूर गाव सू खेत मे, खेजडलै री छाह।
माणै मौज गुवाळिया, ना चिन्ता ना चाह ॥
(भात-भात रा फूळ)

कवि के नीति-विषयक दोहे आधुनिक युग के अनुसार है। इनमे कुछ नयापन नजर आता है, जो परम्परागत पुराने नीति वचनो मे नहीं है—

ना कोई कारज सधै, ना रस रो सचार ।
तो जूनै जुगरी विगत, मन-माथै रो भार ।।
जो प्रभाव सताप मे, गयो जमारो खोय ।
उण रै गुण रा गीतडा, अब गाया के होय ।।
(भान भगत रा फूल)

इस सग्रह की एक विशेष रचना 'पछी-कुळ' है जिसमे राजस्थान के विभिन्न पक्षियो के सम्बन्ध म २७ दोहे दिए गए है। राजस्थानी भाषा म ऐसी रचनाओ की परम्परा है। केसरीसिंघ रा 'कु डळिया' अथवा 'गुण-पखी प्रबोध' इसी श्रेणी की रचना है।[50] इसी प्रकार 'जिनावर बतीसो' भी एक लघु-काव्य है।[51] डा० मनोहर शर्मा का 'पछी-कुळ' इसी क्रम म एक रोचक रचना है। इसम एक एक पक्षी के सम्बन्ध मे एक-एक दोहा दिया गया है उदाहरण देखिए—

सावण सरब-सुहावणो, नदी - नाळा जोर ।
नाचै हरियल डूगरां छतरी ताण्या मोर ।।
दूजा पछी बापडा, बैठ्या काटै रात।
पिदियो सोवै म्हैल में, चतराई री बात ।।
तीतर बैठ्यो बोरडी, बोलै वचन रसाल ।
वीर बटाऊ मोज में, सरपट सरपट चाल ।।

'जुग चर्चा' शीर्षक के अन्तर्गत कवि ने शासन, समाज साहित्य आदि के सम्बन्ध म मार्मिक व्यग्य वचन प्रकट किए है। इन दोहा की सख्या भी सबसे अधिक (अर्थात ७६) है। अपनी अ य रचनाओ के समान ही कवि ने प्रस्तुत कृति म भी इस दिशा म विशेप रस लिया है। नमूने देखिए—

नेता जुग रो देवता, मागै 'मत' रो दान ।
बळ राजा रै बारणै, ज्यू बावन भगवान ।।
घर में मिनकी सू डरै, रचै काव्य रस वीर ।
सभा बीच नरसिंघ ज्यू गरजै कवि रणधीर ।
धारण कर जुग रो धरम, महिमा गीत सुणाय ।।
सिव रै चरणा चाव सू, भगत चढ़ाई चाय ।।

५० राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ द्वारा प्रकाशित (सम्पादक प्रो० मदनराज दौलतराम महता, जोधपुर)
५१ 'मरुभारती' (पिलानी) के श्री घनश्यामदास बिडला अभिनन्दन विशेषाक मे डा० मनोहर शर्मा द्वारा लिखित 'तीन राजस्थानी लघु-काव्य' शीर्षक के लेख मे प्रकाशित ।

याद करै ना भैण नै, साळी रो सतकार ।
सोनचिडी नै छोड़कर, ल्हेली आदर - सार ।।

इसी क्रम मे कवि-प्रशस्ति विषयक कुछ दोहे भी द्रष्टव्य हैं—

वालमीक मुनि आद कवि, वाणी रो वरदान ।
जिण रै पुन्न–प्रताप सू, रामकथा छविमान ।।
दिव्य-पुरस भल उतरयो, जोत-रूप मुनि व्यास ।
धरम–सेतु धर पर रच्यो, जय भारत इतिहास ।।

(सातरसी)

सतवादी हम्मीर रो, 'हठ' ज्यू पुन्न प्रकास ।
दीपित कर अम्मर हुयो, धन धन भाडो व्यास ।।
कविवर बाकीदास रो, कुण कर सकै बखाण ।
जिण रै भारत-गीत सूं, जाग्या, सोया-प्राण ।।

(राजस्थानी रसधारा)

उदयराज ऊजळ दियो दिव्य अमर सन्देस ।
निज भासा साहित्य बिन, दीपै कदै न देस ।।
जूनै जुग रो जगत मे, जस राख्यो अणभग ।
पाळी पुन्न-परम्परा, कवि नारायण रग ।।

(मरुवाणी रा मोर)

मनवार

'मनवार'— यह काव्य कृति भी 'फूल-पावडी' के अनुरूप दोहामयी है। इसमे विविध विषयो मे सम्बन्धित कविताए हैं, जो रोचक तथा आकर्षक हैं। उदाहरण के लिए नमूना देखिए—

देस धरम री दुर्दशा, देखी देव - निवास ।
वालमीक धर अवतरयो, बणकर तुलसीदास ।।
मुनिवर तुळसीदास नै, बारम्बार प्रणाम ।
गाव-गाव परगट करयो, 'मानस' मे रस-राम ।।
रामकथा भागीरथी, दोनू इमरत - धार ।
दरसण सूं पातक कटै, प्रगटै पुन्न अपार ।।

डा० मनोहरजी शर्मा का कवि-रूप विविध रंगों से प्रकाशमान है। वैसे तो आपने संस्कृत[52] और हिन्दी[53] मे भी काव्य रचनाए प्रस्तुत की हैं, परन्तु प्रमुख रूप

५२ संस्कृत - रचना का नमूना—

नाना रूपधरा लोके, निवसन्ति हि मानव ।
किन्तु तेषामभिन्नत्व, धर्मस्य लक्षण ध्रुवम् ॥ १ ॥
शिशु नैव मनुष्यस्य, शावकन्तु पशोरपि ।
दृष्ट्वा सञ्जायते हर्षः, एतद् वै सृष्टि-कारणम् ॥२॥
नरो विवाहितो भूत्वा, चतुष्पादो हि जायते ।
किम्वा सम्पद्यते नासौ, सद्य एव चतुर्भुज ॥३॥
परम्परा समाप्ता वै, बहुश नीरहारिणाम् ।
पय: परन्तु कूपस्य, नान्त यात कदाचन ॥४॥
सूर्योदय समाकर्ण्य, घूक शोकमुपागत ।
सञ्जात निखिल विश्व, हा हन्त, तमसावृतम् ॥५॥
यस्मिन् देशे जना सर्वे, स्वार्थसम्पूति-तत्परा ।
नाश याति ह्यसौ नून, शुष्कमूलतरुर्यथा ॥६॥
पठन पाठन चैव, लेखन भाषण तथा ।
अर्थ-लाभाय तत्सर्वं, कलौ सम्पाद्यते नरै ॥७॥

('पत्र पुष्पम' से)

५३ हिन्दी-काव्य का नमूना—

ओ प्यारे सुखधाम, बिसाऊ नगर मनोहर ।
तू वसुधा का सार, प्रेम - रत्नो का आकार ।।
तेरी मिट्टी इस काया मे, रूप कहाई ।
नन्दन-वन सी पावन, देह मे प्राण समाई ॥
तू प्राणों का प्राण, प्राण का प्यारा प्रियतम ।
तू तीरथ तपलोक, विश्व का मगल उत्तम ॥
पितृभूमि तू, मातृभूमि तू, निर्मल पावन ।
देव-भूमि तू, दिव्य भूमि तू, परम सुहावन ॥
तू नयनों की ज्योति, भव्य तू जीवन तारा ।
मन का मोती, हार हिये का, सरवस सारा ॥
तेरे सुख मे सुखी सदा, यह तन-मन मेरा ।
विजय, उन्नति, अभिलाषा का, एक बसेरा ॥

('कवि का गाव' से)

से आपकी काव्य-कृतिया राजस्थानी म हैं। इन कृतियों का वैविध्य विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। ऐसा प्रतीत होता है। मानो आपने परम्परा स चली आती हुई प्राय सभी काव्य - विधाओ अथवा शैलियो मे नवीन कृतिया प्रस्तुत करके राजस्थानी के काव्य-भडार को भरने का प्रयत्न किया है। इनमे बालोपयोगी काव्य 'म्हारो गांव' से लेकर दार्शनिक काव्य 'अमरफळ' तक सम्मिलित हैं। शृगार रस की परिपक्वता हेतु आपका 'कूजा' काव्य पठनीय है तो 'गोपीगीत' काव्य भक्ति-रस से ओत प्रोत है। 'मरवण' प्रेमाश्रयी काव्य है तो 'गीत कथा' वीर रसात्मक कृति है। 'रम धारा' और 'गजमोती' प्रकति-काव्य हैं तो 'पछी' करुण रस का नमूना है। 'अरावली की आत्मा' मे विविध फुटकर कविताए हैं तो 'अबला' काव्य म नारी समस्या उपस्थित है।

इसी प्रकार कवि ने अपनी कई काव्य-कृतिया मात्र दोहा छन्द म प्रस्तुत की हैं तो 'आरजधारा' म डिगल गीत हैं, जो परम्परागत गीतो की तरह दुर्बोध नही है। आपने ऐसी अनेक काव्य-कृतिया प्रस्तुत की हैं (जैसे 'धोरा रो सगीत' आदि) जो सम्पूर्ण रूप से सगीतात्मक है। इसी प्रकार 'बटाऊ' म फुटकर रचनाए सकलित हैं तो 'गोपीगीत' आदि कथात्मक खण्ड काव्य है।

सम्भवत आकार विस्तार के कारण कवि ने कोई महाकाव्य नही लिखा। इसका कारण यह भी हो सकता है कि वतमान पाठक क पास बडे-बडे महाकाव्यो को पढने के लिए यथोचित अवकाश नही है और वह थोडे म ही बहुत कुछ प्राप्त करने का इच्छुक है। स्पष्ट ही डा० मनोहर शमा क काव्य का प्रमुख स्वर राष्ट्रीय भावना है। यही कारण है कि 'जय-जन नायक' और 'आरजधारा' जैसी कृतियो म आपने पुराने और नये अनेक भारत-भक्तो का यशोगान किया है। 'गीत-कथा' की वीर रसात्मक कविताए भी इसी दिशा म मार्ग दिखलाती हैं। माना कि कवि को राजस्थान के इतिहास व सस्कृति से विशेष प्रेम है, परन्तु ध्यान रखना चाहिए कि मूलत यह भारतीय इतिहास और भारतीय सस्कृति के ही अभिन्न अग है। कवि ने सर्वत्र ऐसा ही अनुभव किया है और इन्ही भावो को अभिव्यक्त की है। उनक 'अबला' काव्य की महिलाए केवल राजस्थान से सम्बन्धित नही है अपितु वे भारतीय इतिहास के विशिष्ट नारी पात्र हैं। 'फूल-पालडी' मे तो सस्कृत - कवियो का भी राजस्थानी म गुण-गान है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि डा० शर्मा जी के काव्य-साहित्य म रस प्रवाह करने का प्रयत्न किया गया है तो साथ ही उसमे प्रेरणा को भी पूरा महत्व दिया गया है। आपका काव्य साहित्य मनोरजन की वस्तु न होकर मनन करने योग्य है। उसमे प्राणो का स्पदन है और जीवन को उन्नत बनाने हेतु प्रेरणा है यही कारण है कि

कहीं भी कवि ने अपने काव्य को अलकारो से सजाने की कृत्रिम चेष्टा नहीं की है और उसे जो भी कुछ कहना है, वह सर्वथा सुबोध और अत्यन्त सरल भाषा मे कहा है। पंडित होते हुए भी उसमे कही पांडित्य प्रदर्शन का प्रयत्न नही है। राजस्थान की गौरवान्वित काव्य परम्परा की उल्लेखनीय प्रवृतिया डा० मनोहर शर्मा की कृतियों मे एक मूल्यवान् धरोहर के रूप मे सरक्षित हैं। कथ्य, शिल्प और चिन्तन इन तीनों ही दृष्टियो से समीक्ष्य काव्य-कृतिया राजस्थानी काव्य-परम्परा की अनुपम निधि है।

अध्याय—४

अनूदित साहित्य : विश्लेषण एवं मूल्यांकन

कोई भाषा कितनी समृद्ध है, इसका ज्ञान उसकी मौलिक रचनाओं से तो होता ही है परन्तु प्रमुख ग्रन्थों के अनुवाद भी उस भाषा के साहित्य - भण्डार की श्रीवृद्धि करते हैं। अनुवादक का कार्य अति कठिन होता है। उसे दोनों भाषाओं का पूर्ण ज्ञान तो होना ही चाहिए, साथ ही अनुवाद - कला का भी उसे ज्ञान होना आवश्यक है। अनुवादक पूरा बन्धन में होता है। अनुवाद अनुवाद होता है, न कम, न अधिक। केवल शब्दानुवाद सरस नहीं हो सकता। यदि अनुवादक मूल भाषा के शब्दों की ध्वनि अपनी भाषा में व्यक्त न कर सके तो भी उचित नहीं और यदि भावों को लेकर ही अनुवाद किया जाए तथा मूल शब्दों की परवाह न की जाए तो ठीक नहीं। पद्य का अनुवाद पद्य में करना तो और भी कठिन है।

राजस्थानी भाषा के कई विद्वानों ने अपनी मातृभाषा के साहित्य-भण्डार में इस दृष्टि से अच्छी श्री वृद्धि की है। कई सौ वर्ष प्राचीन संस्कृत कथा काव्यों के पद्यानुवाद प्राप्त होते हैं।[1] इसके साथ ही गद्यानुवाद भी हुए हैं।[2] संस्कृत काव्यों के राजस्थानी में पद्यमय अनुवाद की परम्परा बीस पच्चीस वर्षों से पुनः प्रगतिशील हुई है। इस शृंखला में मेघदूत[3], दिलीप[4], रत्नहार[5], भरथरी शतक[6], अन्योक्ति शतक,[7] करुणालहरी[8], गीता[9], काळजैरी कोर[10], वीतराग री वाणी[11] गीतांजली[12] आदि अनुवाद द्रष्टव्य हैं। फारसी के नामी ग्रन्थों का भी राजस्थानी में अनुवाद हुआ है। उमर खैय्याम री रुबाइयां[13], विजय पत्र[14] आदि प्रसिद्ध अनुवाद है। इसी क्रम में अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं की कविताओं के राजस्थानी अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं। राजस्थानी पत्र-पत्रिकाओं में राजस्थानी अनुवाद छपते रहे हैं।[15] अंग्रेजी कवि ग्रे की प्रसिद्ध 'एलीजी रिटन इन ए कन्ट्री चर्च-यार्ड' कविता का पद्यानुवाद 'शोकगीत' नाम से प्रकाशित हुआ है।[16] रूसी कविताओं

१ विक्रम चरित्र बेताल पच्चीस, सिंहासन बतीसी आदि (विक्रम एवं तत्संबंधी साहित्य- डा० ब्रजनारायणजी पुरोहित, अध्याय २-८ शोध प्रबन्ध)

२ वही

का अनुवाद भी 'लेनिन काव्य कुसुमांजली' नाम से प्रकाशित हुआ है।[17] अन्य भाषाओं में रचित कहानी, उपन्यास, एवं नाटक जैसी प्रमुख विधाओं की कुछ कृतियों का राजस्थानी में अनुवाद हुआ है।[18]

आगे डा० मनोहर शर्मा के 'अनूदित-काव्य' पर प्रकाश डाला जाता है:

१. राजस्थानी मेघदूत

कविकुल-गुरु कालिदास का 'मेघदूत' गीतिकाव्य परम्परा में प्रथम खण्ड-काव्य माना जाता है। यह मदाक्रान्ता छन्द में रचित है। इसके दो खण्ड हैं- पूर्व मेघ एवं उत्तर मेघ। पूर्वार्द्ध में चौसठ छन्द हैं तथा उत्तरार्द्ध में चौपन।

'डा० मनोहरजी ने' 'मेघदूत' का पद्यानुवाद किया है। डा० नारायणसिंह भाटी तथा श्री मनोहरजी 'प्रभाकर' ने भी इसका राजस्थानी अनुवाद किया है। शर्माजी की भाषा शेखावाटी की बोलचाल की भाषा है, जिसमें प्रसाद गुण का निर्वाह हुआ है। श्री श्रीलालजी मिश्र के शब्दों में— 'प्रसाद गुण ईं में प्रधान है। मूळ रा भाव पूरा उतरचा है अर मूळ रै शब्दा री पकड कठै भी कोनी छूटी। ईं सूं आ री संस्कृत रो गैरो ग्यान साफ झळकै है।[19] एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

> 'कामण कै रस चूक चाकरी मान बडाई खो सारी।
> एक बरस को ले देसूंटो कोई यक्ष त्याग नारी॥
> बिरछा की सीळी कुंजा में रामगिरी आवास करचो।
> सीता माता कै न्हावण सै जाके जळ में पुन्न भरचो॥'[20]

इस श्लोक के अनुवाद के सम्बन्ध में प० श्रीलालजी ने लिखा है— 'अस्तंगमित महिमा, वर्ष-भोग्येन' रो मूळ रो भाव शर्माजी ने छोड'र दुजै कोई सै भी अनुवाद

---

३ से १८ जागती जोत-- वर्ष ३, अंक-३ (अक्टूबर - दिसम्बर, १९७५) (राजस्थानी मांय अनूदित साहित्य- प० श्रीलालजी मिश्र) पृ. ७०-८२

१९ जागती जोत, भाग-३, अंक-३ पृ ७१

२० मेघदूत— प्रथम छन्द

मे कोनी आयो ।[21]

अन्त शुद्धस्त्वमपि भविता वर्णमात्रेण कृष्ण । (५०)

अनुवाद

'तू भी उण रसवती को जळ, पीकर अंत करण उजाळ ।
बाहर मे भावू रह काळो, भीतर को दे पाप पखाळ ।।

'कामार्त्ता हि प्रकृति- कृपणाश्चेतनाचेतनेपु ।' ।।५।।

अनुवाद

'जड चेतन को भेद ना जाणें, जा के हिरदे पसरी पीड ।।'

मनोहरजी ने 'मेघदूत' के पद्यानुवाद मे ठेठ शेखावाटी भाषा का प्रयोग किया है। श्री रावतजी सारस्वत क शब्दो मे — 'मनोहरजी री भासा ठेठ शेखावाटी री है। बिसाऊ रै आस - पास बोली जावणवाळी भासा मे ही आप रचनावा अर अनुवाद करया है पण इण मे स्वाभाविक सरलता अर सरसता ल्यावण री आप पूरी कोसीस करी है। भावा नै आध्यात्मिक स्तर ताही लेजावण री अर गूढ सू गूढ़ भावा नै सरल भासा मे प्रकट करण री आपरी कारीगरी सरावण जोग है। स्वभाव अर परम्परा सू श्रद्धालु हुवण सूं आपरी रचनावा मे जगा जगा इसा भावा री छाप मिलै। सस्कृत रै मूळ रो ज्ञान होवण सू आपरी अनुवाद करणै री योग्यता नै भी मानणी पडै ।[22]

२. राजस्थानी अन्योक्ति-शतक

पण्डितराज जगन्नाथ के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'भामिनी विलास' के प्रथम उल्लास

---

२१ तुलनीय-(क) पडी चाकरी चूक धणी जद घणो रिसायो।
भुरती कामण छोड रामगिरि यक्ष सिधायो ।।
जनकसुता रै स्नान जेवरो निरमळ पाणी।
गहरी बिरछा जाय न कदे बखाणी ।।
(डा० नारायणसिंहजी भाटी)

(ख) एक यक्ष अलकापुर करतो, धनपत रो सेवा सारी।
पण प्यारी री सुध मे खोयो करी भूल कोई भारी ।।
देश-निकाळो मिल्यो दण्ड जद रामगिरी सरणै आयो।
जठै सघन तरू-छाह पुण्य जळ-जनक-लाडली रो न्हायो ।।'
(श्री मनोहरजी प्रभाकर)

२२ मेघदूत (राजस्थानी अनुवाद)- (म्हारी वात), पृ ३

का 'अन्योक्ति शतक' नाम से श्री मनोहरजी शर्मा ने भावानुवाद किया है। यह अनुवाद पं० श्रीलालजी मिश्र द्वारा सम्पादित 'साधना' (डूडलोद) के द्वितीय अंक में प्रकाशित हुआ है। इसमें भाषा बिल्कुल सरल और सस्कृत के मूल भावो की पूर्ण रक्षा की गई है। यह अनुवाद अनीत न होकर मौलिक काव्य-सा रस प्रवाहित करने में समर्थ हुआ है। यथा—

'लाय पडै, अर लूयां चालै, झळ निसरै ग्रीसम को भान।
धरती को सारो रस सूक्यो, मुरझो माळी भूल्यो ग्यान।'
यो मरुदेस विकट चम्पक नै, कुण देवै पाणी को दान।
पण आयो बरसाऊ बादळ, भली करी, भेज्यो भगवान।। २६ ।।

'विरछ बेलड़ी राख हो बळ दावानळ माय।
बादळ फळ पीयो भलो, जळ डूंगर दाता बरसाय ।। ३४ ।।

मरुधर की ग्रीष्म का कितना स्वाभाविक वर्णन है। बादल के यथार्थ दान का वर्णन भी उपर्युक्त छन्द में किया गया है। अन्य उदाहरण भी देखिए—

'नहीं आज बो सिंघ जगत मे, सुनी पड़ी गुफा गम्भीर।
मोती स्लै बारणै, बोनै हाथ गादड़ा बांका बीर ।। ३० ।।
तंतु खाया, जळ पियो, रम्यो पोयण्या माय।
करचो हंस उपकार के, सरवर रो सरसाय' ।। ४५ ।।

प्रसाद गुण से युक्त भाषा की सरसता तथा प्रभावोत्पादकता निम्नलिखित छन्दों मे द्रष्टव्य है—

'आंख मींच तूं मोद मे, के सोवै गजराज।
बैर बांध कर सिंघ सूं, कदे सरै नां काज ।। ६२ ।।
'सहजां तो निसरै नहीं, सापुरुषां मुख बात।
निसरयां पाछो ना फिरै, ज्यूं हाथी रा दान' ।। ६३ ।।

अनुप्रास अलकार का निर्वाह भी कई छन्दो मे दृष्टिगत होता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

'मूढ सजायो मोद में, बांदर कै गळ हार।
चाट सूंघ अर तोड़ कर, चढगो ऊंची डाळ' ।। ६४ ।।

३ राजस्थानी गीता - सार

डा० मनोहरजी शर्मा द्वारा गीता के चुने हुए श्लोको का राजस्थानी मे अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। इन छन्दो मे ही सम्पूर्ण गीता का सार आ जाय, यह ध्यान

रखा गया है। अनुवादक इसमे सफल हुआ है। कई वर्षों पहले 'श्री कृष्ण गीता' नाम से डा० शर्माजी का यह अनुवाद 'जिणवाणी' (कलकत्ता) मे प्रकाशित हुआ था।

मनोहरजी के इस अनुवाद मे भी प्रसाद गुण सर्वत्र विद्यमान है। गीता के गूढ तत्वो को अति सरस एव सरल ढग से पद्यबद्ध करने में आप सिद्धहस्त हैं। यथा —

"धर्म क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सजय ॥'[23]

अनुवाद

'धरमधाम कुरुखेत मे, मेरा सुत रणधीर।
जुद्धपरायण के करयो, पाण्डु-सुत बळबीर ॥'[24]

अर्जुन उवाच— 'गांडीवं संस्रते हस्ता- त्वचैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥'[25]

अनुवाद— अर्जुन वचन- 'मुख सूकै, रण नां रुचै, रथ फेरो झट, वीर।
अंग अंग ढीलो हुयो, कांपै सकल सरीर ॥'[26]

तुलनीय— 'चमड़ी म्हारी जळ रही गाडिव तिसळै हाथ।
ऊभण री सगति गई, भोड भुंवाळो खाय ॥'[27]

अन्तिम श्लोक का अनुवाद देखने योग्य है—

'जित धनुधारी पार्थ जित, योगेश्वर यदुराज।
शोभा, विजय, विभूति तित, थिर कीरत रो साज ॥'

इसमे तत्सम शब्दो का प्रयोग विशेष रूप से हुआ है।

---

२३ श्रीमद्‌भगवद्‌गीता— अध्याय १-१

२४ राजस्थानी गीता सार, पृ० १

तुलनीय— 'धरमखेत कुरुखेत मे भेळा हुआ जुधकाल।
कौरव पाण्डव करयो किम, सजय। कह सहु साज ॥
(सतसई गीता तणी)

युग पक्ष, अक २, गीता का राजस्थानी पद्यानुवाद- डा ब्रजनारायणजी पुरोहित

२५ श्रीमद्‌भगवद्‌गीता, अध्याय १

२६ राजस्थानी गीता सार, पृ १

२७ सतसई गीता तणी- डा. ब्रजनारायणजी पुरोहित, युग पक्ष अंक-२

४ वीतराग री वाणी

भगवान् महावीर ने अपना सदेश जन साधारण तक पहुचाने के लिए उस समय की लोक-भाषा (अर्द्ध मागधी) का प्रयोग किया। इसी भावना को दृष्टिगत रखते हुए डा मनोहरजी शर्मा ने उनकी दिव्य वाणी का राजस्थानी रूपान्तर प्रस्तुत किया है, जिससे कि वह इस प्रदेश मे जन-जन तक पहुच सके।

प्रस्तुत पुस्तक मे 'राजस्थानी महावीर वाणी' के साथ ही 'राजस्थानी बुद्ध वाणी' भी सम्मिलित कर ली गई है, जिसमे 'धम्मपद' की चुनी हुई गाथाओ का राजस्थानी भाषा मे भावानुवाद है। इसकी भाषा सरल है। अनुवादक ने 'प्राकृत' व 'पालि' गाथाओं को छोडकर उचित शीर्षको के साथ अनुवाद किया है। 'महावीर वाणी' के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

अहिंसा

'अग अठारा धरम रा, प्रथम अहिंसा जाण।
भूत-दया, सजम सदा, सरब सुखा री खाण ।। १ ।।

अपरिग्रह

'धन धरती ससार सुख त्यागै बिरळो कोय।
पाप करम रो त्याग कर, निरमळ कोई होय ।।२।

आतमा

'लड तू आपो आप सू, और न बैरी कोय।
साध लई जो आतमा, सरब सुखी सो होय ।। ६ ।।'

पूज्य

'विनय रूप आचार हित, करे गुरू सतकार।
धरम रेख पाळै अडिग, पूज्य कहचो निरधार ।।१' पृ. १३ ।।

ब्राह्मण

'कोप लोभ भय हास सू, कदे न भूठा बोल।
सार पथ चालै अडिग, सदा विप्र रो कोल ।।' ५, पृ १४ ।।

क्षमा

'हाथ जोड अपराध री, खमण सघ सू आप।
छमू, छमा मागू सदा निरमळ मन निसपाप ।।'२ पृ १६ ।।

बुद्ध वाणी

'बुद्ध वाणी' के कुछ उपदेशात्मक पद्य द्रष्टव्य हैं—

यमक

'बैर न जावै बैर सू, नियम सनातन एक।
बैर मिटावण प्रेम रो, निस-दिन पाळो टेक ।।' २ ।।

चित

'मात पिता भाई बिमळ, करै भलाई मित्त।
सब सू' घणो भलावणो, गयो सुमारग चित्त ।।' ६ ।।

पुण्य 'फूल पोध री गध तो, या जगती ले रोक ।
सदाचार री गध पण, जा सरसै सुर लोक ।।' १० ।।

सुख 'राग बराबर आग ना, मळ ना बैर प्रमाण।
भोग बरावर रोग ना, सुख ना सीळ समान ।।' ४ ।। पृ. २५

नरक 'तन पर भगवा साज कर, सजम साध्यो नाय ।
सो नर जासी नरक में, पापी पाप समाय ।।' १ ।। पृ. २८

तृष्णा 'लोह लावडी सूत रा, बध घणा मजबूत।
तिसना रा बधन बुरा, धन दारा अर पूत ।।' २६।७ ।।

५ राजस्थानी रवीन्द्र–वाणी

डा० मनोहरजी शर्मा ने विश्व-कवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की चुनी हुई १५ कविताओं का सग्रह 'राजस्थानी रवीन्द्र-वाणी' नाम से स्वाभाविक और सरल राजस्थानी मे अनूदित किया है। यथा—

दो पछी

'पांख फडफडा दोनू गावै, ओ प्यारा, तू नेडो आव ।
एक डरै पिंजरै सू दूजो, पाख-थका अणपखो - भाव ।।[28]

वासवदत्ता

'दया-धाम, आप कुण मुनिवर, पूछी बात, दियो जद उत्तर ।
अब आयो वो मोको सुन्दर, मैं आयो, वासवदत्ता ।।[29]

सोने की न्याव

'अरै एकलो ऊभो रहग्यो
मैं सूनो नदी कै तीर ।
सोनै की या न्याव ले बगी,
सारो मचम रहचो म सीर ।।[30]

६ उमर खैयाम री रुबाइयां

'उमर खैयाम' का अनुवाद डा. मनोहरजी शर्मा ने किया है।[31] आपकी

---

२८ राजस्थानी रवीन्द्र वाणी, दो पछी, छन्द ८, पृ ३

२९ वही, वासवदत्ता, छद १४, पृ ६-७

३० वही, सोने की न्याव, छद ३६, पृ १५

३१ 'उमर खैयाम' रा दो अनुवाद 'मरुभारती' (जयपुर) आपरै दूसरै वर्ष रै दूसरै अक म प्रकाशित करचा। एक अनुवाद मनोहर शर्मा रो है अर दूसरो श्री अमर देपावत (देशनोक) रो है ।
जागती जोत- समीक्षा अक भाग- ३ , (१९७५) पृ. ७७

भाषा शेखावाटी की बोली से प्रभावित है और प्रसाद गुण तो आपकी भाषा-शैली का एक गुण ही बन गया है । इसमे आपने ६० रुबाइयों का अनुवाद किया है । छन्द रुबाई है, जिसमे प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ चरणों की तुकें मिलाती हैं । अनुवाद में फारसी नामों का भी भारतीयकरण हुआ है । राजस्थानी मुहावरों का प्रयोग भी सुन्दर है ।

'सूनै बन मे विरछ तळै, जे रोटी रो टुकडो हो एक ।
मादक रस रो घडो भरयो हो, और काव्य री चर्चा नेक ।।
सनमुख बैठी रुपमयी तूं, गाती हो ऊंचो रस राग ।
तो मैं पाऊं दूर बीड मे, नन्दन-बन रै सुख री टेक ।।'[32]

इसी क्रम मे एक ऐसा छन्द भी द्रष्टव्य है जिसमे फारसी नामो का भारतीयकरण बडी सुन्दरता से हुआ है—

'रगमयी उज्जैण विचाळै, या ऊंचे चित्तोड घडै ।
भाग लिख्या सो भोग भला, जो खारा मीठा आय पडै ।
बूंद बूंद कर घडो भरै यो, सारो रस बीत्या जावै ।
एक एक कर पीळा पड पड, जिंदगाणी रा पान झडै ।।'[33]

इसी क्रम मे एक छन्द और भी द्रष्टव्य है—

'भूल्यो जग अरजन दुरजोधन, सारा सू अब तू मुख मोड ।
बीते दिन री बात पुराणी, भीमसेन नै भी दे छोड ।।
दानीमानी वीर करण नै, लोग पुकारे सुवरण हेत ।
आमीरस प्यावै यो सायर, आ तू अन्तर-नातो जोड ।'[34]

निष्कर्ष

एक भाषा की साहित्यिक सम्पत्ति को दूसरी भाषा मे रूपान्तरित करके सर्व-सुलभ करना एक महत्वपूर्ण कार्य है । इससे ज्ञान राशि का प्रचार - प्रसार होने मे सुविधा होती है । इसके साथ ही रस व आनन्द का भी विस्तार होता है । यही कारण है कि एक देश के विद्वान एक भाषा मे अनुवाद-कार्य सम्पन्न करते रहे है । स्पष्ट ही मनोहरजी का अनुवाद कार्य भी इसी प्रक्रिया का एक अंग है ।

आपने ससार-प्रसिद्ध दार्शनिक ग्रथ गीता (सस्कृत), धम्मपद (पालि) और महावीर वाणी (प्राकृत) का सार-सन्देश राजस्थानी भाषा मे प्रस्तुत किया है ।

३२ उमर खैयाम री रुबाइयां, २८
३३ वरदा—'उमर खैयाम के राजस्थानी अनुवादक' (प. श्रीलालजी मिश्र) पृ. ८७
३४ वरदा—'उमर खैयाम के राजस्थानी अनुवादक'- प श्रीलालजी मिश्र, पृ ८८

निश्चय ही यह कार्य पांडित्यपूर्ण होने के साथ ही ज्ञानवर्द्धक और चरित्र निर्माण-कारी भी है। पंडितराज जगन्नाथ के 'भामिनी विलास' के 'नीति शतक' का राजस्थानी रूपान्तर 'अन्योक्ति शतक' के नाम से किया गया है। इसी प्रकार महाकवि कालिदास के शृंगार रसात्मक काव्य 'मेघदूत' का राजस्थानी अनुवाद करके रसधारा प्रवाहित करने का महनीय कार्य किया गया है।

आधुनिक युग के परम प्रशस्त विश्व कवि- रवीन्द्रनाथ की चुनी हुई कविताओं का रूपान्तर उनकी जन्म-शताब्दी के अवसर पर किया गया था। 'उमर खैयाम की रुबाइयां' (फारसी) अंग्रेज कवि फिट्जेराल्ड की लेखनी से अंग्रेजी में रूपान्तरित होकर संसार की लगभग सभी भाषाओं में सुलभ हो गई। आधुनिक भारतीय भाषाओं में भी इसके अनुवाद हुए हैं हिन्दी में तो यह कार्य अनेक विद्वान कवियों ने किया है, जिसमें राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का नाम भी सहज ही स्मरण हो आता है। इसी क्रम में डा० मनोहरजी शर्मा ने इस विश्व-विख्यात कृति का राजस्थानी रूपान्तर अपने ढंग से, राजस्थानी वातावरण में प्रस्तुत कर दिया है।

इस समस्त अनुवाद-कार्य की यह एक विशेषता है कि आपने सर्वत्र भावानुवाद किया है और मूल ग्रन्थ अथवा कवि के भावों को सुरक्षित रखने की ओर पूरा ध्यान रखा है। इसके साथ यह भी उल्लेखनीय है कि इस अनुवाद-कार्य की भाषा-शैली अत्यन्त सरल तथा सुबोध है। फलतः ये रूपान्तर अनुवाद जैसे नहीं, परन्तु मौलिक प्रतीत होते हैं।

अध्याय ५

गद्य-साहित्य : विश्लेपण एवं मूल्यांकन

राजस्थानी-कथा-सर्जन की परम्परा

राजस्थानी का पुराना कथा - साहित्य पर्याप्त समृद्ध रहा है। सतरहवीं शताब्दी से ही राजस्थानी मे विभिन्न विषयों को लेकर वार्ताएं लिखी जाने लगी, जिन्हें 'बात' की संज्ञा से अभिहित किया गया है। ये 'बातें' गद्य, पद्य तथा मिश्रित रूप मे लिखित एवं मौखिक दोनो ही प्रकार से प्रभूत मात्रा मे उपलब्ध है किन्तु जिसे हम आज 'कहानी' नाम से जानते हैं, उसका इन बातो से कोई सीधा सम्बन्ध नही है। आज कहानी के नाम से जो कुछ लिखा जा रहा है, शिल्प विधि की दृष्टि मे उसका सीधा संबध अंग्रेजी 'शार्ट-स्टोरी' से है, पुरानी राजस्थानी 'बात' से नही।[1]

राजस्थानी मे उपन्यास और नाटक की भांति पाश्चात्य शैली की कहानी लिखने का प्रथम प्रयास भी राजस्थानी के 'भारतेन्दु' श्रीयुत् शिवचन्द्रजी भरतिया ने ही किया। कलकत्ते से प्रकाशित होने वाले हिन्दी मासिक 'वैश्योपकारक' मे आपकी प्रथम कहानी 'विश्रान्त प्रवासी'[2] नाम से वि० स० १६६१ मे प्रकाशित हुई। इसके पश्चात् श्री गुलाबचन्द नागोरी, श्री शिव नारायण तोशनीवाल, पंडित छोटेराम शुक्ल प्रभृति लेखको की सामाजिक जीवन को आधार बनाकर लिखी गई कहानियां मिलती हैं, जिनमे सुधार एवं उपदेश का स्वर सर्वोपरि रहा है।[3]

इस प्रकार आधुनिक राजस्थानी कहानी के प्रारम्भिक चरण मे सामाजिक धरातल पर लिखी गई सुधारवादी कहानियो का प्राधान्य रहा। लगभग बीस वर्ष के अन्तराल से ही मुरलीधरजी व्यास, श्री श्रीचन्द्ररायजी प्रभृति लेखकों के प्रयास से आधुनिक राजस्थानी म पुनः कहानी-लेखन प्रारंभ हुआ।[4]

---

१ आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा-स्रोत और साहित्य- डा. किरण नाहटा पृ ५६
२ वैश्योपकारक, वर्ष-१, अंक-३ पृ. ५७
३ वैश्योपकारक वर्ष-१, अंक-३, पृ. ६०
४ दीनदयाल ओझा ने राजस्थानी कथा-यात्रा मे ये विचार प्रकट किये है।

आधुनिक राजस्थानी सामाजिक कहानियों के मुख्य उपजीव्य रहे हैं— पूंजीपति एवं सामन्ती वर्ग के शोषण के शिकार बने दीन-हीन कृषक-मजदूर वर्ग के प्राणी, सामाजिक कुरीतियों और रूढ-परम्पराओं के चक्र में पिसते हुए निम्न मध्यम-वर्गीय-लोग आए-वर्ष अनचाहे मेहमान की तरह आ टपकने वाले अकाल से सन्त्रस्त, अभावों से जूझते हुए मानवी कंकालों के समूह।

इन विषयों की राजस्थानी कहानियों के संबंध में एक संकेत अवश्य करना चाहूंगा, वह यह कि विषय का द्वितीय पक्ष, यहां के कहानीकारों की नजर से ओझल नहीं रहा है। जहां पूंजीपति वर्ग के शोषण की बात कही गई है, वहां डाक्टर मनोहरजी शर्मा की अनेक कहानियों में इसके विपरीत उनकी सहृदयता एवं सदाशयता का भी अच्छा अंकन हुआ है और उधर सामन्ती क्रूरताओं के समानान्तर ही उस वर्ग की शरणागत-वत्सलता, प्रण-पालन और शूर-वीरता का प्रभावी चित्रांकन भी कई कहानियों में बड़ी तन्मयता से हुआ है।[5] इस दृष्टि से उल्लेखनीय कहानियां बन पड़ी है— डा० शर्मा की 'चिलको'[6] और 'कन्यादान'[7]

डा. मनोहर शर्मा की कथा-कृतियों का रचनात्मक वैशिष्ट्य

डा० मनोहरजी शर्मा की अधिकांश कहानियों का ताना-बाना भी घटनाओं की रेल-पेल के बीच ही बुना गया है। उनकी कहानियों में भी कहानीकार का ध्यान चरित्र-चित्रण, वातावरण-अंकन की अपेक्षा स्थूल घटनाओं को प्रस्तुत करने में ही विशेष रहा है।

अंचल विशेष की स्थानीय विशेषताओं को अपने सम्पूर्ण परिवेश में प्रस्तुत करने की ललक कथाकारों में बढ़ी है। डा मनोहर शर्मा की 'खाजी'[8] नामक कहानी में आंचलिकता का स्वर काफी मुखर रहा है।

डा० मनोहर शर्मा ने कहानियां प्रचुर मात्रा में लिखी हैं। आपकी कथा-कृतियां हैं— 'कन्यादान' 'सोनल भींग' बाल-कथाओं का प्रणयन भी आपने किया है। आपकी 'वालवाडी' पुरस्कृत कृति है।

---

५ आधुनिक राजस्थानी साहित्य- डा० किरण नाहटा, पृ ६६

६ कन्यादान- डा० मनोहर शर्मा- प्र० का० १९७१ पृ २०

७ वही, पृ. १

८ कन्यादान, पृ. ११

कन्यादान

'कन्यादान' मे लेखक की तेरह राजस्थानी कहानियो का सग्रह है। प्रारम्भ में 'दो शब्द' मे लेखक ने प्रकट किया है कि इस सग्रह की अधिकतर कहानियो मे विवाह-समस्या पर प्रकाश डाला गया है, इसलिए इसका नाम 'कन्यादान' रखा गया है। इसमे राजस्थान के शेखावाटी - प्रदेश का जीवन चित्रित है, इसलिए इनको राजस्थान की आचलिक कहानिया भी कहा जा सकता है । इसके साथ ही यह भी कहा गया है कि इस सग्रह की सारी कहानिया सच्ची घटनाओ पर आधारित हैं, जिसमे साधारण परिवर्तन करके कहानी की रचना की गई है।

लेखक के वक्तव्य के उपर्युक्त तीनो बिन्दु यथार्थ हैं। वर्तमान युग मे बेटी का विवाह एक विकट सामाजिक समस्या है। इस विषय मे अनेक प्रकार के विचार प्रकट किये जाते हैं, कई प्रकार के प्रस्ताव पास किये जाते हैं परन्तु यह सामाजिक रोग घट नही रहा है, अपितु अधिकाधिक बढ रहा है। किसी भी प्रबुद्ध लेखक का इस प्रकार की पारिवारिक समस्या पर ध्यान जाना सर्वथा स्वाभाविक है।

डा० मनोहरजी शर्मा ने सग्रह की अनेक कहानियो मे इस समस्या के जीवित चित्र उपस्थित करके समाज को सावधान होने के लिए प्रेरणा दी है।

आधुनिक राजस्थानी साहित्य मे सबसे अधिक लेखन कार्य कविता के बाद कहानी का ही हो रहा है परन्तु ऐसी कहानियों में बहुत ही कम कहानिया पूर्ण रूप से 'राजस्थानी' कही जा सकती है । 'कन्यादान' की कहानिया इस दृष्टि से 'सर्वतोभावेन' राजस्थानी कहानिया हैं। इनमे राजस्थान का सरल व सरस वातावरण तो है ही परन्तु इसके साथ ही राजस्थानी जीवन का भी सच्चा चित्रण है। इन कहानियों को पढते समय ऐसा प्रतीत होता है मानो पाठक राजस्थान के शेखावाटी अंचल मे उपस्थित हो गया है।

राजस्थान के झुंझनूं और सीकर- ये दो जिले शेखावाटी के नाम से विख्यात हैं। यहां शेखावत राजपूतो का राज्य था, इसलिए इस भू-भाग का ऐसा नाम पडा। परन्तु इस क्षेत्र से सटे हुए 'चुरू' जिले का जीवन भी एकदम ऐसा ही है। इसलिए सुविधा की दृष्टि से उसे भी शेखावाटी अंचल का एक अंग मान लेना अनुचित नही है। चूरू जिले का जन-जीवन और वहां की बोली शेखावाटी से भिन्न नहीं है। यह भू-भाग राजस्थान मे अपनी कुछ विशेषताएं रखता है । यहा के लोगों ने भारत के सुदूर प्रदेशों मे जाकर अनेक प्रकार के उद्योग-धंधे स्थापित किये हैं और इस प्रकार अर्जित संपत्ति से शेखावाटी भू-भाग को बडा लाभ मिला है। फलस्वरूप यहां के जीवन मे अपनी अनेक विशेषताएं प्रकट हुई हैं।

'कन्यादान' कहानी-संग्रह में शेखावाटी में रहने वाले और व्यापार-व्यवसाय के लिए यहां से कलकत्ता, बम्बई आदि शहरों में जाने वाले सभी प्रकार के लोगों का जीवन चित्रित किया गया है। शेखावाटी से बाहर रहने वाले यहां के लोग अपनी जन्म भूमि से जुड़े हुए रहते हैं। वे कमाने के लिए बाहर जाते हैं और समय-समय पर, विशेष अवसरों पर, अपनी जन्म-स्थली में भी आते रहते हैं। इस प्रकार 'कन्यादान' की कहानियां शेखावाटी अंचल से सबंधित हैं परन्तु इसमें चित्रित पात्रों का क्षेत्र यहीं तक सीमित न रहकर फैला हुआ है। आगे इस संग्रह की विशिष्ट कहानियों पर प्रकाश डाला जाता है—

'कन्यादान'

'कन्यादान' की पहली कहानी का शीर्षक 'कन्यादान' है। इसमें कलकत्ते में व्यापार करने वाले एक बड़े सेठ की जन्मभूमि फतहपुर (शेखावाटी) में अवस्थित एक संस्कृत पाठशाला में पढ़ानेवाले पंडितजी की पुत्री के विवाह का प्रसंग है। पंडितजी अपनी लड़की की सगाई केलिए एक लड़के को पसंद करते हैं। लड़के का पिता बम्बई में बड़े सेठों का रसोइया है। वह लड़की देखने के लिए पंडितजी के घर पर आता है। उस समय उसके साथ आने वाले लोग ऐसा अनुभव करते हैं कि पंडितजी थोड़ी कमाई होने के कारण अपनी बेटी के विवाह में समुचित दहेज नहीं दे पायेंगे। फलतः बेटे का बाप एक बहाना ढूंढकर 'सगाई का दस्तूर' नहीं करता है और चला जाता है। इससे पंडितजी को बड़ा दुःख होता है। जब इस घटना का समाचार उनकी पाठशाला के संचालक सेठ जी के पास कलकत्ते पहुंचता है तो वे इसे पंडित जी का नहीं, अपनी 'हवेली' का अपमान समझते हैं। इस पर सेठानी यह निश्चय करती है कि पंडित जी की बेटी का विवाह उनके गांव में, उनकी हवेली में और उनकी अपनी बेटी के रूप में किया जाएगा। फलस्वरूप ऐसा ही होता है। सेठजी के मुनीम के साले के साथ उसका विवाह किया जाता है। वह एक सुयोग्य लड़का है। पंडित जी की बेटी का विवाह बहुत ठाठ-बाट से होता है। इस सम्पूर्ण विवाह को पंडित जी चुपचाप देखते हैं और अंत में वे प्रकट करते हैं कि उनकी बेटी के विवाह में 'कन्यादान' का फल सेठ-सेठानी को मिला और वे स्वयं इस पुण्य से वंचित रह गए। उसके ये शब्द कहानी का समापन करते हैं- 'भाया, यो ब्याव बिरामण री बेटी रो कोनी। यो तो सेठां री बाई रो ब्याव है। ई कन्यादान रो म्हानै कोनी मिलै, सेठ-सेठाणी नै मिलसी।'[१]

प्रस्तुत कहानी में अनेक सजीव पात्र हैं। एक प्रकार से इसमें [illegible] आदर्श का समन्वय है। एक ओर पंडितजी की सरलता और लड़के वालों [illegible] लिप्सा' प्रकट की गई है तो दूसरी ओर सेठ-सेठानी की उदारता का चित्रण हुआ है।

---

१ कन्यादान, पृ० १२

खांजो

संग्रह की दूसरी कहानी का शीर्षक 'खांजो' है। राजस्थान मे अनेक मुसलमान हैं, जो धर्म से मुसलमान होने पर भी जीवन-व्यवहार की दृष्टि से राजपूत ही हैं। सामान्यतया इनको 'कायमखानी' (क्यामखानी) कहा जाता है। ये लोग प्रायः खेती करते हैं, पशु रखते हैं अथवा पुलिस व सेना मे नोकरी करते हैं। बडे सेठों की हवेलियों पर चौकीदारी का काम भी ये लोग करते हैं। इनको सम्मान मे 'खाजी' (खा जी) कहा जाता है।

'खांजो' कहानी में इसी प्रकार के एक खांजी का चित्रण है, जो अपने गाव मे सेठो की हवेली पर 'पहरे-चौकी' का काम करते हैं। उनके घर में खेती का धधा भी है और उनका बडा लडका खेती के अतिरिक्त समय मे अपना ऊंट किराये पर चलाता है। एक बार ऊंट भाडे पर उनका लडका दूसरे गाव ले जाता है और रात के समय वहा वह ऊट चुरा लिया जाता है। ऊंट को वापिस लाने के लिए काफी दौड-धूप की जाती है परन्तु कोई फल नहीं मिलता है। खांजी इस घटना को बडा अपमान मानते हैं। लोग कह सकते हैं कि जिनका स्वय का ही ऊट चोरी मे चला गया, वे दूसरों के यहा कैसी रखवाली करेंगे ? फल यह होता है कि खाजी एक अन्य ऊंट मगवाकर, अकेले ही अपने ऊंट की खोज मे निकल पडते हैं और बहुत दूर के इलाके मे वे एक 'मीणे' के घर पहुंचते हैं। यह मीणा उनका पुराना स्नेही है। खाजी को आश्चर्य होता है कि उनका चोरी में गया हुआ ऊट उसी के घर मे मौजूद है। वे उसे सारी कहानी सुनाते हैं। इस पर उसका मित्र मीणा बोरे मे मतीरे भर कर ऊंट सहित बडे प्रेम से खाजो को विदा करता है। वे अपने ऊट को लेकर सेठ जी की हवेली पर आते हैं और यहा एक-एक मतीरा सबको भेंट करते हैं। वे किसी के सामने यह प्रकट नहीं करते कि उनका ऊंट किस प्रकार चोरी मे गया और किस प्रकार उन्हें वापिस मिला। यह सारा भेद छिपा ही रहता है।

'खाजी' कहानी मे लेखक ने शेखावाटी के क्यामखानी (मुसलमान राजपूतो) के जीवन का स्वाभाविक चित्रण प्रस्तुत किया है। इनके बारे में सम्भवतः यह पहली ही राजस्थानी कहानी है, जिसमे पूरी सहानुभूति के साथ एक क्यामखानी-परिवार की जीवन-लीला दिखाई गई है। साथ ही यह भी प्रकट किया गया है कि शेखावाटी मे हिन्दू और मुसलमान किस प्रकार एक दूसरे से घुले-मिले रहते हैं। ऐसी कहानियों को पढ़कर प्रतीत होता है मानो हमारे गांव मे साम्प्रदायिकता का नाम तक नहीं है, अपितु उसके स्थान पर आपसी मेलजोल और भाई-चारा स्थापित है। संग्रह की एक अन्य कहानी 'फतियै रो ब्याव' मे भी हिन्दू-मुस्लिम प्रेम का आदर्श चित्र प्रकट हुआ है।

चिलको

संग्रह की तीसरी कहानी का शीर्षक 'चिलको' है। राजस्थानी मे 'चमक' को चिलको कहते हैं, परन्तु यहा इसका अभिप्राय झूठी चमक अर्थात् ऊपरी आडम्बर से है।

प्रस्तुत कहानी का कथानक इस प्रकार है— शेखावाटी का एक ब्राह्मण-परिवार कलकत्ते मे रहता है। वह पूजा-पाठ का धंधा करता है और अपने यजमानो से भी उसे सहारा मिलता रहता है। घराना प्रतिष्ठित है परन्तु इस परिवार का लडका पढा-लिखा न होने के कारण अविवाहित है। लडके का पिता अपने यजमानो के सबंधियो से प्रार्थना करता है कि किसी तरह उसके लडके का सम्बन्ध कराया जाय। तदनुसार ब्राह्मण की सलाह से सेठ अपनी गद्दी (आफिस) मे झूठ-मूठ मुनीम के रूप मे बिठाते हैं और ऐसी स्थिति मे एक लडकी वाला ब्राह्मण उसे सगाई के लिए देखने आता है। वह चिलके (धोखे) मे आकर अपनी बेटी का सम्बन्ध उससे कर देता है। विवाह के बाद जब लडकी वाले को असली स्थिति का पता चलता है तो वह सेठ जी को उपालभ देने के लिए आता है। इस पर सेठ उत्तर देते हैं कि भले ही इस ब्राह्मण का दामाद सेठ जी की गद्दी का मुनीम न रहे परन्तु जब तक सेठ जीवित रहेंगे तब तक उसे मुनीम का वेतन जरूर मिलता रहेगा। लडकी के पिता से सेठ कहता है—"थारी बेटी रो जलम डूबण कोनी देवा। जितरै म्हे जोस्या जितरै तो थांरो जुंवाई म्हारी गद्दी रो रोकडियो ई रहसी। आगे भगवान जाणै। म्हारै एक री जगा दो रोकडिया सरी।'[10]

इस कहानी की घटना का स्थान शेखावाटी न होकर कलकत्ता है, परन्तु स्पष्ट ही इसमे शेखावाटी का स्वाभाविक जीवन है। यह कहानी भी यथार्थ और आदर्श का समन्वित रूप प्रकट करती है। अशिक्षित लडके का सम्बन्ध करने के लिए लडकी वाले को धोखा दिया जाता है, परन्तु कहानी का सेठ आदर्श उदारता प्रकट करता है। इस कहानी मे हास्य का पुट भी है।

दो शास्त्री

'दो शास्त्री' कहानी मे रामगढ (शेखावाटी) की एक संस्कृत पाठशाला मे पढने वाले दो देहात ब्राह्मण बालकों का जीवन चित्रित है। एक लडका बडा अध्ययनशील है, जो समयानुसार शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण कर लेता है, दूसरा उसका मित्र पहली परीक्षा भी उत्तीर्ण नही कर पाता परन्तु भोजन बनाने की कला मे पारगत हो जाता है। कालान्तर मे पहला विद्वान आजीविका के लिए कलकत्ते जाता

१० कन्यादान (चिलको), पृ. २७

है परन्तु वह कोई व्यवस्था नहीं कर पाता। सयोग से वहा उसका साथी मिलता है जो एक सेठ के यहा रसोइये का काम करता है और सब प्रकार से सुखी है। रसोइया अपने विद्वान मित्र की करुण कथा सुनकर उसे अपने सेठ की 'ठाकुर बाडी' म पुजारी के रूप म प्रतिष्ठित करवाता है। इस प्रकार शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा 'हाथ की कला' श्रेष्ठ सिद्ध होती है।

नानजी (रसोइया)— 'शास्त्रीजी म्हे पढ्या कोनी नही तो थारी तरियां म्हें भी कठै पडत बण'र बैठता। अब रसोई तपा हा। शास्त्री जी ऊत्तर दियो— 'थारली रसोई स ई मैं पडत बण्यो हू, नही ता म्हारलो विद्या घरी ई रहती।'[११]

पान बाई

पान बाई नामक कहानी म एक लडकी का बड चाव से विवाह होता है और कालान्तर मे वह एक पुत्र को जन्म देती है। सयोगवश वह अपने शिशु पुत्र को छोडकर परलोक चली जाती है। उसकी जगह घर मे दूसरी बहू आ जाती है और सारा वातावरण एकदम ही बदल जाता है।

यह कहानी बडी करुणापूर्ण होने के साथ ही समाज का वास्तविक चित्र प्रकट करती है। गृहस्थ-जीवन मे नारी की स्थिति को समुचित महत्व न मिलना दुर्भाग्य का विषय है।

गरुजी

'गरुजी' कहानी म एक गुरुजी अपने एक शिष्य की उन्नति मे बडी रुचि लेते हैं और उसके परिवार को सकट म निकाल कर उन्नति के रास्ते पर अग्रसर कर देते हैं। जब उनका शिष्य काफी सपति इकट्ठी कर लेता है तो वह अपने गुरुजी का बडा सम्मान करता है।

इस कहानी मे भी शेखावाटी के जीवन का एक विशेष पक्ष चित्रित है, जिसके अनुसार यजमान अपने ब्राह्मण (गुरु) की मदद करता है तो ब्राह्मण भी अपने यजमान को आगे बढाने में केवल आशीर्वाद ही नहीं देता, अपितु सहारा भी देता है। यदि यजमान का वैभव बढ़ता है तो उसके गुरु (एक ब्राह्मण) की प्रतिष्ठा भी स्वत ही ऊची हो जाती है। इस प्रकार यजमान और गुरु का सम्बन्ध पीढ़ी दर पीढ़ी चलता है।

---

११ कन्यादान (दो शास्त्री) पृ ६३

चिगटेंहाळी बगीची

सूरजगढ गाव मे प्रवेश करते ही एक कुआ और एक बगीची दृष्टिगत होते हैं। बगीची का नाम 'चिगटेंहाळी बगीची' है। इस नामकरण की पृष्ठभूमि का वर्णन करने के बहाने लेखक ने इसके निर्माता 'सनेहीराम सराफ' का जीवन-चरित्र प्रस्तुत किया है। सनेहीराम सराफ बहुत कजूस था और उसने एक दूकान खोल रखी थी। उसके कपडे मैले रहते थे। अत: वह 'चिगटें' नाम से विख्यात था। सत्तर वर्ष की आयु तक उसने कभी भी पुण्य-धर्म नही किया। उसने मन से कभी भगवान को भी याद नही किया। पत्नी की मृत्यु के बाद वह दुकान में ही रहने लगा। अपनी मौरूसी हवेली मे केवल एक 'साल' (कमरा) उसके हिस्से में आई हुई थी। उसके उसने ताला लगा रखा था।

'चिगटा' दो बाजरे की रोटी खाकर काम चलाता था परन्तु दिन मे तीन चार बार वह चिलम जरूर पीता था। शरद् ऋतु की एक रात्रि मे दूकान में पडा हुआ वह विचार-सागर मे गोते लगा रहा था। अपनी 'उगराही' का लेखा-जोखा उसके मानस मे ऊथल-पुथल मचा रहा था। यकायक उसकी दूकान में बाहर से चिलम का धूआ आया। मुफ्त की चिलम पीने के ध्येय से वह बाहर गया। उसने 'धूणी' पर जाकर दो-तीन बार चिलम पी। तदुपरान्त रामदास बाबा ने एक कहानी कही, जिसे मरने के बाद सर्प बनना पडा। वह सर्प अपने धन के पास बिल मे बैठा रहता था। एक दिन लोगो ने उस सर्प को मारकर बिल को खोदा, जिसम मोहरो से भरा हुआ एक 'चरू' (पात्र) था। मोहरें सरकार मे जमा करा दी गई। यह बात सुनते ही चिगटे की आत्मा काप उठी। वह सीधा अपनी दूकान मे गया। उच्चाटित मन से वह रात-भर सोचता रहा। उसने अपने मन की आखो से देखा मानो वह मर गया है और साप बन गया है। लोग उसके बिल को खोद रहे हैं और उसे लाठियो से मार रहे हैं। फिर उसका रुपयो से भरा हुआ 'टोकणा' (पात्र) गाडे मे लादकर राज कोष मे जा रहा है। वह सुबह उठा। निवृत्त होकर वह स्नान करने लगा। लोगो को आश्चर्य हुआ। उसने नये कपडे पहने और गाव के ठाकुर के यहा पहुचा। ठाकुर को आश्चर्य हुआ। बनिये ने एक रुपया 'नजर' (भेंट) किया। वहा उसने गाव मे एक कुआ और एक 'बगीची' बनाने का अपना संकल्प प्रकट किया। उसने कहा, 'महाराज, आपरी दया सू मेरे कनै नगदी दस हजार रिपिया टाया पडया है। ई रिपिया सूं मैं एक कूवो अर बगीची करावणा चावू हू।[12]

'चिगटे' के इस संकल्प को सुनते ही ठाकुर ने उसे छाती से लगा लिया

१२ कन्यादान- चिगटे हाळी बगीची, पृ. ७७

श्रीर कह्यो— 'सेठ, तू माया नैं सागै ले जावण रो पक्को इन्तजाम कर लियो। तू खरो बाणियो है।'[13]

वातावरण चित्रण से प्रस्तुत कहानी का आरम्भ हुआ है जो आकर्षक है। यथा— 'सूरजगढ जावां जद गाव म वडता ई पहली एक कूवो अर बगीची आवै। बगीची मे बरी, बाल्टी अर लोटा रो पूरो प्रबन्ध है अर एक आदमी नै नावर भी राख मेल्यो है। यो आदमी आए-गए नैं पाणी प्यावै अर बारा हाथ धुवावै। जे कोई न्हावणो चावै तो वरी - बाल्टी लेवो अर आप पाणी काढल्यो। कई लोग नेम सू सुबह-सञ्या बगीची आवै अर निमट-न्हायर आप रै घरा जावै। दोफारा लोग गाबा धोवै। इ बगीची मे एक छोटा सो मळो मड्यो ई रैवै।'[14]

कन्यादान : कथ्य

ऊपर कहा गया है कि इसमे शेखावाटी के जीवन का चित्रण किया गया है सभी जातियों और वर्गों के जीवन के विविध दृश्य इसमे देखते ही बनते हैं। पात्रो की भी बहुत-बडी सख्या हैं, जिनमे बच्चे, बुढ्ढे, जवान सभी प्रकार क पात्र है। उनमे कई भले हैं तो कई बुरे भी हैं।

कोई कह सकता है कि इसमे शेखावाटी के सेठो की महिमा दिखलाने की चेष्टा की गई है। निश्चय ही इन कहानियों म शेखावाटी के सेठो की महिमा है। परन्तु लेखक का उद्देश्य मूलत शेखावाटी के सेठो की महिमा चित्रित करना न होकर शेखावाटी के जीवन के सभी पक्ष पाठको के सामने रखना है। यही कारण है कि इन कहानियो मे यत्र-तत्र सेठो का वैभव भी प्रकट हुआ है परन्तु ध्यातव्य है कि जैसी घटनाओ का इस सग्रह म वर्णन किया गया है वे शेखावाटी के सेठो के लिए कोई नयी बात नही हैं।

'कन्यादान' सग्रह को पढकर कोई भी व्यक्ति शेखावाटी के जीवन की चित्रपटी सी देख सकता है। आजकल कहानिया म समाज को बदल देने के लिए जो प्रेरणा दी जाती है, वैसी प्रेरणा देना 'कन्यादान' के लेखक का उद्देश्य प्रतीत नही होता। वह तो जीवन का स्वाभाविक चित्र दिखलाना चाहता है।

शिल्प—भाषा शैली

लेखक की भाषा - शैली सर्वथा सरल एव सुबोध है। अत इन कहानियों को इतनी अधिक लोकप्रियता सहज ही प्राप्त हो गई। यथा—'सेठ बोल्यो-" पण

१३ कन्यादान— चिगर्ट हाळी बगीची, पृ. ७७

१४ वही, पृ. ७३

लड़को इसो होवणो चाइजे कै आपणी हेली पर ठुकरा आवै, अ
करै। कोई पढ्यो - गुण्यो चोखो टावर मिल ज्यावै तो आपणो म
करणै सूं राजी होवै। चम्पै री मा नै ही ब्याव रो भोत चाव है
'हीरो कोई कारीगर कोनी हो, मामूली काम जाणतो। कदे कि
खाट री वाई बदळ देवतो तो कदे चाकी रै हाथोमानी लगा देवतो
डांडो काठो कर देवतो कदे हळ ठीक कर देवतो। इसो सो ही काम
पैदा ही ।'[16]

'कन्यादान' की भाषा मे आंचलिक शब्दों का समुचित ।
यथा— 'तो के आंट है, थे एक फेरो देस रो कर ल्यो।'[17] 'दोनुंव
न्यारा हा पण वे एक ई कोटड़ी मे रहता घर भायला हा।'[18]
कठै सुण्यो ई कोनी।[19]

लोकोक्तियां एवं मुहावरे

लोकोक्तियां तथा मुहावरों के प्रयोग से भाषा मे सजीवता
दकता आ जाती है। 'कन्यादान' की कहानियों में लोकोक्तियों ৫
प्रयोग से भाषा की चमत्कारिकता बढ़ी है। यथा— 'सेठां
समंदर रो पाणी पीयोड़ो हो।[20] 'ऊन्दरै रा जाया तो बिल ई खो
ढाकण घर-हाला नै ही खावै।[22] बै बिल मांय मयोड़ै नै ही कोनं
उपाय सेती छोरे रा पीळा हाथ होवै, ई मे ही सार है।'[24]
बैठेगो।[25] 'मा न जायो, देसड़लो परायो।[26]

वातावरण

लेखक वातावरण का चित्रण करने में सिद्ध-हस्त है। इन कहानियों के घटना स्थल लेखक के देखे हुए प्रतीत होते हैं, अतः उनका चित्रण स्वाभाविक है। यथा-'सगळै ब्याव में जनेत री खूब खातरदारी होई पण जद बराती दायजो देख्यो तो आप चित्राम रा होयगा। सेठा री हेली रै चौक में बगीचो सो लागरयो हो, जठै सोने चादी रै विरछ वेला पर मोती-माणक रा फूल खिलरया हा। सेठ बैठक में बैठ्या हा अर मालजी मुनीम वा रै सागै विराजमान हा। दिखावो देख'र आना-जाता लोग एक निजर सेठाँ पर गेरै हा तो दूजी निजर मालजी पर। बैठक में सरावना री सौरभ रो डम्बर फूटै हो। सेठजी बात-बात पर हाथ जोडै हा अर कैवे हा कै सगळी नाथजी म्हाराज री माया है। सेठा रै नेडै सी पडत गणेसदत्त जी आप माळा हाथ मे लिया चुपचाप बैठ्या हा।[27]

कथोपकथन

'कन्यादान' के सवाद पात्रों के अनुकूल हैं। ये सवाद स्वाभाविक एव आकर्षक बन पड़े हैं। यथा- सेठ बोल्यो - 'क्यूं म्हाराज जी, काई बात होई ? थे धीरज राखो।'

पडतो ही बामण बोल्यो- 'काई धीरज राखू ? थे मन्नै रोकडियै रो साग दिखा'र चिलकै मे उतार लियो। नीं तो मैं किसो यो सम्बन्ध करू।[28]

जोसी जी बोल्या- 'थारो मतलब है, काम सीधो कोनीं पटै' क्यु मागतो होसी ?'

सादूखांजी गभीर होय'र उत्तर दियो- 'म्हाराज, सोधो काम तो अठै रा भाईडा कोनी पटणै देवै। नहीं तो फतियै नै बीनणी रो के घाटो हो ? जे आज मुकारब खांजी होवता तो भिचकी मारण री किण री हिम्मत ही ? पण अब तो काम क्यु लाग्या ही बणसी। आप जाणो ही हो, कबीलै हाळा रो सुभाव सगळै इसो ही मिलै है, दब्योडै नै दबाता ही जावै।[29]

निष्कर्ष

डा० मनोहर जी प्राय कहानियों मे पूंजीपति वर्ग की सहृदयता, उदारता एवं मानवता का चित्रण हुआ है। आपने सामन्त वर्ग एव पूंजीपति वर्ग के शोषण के शिकार बने दीन-हीन गरीबो का वर्णन नहीं किया। आपने सेठों की सहृदयता एव

---

२७ वही - कन्यादान, पृ० १२

२८ कन्यादान - चिलको, पृ० २७

२९ वही - फतिये रो ब्याव, पृ ८३

सदाशयता का अच्छा अंकन किया है। सामन्ती शूरताओं का चित्रण न करके उस वर्ग की शरणागत वत्सलता, प्रण-पालन का प्रभावी चित्रांकन किया है। मित्रता का आदर्श आपने 'साजी' व 'दो शास्त्री' कहानियों में सफलतापूर्वक वर्णित किया है। आपकी विचारधारा प्रायः आदर्शवादी रही है।

इस संग्रह के बाद लेखक की 'करड़ी आंच' और 'च्यानणं में अन्धेरा' कहानियां फुटकर रूप से पत्रिका (जागती जोत) में प्रकाशित हुई हैं, जिनमें युग की पीड़ा प्रकट है परन्तु उनमें भी जीवन-धारा शेखावाटी क्षेत्र की ही है।

सोनल-भींग (स्वर्णिम भृंग अर्थात् सुनहरा भंवरा) राजस्थान में टिड्डी के आकार का एक उड़ने वाला कीड़ा होता है। यह वर्षा की मौसम में (अर्थात् खेती के दिनों में) होता है। रंग के आधार पर इसके दो भेद हैं— एक सोनल भींग और दूसरा ढेढल भींग। प्रथम सोनल-भींग रंग की दृष्टि से बड़ी सुन्दर होती है परन्तु ढेढल-भींग मटमैले काले रंग की होती है। किसान-बालक जब अपने खेत में सोनल भींग देखते हैं तो उसे पकड़ने की चेष्टा करते है। यद्यपि 'भींग' शब्द संस्कृत 'भृंग' से ही बना है परन्तु भींग नामक कीड़े का भौंरे से कोई सम्बन्ध नहीं है। भौंरे से भींग बड़ी और आकार में कुछ लम्बी होती है। भींग का टिड्डी से भी कोई सम्बन्ध नहीं है, यद्यपि वह लम्बाई-चौड़ाई में उसके जितनी सी ही होती है।

'सोनल भींग' संग्रह की पहली कथा एक किसान-बालक और सोनल भींग के संबंध में है। अतः इस संग्रह का नाम 'सोनल भींग' ही रख दिया गया है। वैसे यह कीड़ा बड़ा ही सुन्दर व आकर्षक होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं। फिर भी अपने रूप-सौन्दर्य के कारण यह पकड़ा और धागे से बांधा जाता है। संसार अपने स्वार्थ को देखता है, पराई पीड़ा को नहीं।

सोनल-भींग : विश्लेषण एवं मूल्यांकन

'सोनल भींग' नाव री टीडी रै आकार रो एक उड़णो जिनावर हुवै राजस्थान में। वा बाजरै रै बूटै ऊपरां आय बैठी। बूटो बोल्यो— 'तूं उडिए मत मेरो रूप सुधरयो है।'

भींग बोलै— 'खेत रा रुखाळा मनै उडाय देसी।' बूटो फेरू तर्क करै, पण भींग, रुखाळा नैं स्वार्थी बता कर उड ज्यावै। बूटो बावळो ज्यूं ——— खड़्यो रै वै।'[३०]

---

३० सोनल भींग, पृ. १

'सोनल-भींग' में इसी भांति की ७० (सत्तर) संवाद - प्रमुख उद्बोधनमय लघु-कथाएं हैं। गद्य-विद्या की यह शैली हिन्दी और अंग्रेजी के लिए तो नवीन नहीं है परन्तु राजस्थानी भाषा के आधुनिक विकास में इसी भांति के सशक्त प्रयास बहुत कम मात्रा में हुए हैं। 'सोनल-भींग' का विषय और शीर्षक है-

बूंटी-भींग, कागद-कलम, दीवो बिजोगण, चितराम चितरो, कल्पना-यथार्थ, धरती माता अर टिड्डीदल, पणिहारी-घडो, तेल-दीवो, ठीकरी-कांकरा आदि।

'सोनल-भींग' को लेखक ने शहरी सभ्यता से दूर रखा है अथवा यह भी कह सकते है कि रचनाकार के हृदय और मस्तिष्क, दिल और दिमाग ग्रामीण-रंगों में गहरे रंगे हुए हैं।

कथ्य

लेखक का मूल निवास स्थान 'बिसाऊ' नाम का कस्बा है, जहां ऊंची हवेलियां हैं, पक्की सडके हैं। मोटरकार और जीप गाडियां है, कुंओं के अन्दर इंजन बिठाये हुए हैं। कमरों के अन्दर और गलियों में बिजली के बल्ब (लट्टू) जगमगाते हैं। अंग्रेजी फैशन वाले सूट-बूट पहने हुए, सिगरेट फूंकते हुए युवक हैं। अंग्रेजी का भी अध्ययन करवाने वाली स्कूलें हैं। चुनाव के हथकण्डे हैं तो सिनेमा की चर्चा और ट्रांजिस्टर भी हैं अर्थात बिसाऊ एक तरह से अर्द्ध-वैज्ञानिक कस्बा तो है ही। इसी भांति वर्तमान में लेखक बीकानेर में रह रहे हैं परन्तु 'सोनल भींग' में नागरिक सभ्यता का एक भी रेखाचित्र प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसका कारण क्या है? कारण उनकी पुस्तक के एक कथा में इस प्रकार देखा जा सकता है—

कागद बोल्यो— 'कवि! मनै काळो क्यूं करै है तू?'

कवि पडूत्तर दियो—'मैं तेरे ऊपर गीत लिखस्यूं, जणां मेरो गीत अमर हुय ज्यासी।'

कागद बोल्यो— 'तू भोळो है कवि। गीत वै अमर है, जिका नैं पून ग्रहण कर लिया, बाकी तो सै कागद काळा ई है।'[३१]

सधा हुआ साहित्यकार इस तत्व तक पहुंच चुका है कि विज्ञान की बुद्धि से निर्मित बाह्य समस्त वस्तुएं मिलकर भी मनुष्य के मन को शांति नहीं दे सकती सन्तोष नहीं दे सकती। विज्ञान की बुद्धि मानवता को 'सारा-संसार भाई-भाई है— 'वसुधैव कुटुम्बकम्'— साहित्य के इस उदात्त उद्देश्य तक नहीं पहुंचा सकती। यदि

३१ सोनल भींग— मेरो गीत, पृ २५

पहुचा सकती तो आज इस तथा अमेरिका और दूसरे बड़े देश अणु-शक्ति का सर्जन करके भी एक दूसरे से नही डरते दुनिया मे तीसरे महायुद्ध का खतरा नहीं मडराता।

मानव द्वारा निर्मित नयी फैशन की वस्तुए, थोडी दूर तक बुद्धि को आकर्षित कर सकती है परन्तु हृदय को मस्त बना देने वाला चित्रण तो प्राकृतिक वस्तुओ के अमर रस से ही उत्पन्न होता है। नव-रसों से अलौकिक इस अमर रस का रूप एक कथा मे द्रष्टव्य है—[32]

बिजोगण हाथ जोड'र बोली— देवता, मेरो प्रीतम परदेश मे है। तूं उण नै प्रकाश देई। उण रो मारग ऊजळो करी।'

दीवो बोल्यो, 'बिजोगण, मैं छोटो सो दीवो। मेरो प्रकाश सुदूर परदेश मे किण भात पूग पासी?'

बिजोगण बोली, 'देवता, तू छोटो कोनी। तू किरणा रो धणी है। जे एक किरण भी आपो समझ'र विस्तार करै तो सारै ससार नै प्रकाशमान कर देवै।'

दीवो बोल्यो, 'देवी, बात ठीक है। पण तेरै हिरदै मे भी च्यानणो है। तू हिरदै रै च्यानणै नै देयर तेरे परदेसी प्रीतम रो मारग ऊजळो कर।'

बिजोगण चिमकी, उण रा नैणा चिमक्या अर हिरदो चिमकण लाग्यो। बा आकासी-दीवै नै नमन करचो अर तळै चौक मे आयगी।

इस चित्रण मे वियोग शृंगार का रूप देखा जा सकता है परन्तु जिसमे स्वय से प्रकाश निकलता हो, वह तो साक्षात् स्वय बुद्ध परम-तत्व है। अब स्वय से अतिरिक्त न कहीं— प्रियतम (मंजिल) है और न उस तक पहुचने का मार्ग। इस स्थिति को 'अनल हक' की मसूरी वाणी मे सारे रसो की शाति अथवा आनन्द रस (अमररसकी) अनुभूति की सज्ञा दी जा सकती है, जो वाणी से परै है और शब्दो से दूर।[33]

वस्तु, पात्र एव चरित्र-चित्रण

कथावस्तु पात्र और चरित्र - चित्रण की दृष्टि से दो उत्तर हैं—[34]
(१) 'सोनल भींग' कृति मे सत्तर (७०) गद्य - गीत हैं। अत सत्तर (७०) कथाए

---

३२ वही- आकासी दीवो, पृ. ३६

३३-३४ राजस्थानी प्रचारिणी सभा, कलकत्ता की स्मारिका सन् १९७५ (राजस्थानी से अनूदित) सोनल-भींग एक ओळखाण- श्री अम्बु शर्मा)

होनी चाहिए। एक-एक कथा मे दो-तीन पात्र अवश्य ही होगे। इस प्रकार सैंकडों पात्र हैं तो उनके चरित्र भी दर्जनों प्रकार के ही होने चाहिए।

(२) 'मोनल भीग' कृति मे केवल एक ही पात्र है— मनुष्य का मन (बुद्धि - तत्व); केवल एक कथावस्तु (कहानी) है भगवान ने प्रकृति की रचना की और मनुष्य को भी रचा। हर मनुष्य को अपनी जिन्दगी भर की कुछ घटनाओं मे अपनी सगति देनी है। चरित्र भी हर मानव का एक ही है— असत् घटनाओ से विरति का चिन्तन। एक उदाहरण —

राजा री राणी मादी पडी। बीमारी बधती गई अर कोई इलाज कारगर नीं हुयो। बेहोस राणी रै पलग कन्नै राजा चुपचाप बैठ्यो हो अर आंख्या सूं आसुवा री धारा बँवै ही। राजा देख्यो कै महल री भीत पर माड्योडै चित्राम रै हिरण री आख्या सूं भी आसुवा री बूंदा पडनो सरू हुई। राजा नै अजरज हुयो। बो बोल्यो, 'चित्राम रा हिरण, काई तन्नै भी राणी जी री पीडा रो इतरो घणो दुख है?'

हिरण उत्तर दियो, 'राजा, मन्नै राणी री पीडा रो दुख कोनी पण तेरी पीडा रो दुख है। किणी दिन तूं जगल में आयर सिकार रै नाव सूं मेरी हिरणी रा प्राण लिया तो मैं तन्नै सराप दियो हो। पण आज मैं तेरी हालत देखर पिसताबूं हूं कै तन्नै सराप देयर मैं बडो भूल करी।[३५]

शिल्प : शैली—वैशिष्ट्य

'सोनल भीग' की शैली आकर्षक है। लेखक किसी भी साधारण घटना मे दो-तीन पात्रों का निर्माण करते हैं, जो एक-दो सवाद बोलता है, पर पाठकों को आश्चर्य मे छोडकर छूमतर हो जाता है। रचनाकार का एक ही उद्देश्य है कि उनके लेखन की शैलीगत विशेषता से पाठकों का सत्-चिंतन जागृत हो और पाठक भी अपने आस-पास की घटनाओं को लेखक की शैली के अनुसार निराले ढग से सोचे और समझें। इस शैली का उद्देश्य है— मानवता की निजी क्षमता पर घमण्ड, दिखावा, लालच, अधिकार, घृणा, क्रोध, अलगाव आदि कुत्सित भावनाएं - असत् भावनाएं- धीरे-धीरे समाप्त हों। मनुष्य विचारशील मन और पक्की लगन से इनसे पार पा सकता है। एक उदाहरण—

एक खेत मे पूगर आदमी साप नै छोड दियो। साप बिल मे बडण लाग्यो तो मैं पूछ्यो— 'नाग देवता, मनै एक भेद बतायर पछै बिल मे बड्। तूं ई आदमी रै दांत क्यू नीं लगाया?'

---

३५ सोनल भींग- राजा राणी, पृ. ३०

साप बोल्यो, 'म्हारो जाति-सुभाव क्रोधी है। पण म्है भी वैर अर प्रेम नै पिछाणा हा। आप रै प्रेमी नै पीड़ कुण देवै ? ई आदमी री बस या ही मन्त्र-साधना है।'

मैं पूछ्यो, 'जे मैं तनै पकड़ूं तो तूं के मानसी, वैर या प्रेम ?'

साप उत्तर दियो— 'ई बात रो फळ पैली नी बतायो जा सकै। तूं हाथ घालर देख।'[36]

भाषागत सौन्दर्य

'सोनल-भींग' की भाषा पर भी राजस्थानी भाषा की शेखावाटी बोली की छाप है। शब्द और मुहावरे भी इनके कथ्य की भावना को सागोपाग प्रस्तुत करने मे पूरे सफल हुए हैं। मतीरो, अड़बो, टापो, भेलवाड़, ऊंट, बाड, गडतुम्बो, गुवाळियों, बचियो, ऊदरो आदि राजस्थानी रग को सिंचित करते हैं तो कहावतें व मुहावरे प्रत्येक मानव की दैनिक जिन्दगी की बोलती कहानी है। एक दो उदाहरण द्रष्टव्य हैं--

'सूरज और भी तेजी मे आयो अर बोल्यो—या छोटै मूंडै बड़ी बात है।'[37]
'आखर आख खुलगी।'[38]

निष्कर्ष

'सोनल-भींग' कृति के सामूहिक प्रभाव के विषय मे श्री अम्बूजी शर्मा के उद्गार सटीक हैं— 'सामूहिक प्रभाव री दृष्टि सू लाम्बै गद्य-गीता ने छोडकर बाकी रा नै आपा मोटै रूप सू दो पाळी मे बाट सका। एक वै, जिका पढता ई तुरन्त समझ मे आ जावै अथवा जिणा रो रहस्य या सिक्षावा धावरण-कथावां रै रूप मे पाठका सू एकदम अपरिचित नी। पण दूजा गद्य-गीत बै है, जिका पढतां परात समझ मे आवै अर बै बुद्धि-राज्य नै पार करता या बिहारी कवि रै 'नावक रै तीर' री ज्यूं ठेठ काळजो बीधै। वाणी री विदग्धता या उक्ति री विचित्रता जठै अबूझ तो नी, पण रसज्ञ जणा रो कल्पनावा सू भी इतणी कारी अर नुवी नवादा है के जठै मर्मज्ञ जणा रो सिर सचालन सधारण अर सवदांवळो नीं, पण वाणी बिना अर हकार छिक कर रस पीवण री मतवाळ महिमा वाळो अलमस्त भोगी-भवरो है। पाठक जे एक बार आं गद्य-गीता मे बड्यो तो सुवाद रो रसियो बावड कर वारणं मूंडो नीं करै— स्यात अै गीत ई 'सोनल भींग' रा सान जडाऊ हीरक-हार है।'[39]

---

३६ सोनल भींग- सरप री हेत, पृ. ६१
३७ वही- बादळ अर सूरज, पृ. २
३८ वही, कूंज-कतार, पृ. ३
३९ डा. मनोहरजी शर्मा अभिनन्दन ग्रंथ, पृ. २०
विशेष- श्री अम्बूजी शर्मा ने सोनल भींग को गद्य गीत माना है।

'मोन-जडाऊ' हीरक-हार' संसारी वस्तु है। 'सोनल भीग' रा गद्य-गीतां नैं उण रैं असली आधार आध्यात्म-चिन्तन री रहस्य-प्रधान भाव-भूमि सूं नीचैं उतार कर आपो निखालस ससारी स्वरूप माय भी विचारा तो पाठक री निजू रूचि रैं अनुसार किणी गीत मांय रीति - नीति अर व्यवहार परक शिक्षा मिलसी, तो दूजै माय फालतू व्यसना नैं त्यागणै री चेतावणी। इण तरै, दिनचर्या रैं सन्दर्भ गुटकै री ज्यूं 'सोनल-भीग' सिराणैं दाबकर सोवणवाळी पोथी भी है, जिकी पाठका नै पक्कै मित्र जेहडी मनुहार-फटकार सूं पळ-पळ पर ऊंचैं ठायचै पुगावै।[40]

बाल-बाड़ी

'बाल-बाड़ी'[41] मे छोटे बालको के लिए निम्नलिखित सात राजस्थानी कहानिया हैं:—

(१) मुरलै री ढाणी (२) टमरकटूं री पैली उडार
(३) रामू रो चिड़ियाखानो (४) भूरी
(५) सिंध-पहाड़ री बरसगाठ (६) लू क्ती री प्यावू
(७) पीजरै रो पछी।

लेखक ने इन कहानियों की रचना मे विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखा है कि ये कहानियां बाल-कथाओ की दृष्टि से सर्वथा नवीन व मौलिक हों। न इनकी वस्तु पौराणिक है और न ही ऐतिहासिक; न ही ये नीति-कथाएं अथवा बोध-कथाएं हैं। साथ ही इनमे किसी ऐतिहासिक पात्र का कोई जीवन प्रसंग भी गुम्फित नही है। इतना सब होने पर भी ये अति सरस और छोटे बालकों के लिए आकर्षक हैं। इनमें राजस्थान के देहात का वातावरण है, जो वहां के किसान तथा पशुपालक-जीवन से सम्बन्धित है। प्राय: सभी कहानिया पशु-पक्षियों के जीवन से जुड़ी हुई है, जिन पर मानवीय भावो का आरोप किया गया है। इसमे गांव एवं जंगल तथा खेत के दृश्य देखने ही बनते हैं।

आगे कतिपय कहानियो पर प्रकाश डाला जाता है।

मुरलै री ढाणी

पहली कहानी मुरलै री ढाणी एक किसान बालक से सम्बन्धित है। वह अपने माता-पिता के साथ खेत मे जाकर पास ही स्थित जगल मे घूमता रहता है। खेत

४० डा मनोहरजी शर्मा अभिनन्दन ग्रंथ, पृ. २१ (श्री मग्वाजो शर्मा)
४१ भूमिका प्रकाशन सरमगाद (सीकर) स० प्रकाशित

मे उनकी 'टापी' (झोंपडी) है। वहा एक मोर आता है और वह समय पाकर उसका साथी बन जाता है। इस पालतु मोर को वे अपने गाव के घर मे ल आते हैं और पुन खेत म ले जाते हैं। इस प्रकार काफी समय बीतने पर यह किसान परिवार अपने खेत म ही घर बनाकर रहने लगता है। कालान्तर मे यहा कई घर आबाद हो जाते हैं और लोग इसे 'मुरलै री ढाणी' नाम से पुकारते है।

'बाल-वाडी' की अन्य कहानियो की अपेक्षा यह कहानी कुछ बडी अवश्य है परन्तु इतनी नही कि बालक इसको पढते समय ऊबने लगें। उनको गाव, खेत और जगल के नये - नये दृश्य देखने को मिलते है, जिनसे उनको एक प्रकार से इन स्थानो की सैर सी हो जाती है।

टमरकटू री पहली उडार

राजस्थानी बाल कथाओं मे 'टमरकटू' नाम बडा प्रसिद्ध है। जब कमेडी' पक्षी बोलता है तो उसके मुख से टमरकटू के समान आवाज निकलती है। प्रस्तुत बालकथा मे एक कमेडी के बच्चे की एक दिन की यात्रा का वर्णन किया गया है। जब वह उडने के योग्य हो जाता है तो अपनी मा की अनुपस्थिति मे अपना घोसला छोडकर दुनिया को देखने के लिए उडता है। वह भी खेत और जगल के अनेक दृश्यों को देखता है और जीवन मे नया अनुभव प्राप्त करता है। सायकाल वह अपने घर लौट आता है तो उसकी माता उसके अनुभव सुनकर बडी प्रसन्न होती है।

स्पष्ट ही इस कहानी मे भी जगल और पक्षी-जीवन की भावना का चित्रण है, जो बालको को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

रामू री चिडियाखानो

रामू एक छोटा बालक है। उसका चाचा जयपुर से बडी सख्या मे पशु-पक्षियों के खिलौने लाकर उसे देता है तो वह बडा प्रसन्न होता है। वह अपने सभी जानवरो को (खिलौनो को) साथ लेकर सोता है तो वह सपना देखता है कि उसके पशु जगल में भाग गए हैं और पक्षी आकाश मे उड गए हैं। इससे उसे बडा दुख होता है। अन्त में उसका बन्दर (खिलौना) पुकार करके उन सब को फिर इकट्ठा करता है और गाय, भैंस का दूध (खिलौनो का) निकालकर पिलाता है। रामू अपने बन्दर की चतुराई से परम प्रसन्न होता है।

कहना न होगा कि इस कहानी के नाना प्रकार के पशु व पक्षी बालको के लिए असाधारण रूप से रुचिकर हैं। ये खिलौने हैं परन्तु छोटे बालको को अपने खिलौने अति प्रिय होते हैं।

सिंघपछाड री बरसगाठ

एक गीदड ग्रोर उसकी पत्नी जगल मे रहते हैं। उनके बच्चे का नाम सिंघपछाड (सिंह को पछाडने वाला) है। वे ग्रपने बेटे की बरसगाठ बडे ग्रायोजन के साथ मनाते हैं। इनकी जाति के मिलने-जुलने वाले ग्रन्य पशु भी इस ग्रवसर पर ग्रामन्त्रित किये जाते हैं। वे सिंघपछाड के लिए ग्रनेक प्रकार की भेंट लाते हैं। उनको खिलाया-पिलाया जाता है, गीत गाये जाते हैं। गीतो की ग्रावाज स सारा जगल गूज उठता है। इन गीतो मे सिंघपछाड का नाम ग्राता है, जिस काफी दूर बैठा हुग्रा जगल का राजा (सिंह) सुनकर जोर से दहाडता है। फल यह होता है कि बरसगाठ के उत्सव म ग्राये हुए सभी मेहमान डर कर भाग जाते हैं ग्रौर सिंघ-पछाड को लेकर उसके मा बाप ग्रपनी घूगी (माद) मे जा घुसते हैं।

इस कहानी में भी जगल के जीवों पर मानव-जीवन का ग्रारोप करके एक नया ही दृश्य दिखलाया गया है गीदड जगल के जानवरो में बडा चालाक माना जाता है। उसके सम्बन्ध म ग्रनेक लोक-कथाए प्रचलित हैं। इस बालकथा का गीदड भी वैसा ही है, परन्तु इसकी वस्तु ग्रपने ढग की ग्रौर नई है।

लूकती री प्यावू

इसमे पशु चराने वाले बालको का जीवन चित्रित किया गया है। वे बालक पानी से भरी हुई ग्रपनी लोट (पानी रखने का मिट्टी का पात्र) जगल के 'जोहड' में ही छिपाकर रख ग्राते हैं। 'जोहड' मे पानी नही है। रात को वहाँ एक लोमडी ग्राती है, वह पानी की लोट को निकालकर जोहड के पास ले ग्राती है ग्रौर जानवरों को पानी पिलाने के लिए ग्रपने पास रखती है। यह लोमडी की प्याऊ है। सभी छोटे जानवर उसको ग्रादत का जानते हैं ग्रौर कोई उसके पास नही ग्राता। ग्रन्त मे एक गीदड ग्राता है, जो 'लोट' का पानी पीता है ग्रौर जाते समय उसकी रस्सी लोमडी के गले मे डाल जाता है। लोमडी बहुत चेष्टा करती है परन्तु उस फन्दे से छुटकारा नहीं पा सकती। ग्रन्त म वह उसी प्रकार झाडियों मे घुसकर छुप जाती है। दूसरे दिन बालक ग्राते हैं तो लोमडी मृत-तुल्य ग्राचरण करती है, जिससे वे 'लोट का' 'पट्टा' उसके गले से निकाल देते हैं। उसी क्षण लोमडी भाग जाती है।

जिस प्रकार गीदड एक चालाक जानवर माना जाता है, उसी प्रकार लोमडी भी जगल के जानवरों मे बडी बुद्धिमान समझी जाती है। विदेशों मे उससे सबधित बहुत कहानियाँ हैं।

निष्कर्ष

'बाल वाडी' की भाषा ग्रौर विषय तो बालकों के लिए सर्वथा ग्रनुकूल है

ही, साथ ही इनकी सबसे बड़ी विशेषता है यह कि प्रत्येक कहानी की वस्तु विस्तृत न होकर संक्षिप्त हैं। प्रत्येक कहानी रोचक हैं। नवीनता इस संग्रह की विशेषता है। इसको पढ़ते समय बालक ऐसा कभी अनुभव नहीं करता कि वह कोई पहले सुनी हुई अथवा पढ़ी हुई कहानी दुबारा पढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में यह सहज ही कहा जा सकता है कि 'बाल-बाड़ी' की कहानियां बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप है।

अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के अवसर पर 'बाल-बाड़ी' को राजस्थानी भाषा-साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर की ओर से पुरस्कृत किया जा चुका है। इसमें मनोवैज्ञानिक ढंग से बालक की उत्सुकता को बराबर बनाये रखते हुए, पशु-पक्षियों के विभिन्न क्रिया-कलापों के माध्यम से शीघ्र समझ में आने वाली ज्ञान-विज्ञान व हास्य कथाएं संगृहीत हैं। बच्चों के मानसिक-विकास की दृष्टि से 'बालबाड़ी' की रचना स्तुत्य हैं। यह चित्रमय होने के कारण अधिक बोधगम्य है।

राजस्थानी कहानी-साहित्य में डा० मनोहर शर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य की विविध विधाओं में सख्या और क्षमता दोनों ही दृष्टिकोणों से मनोहरजी अग्रगण्य हैं। शेखावाटी आंचल के भावुक रहन-सहन, रीति-व्यवहार, बोलचाल और घर गृहस्थी के इकरंगे चित्रण से मंडित आपकी कहानियां पाठकों को सहज ही प्रभावित करती हैं। 'कन्यादान' की कहानियों तक मनोहरजी आदर्श, त्याग और नीति की बातें लिखते थे, जो आश्चर्य कारक और आज की कहानी से अलग लगती है परन्तु 'कुरड़ी आच' (१९७३) के प्रकाशन से ऐसा प्रतीत होता है कि आप युग के साथ चलकर जिन्दगी के ठाम यथार्थ को सीधे सहेज कर हाड-मांस के मनुष्य की सामाजिक परिस्थितियों का अंकन परीक्षण करने लगे हैं।

रोहिड़ै रा फूल

हिन्दी और राजस्थानी में निबन्ध शब्द प्राय अंग्रेजी ESSAY के पर्याय के रूप में व्यवहृत होता है। राजस्थानी में निबन्ध का प्रारम्भिक रूप श्री शिवचन्द्रजी भरतिया की राजस्थानी कृतियों की भूमिका म देखने को मिलता है।[42] इनमे लेखक ने तत्कालीन समस्याओं पर विचार किया है। विशेषत मारवाड़ी समाज की दयनीय स्थिति और देश की पराधीनता को लेकर भरतियाजी ने विस्तार के साथ तर्कपूर्ण शैली मे अपने विचार प्रकटित किये हैं। भरतियाजी के समय म प्रकाशित होने वाले 'मारवाड़ी भास्कर[43] मारवाड़ी'[44] जैस पत्रों म प्रकाशित लेखो म राजस्थानी निबन्ध का प्रथम चरण दृष्टिगत होता है।

---

४२ आधुनिक राजस्थानी साहित्य . प्रेरणा स्रोत और प्रवृत्तियां- डा० किरण नाहटा, पृ. १०६

४३ स. रामलाल बद्रीदास, प्र का. वि० स० १९६४ (शोलापुर)

४४ स. किशनलाल बलदवा, प्र का वि० स० १९६४ (अहमदाबाद)

पश्चात् 'मारवाडी हितकारक' (धामणगाव) और 'ग्रागीवाण' मे भावपूर्ण लघु निबन्ध सामयिक समस्याओ के सन्दर्भ म प्रकाशित हुए है। पश्चात् 'जागती जोत' (जयपुर), 'मारवाडी' (जोधपुर) 'राजस्थानी' (कलकत्ता) आदि पत्रो मे भी कुछ निबन्ध प्रकाशित होते रहे हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त 'मरवाणी', 'ओळमो' जैसे पत्रों मे निबन्ध भी छपे।

निबन्ध के विकास क्रम की दृष्टि से राजस्थान साहित्य अकादमी (सगम), उदयपुर द्वारा प्रकाशित 'राजस्थानी निबन्ध सग्रह'[45] का अपना अलग महत्व है। यह राजस्थानी भाषा के निबन्धो का तो प्रथम सग्रह है ही, किन्तु साथ ही साथ इसने कुछ नये निबन्धकारों से भी राजस्थानी का प्रथम परिचय करवाया है।[46]

साहित्यिक विषयों को लेकर लिखे गये विवेचनात्मक निबन्धों में डा० मनोहरजी शर्मा का 'राजस्थानी साहित्य री एक झाकी'[47] उल्लेखनीय है। यह एक लम्बा निबन्ध है, जिसमे सम्पूर्ण राजस्थानी साहित्य की एक झलक प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। राजस्थानी साहित्य की गौरवपूर्ण उपलब्धि का सही-सही भान करवाने मे प्रस्तुत निबन्ध महत्वपूर्ण है।

'रोहिडे रा फूल'[48] मे डा० मनोहरजी शर्मा के निबन्धो का सग्रह है। सभी निबन्ध कथात्मक एव व्यग्य-प्रधान हैं। इस कारण ये बडे रोचक बन गये है। इनको पढ़ने से बाबू बालमुकुन्द गुप्त के निबन्धो का सहज ही स्मरण हो आता है। श्री गुप्तजी ने अपने समय की स्थिति पर व्यगयात्मक लेख लिखे थे, इसी प्रकार 'रोहिडे रा फूल' में वर्तमान भारत की स्थिति पर व्यग्यात्मक निबन्ध प्रस्तुत किये गये हैं।

---

४५ स श्री चन्द्रसिंह, प्र.का. १६६६ ई०

४६ आधुनिक राजस्थानी साहित्य : प्रेरणा स्रोत और प्रवृत्तिया डा. किरण नाहटा, पृ. १०८

४७ ओळमो, जुलाई १६६७

४८ 'रोहिडो' राजस्थान का एक विशेष प्रकार का पेड होता है। इस पर लाल-पीले फूल इतनी अधिक मात्रा मे निकलते हैं कि इसके पत्ते लगभग छुप से जाते हैं। दूर से देखने पर ये फूल लुभावने व आकर्षक प्रतीत होते हैं परन्तु पास जाकर देखने पर उन फूलो का कोई महत्व नहीं रह जाता। इसका कारण यही है कि फूलों मे रग की सजावट तो गजब की होती है परन्तु उनमे सुगन्ध नहीं होती। कहा भी है —'दौलत का पळ ऊजळा, रोहीडे का फूल।'

अर्थात् रोहिडा वृक्ष के फूल तो देखने मे सुन्दर लगते हैं। हा, रोहिडे वृक्ष की लकडी अच्छी होती है। इसलिए लोग बडे ध्यान से इस पेड की रक्षा करते है। प्रस्तुत सग्रह का नामकरण इस रूप मे सार्थक है कि भारत में उन्नति के जो नारे लगाये जा रहे है, वे बडे लुभावने हैं परन्तु ये सब दिखावटी है इनमें वास्तविकता नही है।

इस संग्रह मे प्रधान रूप से भारत की राजनैतिक, आर्थिक तथा साहित्यिक स्थिति पर व्यग्य किया गया है । अधिकतर निबन्ध राजनैतिक स्थिति पर हैं । स्वाधीनता प्राप्त करने पर भी भारतीय जनता को सुख नही मिला बल्कि उसके सकट बढ गये । इसके विपरीत पू जीपति, व्यापारी, राजनेता तथा सरकारी अफसर सब प्रकार से सम्पन्न हो गये । सरकारी महकमो मे भयकर भ्रष्टाचार फैला हुआ है । इस सम्बन्ध मे 'रोहिडै रा फूल', मु सीजी रो सपनो', 'गादड़ पट्टो', 'आजादी री लूट', 'बचन वीर', 'सिरी घटळ छत्र री जय', 'सरकारी सूवो', 'गडक धन' आदि निबन्ध विशेष रूप से पठनीय हैं । इनमे भारतीय राजनीति पर व्यग्य किया गया है ।

भारत की आर्थिक स्थिति के पतन और उसके कारणों से सबधित कुछ निबन्ध भी प्रस्तुत सग्रह मे हैं । ये निबन्ध भी मार्मिक हैं- 'बोरडी री साख', अल्ला री मा रो चालीसो', कागद रो रिपियो', 'तळै धरती ऊपर आकास', देव गया परदेस' आदि निबन्ध विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

इसी क्रम मे कई ऐसे निबन्ध भी इस सग्रह मे शामिल हैं, जिनमें साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र की कमजोरियो पर चोट की गई है । इनमे- 'बगीचै रो कागलो', 'नौकरा रो कारखानो', 'एक शोध-प्रबन्ध री रूप रेखा', 'आत्म समीक्षा', 'खेद दिवस', 'एक अलिखित नाटक री सार समीक्षा', 'कालू रो अभिनन्दन', 'एक लोककला केन्द्र रो उद्‌घाटन' आदि निबन्ध प्रमुख हैं ।

कहना न होगा कि लेखक का उद्देश्य अपने निबन्धो द्वारा केवल पाठको का मनोरजन मात्र करना नहीं है, अपितु उनके समक्ष देश की वास्तविक स्थिति रखकर उन्हें आवश्यक परिवर्तन हेतु प्रेरणा देना है । राजस्थानी मे हास्य रसात्मक कविताएं काफी लिखी गई हैं और वे बडी लोक-प्रिय भी हुई हैं परन्तु व्यग्यात्मक सामग्री का अभाव-सा ही है । इस विषय के लेख जन-साधारण मे बड़े चाव से पढे जाते हैं और वे परोक्ष रूप मे बडे उपयोगी सिद्ध होते हैं । यही कार्य इस संग्रह के लेखो से हुआ है ।

इस सग्रह के कई निबन्धो मे आजाद सभा की चर्चा की गई है। यह नवयुवको का एक अपना सगठन है, जिसकी बैठक प्रति शनिवार को होती है और उसमे सभापति की ओर से केवल एक भाषण होता है । हर शनिवार की बैठक मे नया सभापति बनता है और विशेष बात यह है कि वह अपनी इच्छानुकूल विषय पर भाषण नहीं दे सकता । उसका भाषण श्रोताओ के इच्छित विषय पर ही होता है । इस विषय-निर्वाचन की भी एक विशेष विधि है । प्रत्येक श्रोता अभीष्ट विषय

एक पर्ची पर लिखकर गुप्त रूप से पेटी (बक्स) में डाल देता है। फिर चिट्ठी (लाटरी) निकालकर विषय का चयन किया जाता है। इस विधि से जो पर्ची निकलती है, सभापति को उसी विषय पर अपना भाषण देना पड़ता है।

कहना न होगा कि इस संग्रह के निबन्धों के प्राय: शीर्षक ऐसे हैं, जिनको पढ़कर पाठक उनके विषय का अनुमान नहीं कर सकता इसलिए उसका कौतूहल बढ़ जाता है, जो पूरा निबन्ध पढ़ने पर ही शान्त हो पाता है। जिस निबन्ध का शीर्षक एकदम अटपटा है, उसे पूरा पढ़ने से ज्ञात होता है कि वह सर्वथा सार्थक है। 'बगीचै रो कागळो', 'सरकारी सूबो', 'गडक-धन' 'बोल श्री अटल छत्र की जय' आदि कुछ शीर्षक इस विषय में उल्लेखनीय हैं।

'रोहिड़ै रा फूल में जो निबन्ध प्रकाशित हुए हैं उनके बाद भी डा० मनोहर जी शर्मा ने इस प्रकार के व्यंग्यात्मक निबन्धों का लेखन-क्रम जारी रखा है और ऐसे कई निबन्ध पत्रिकाओं मे छपते रहे हैं। उदाहरण-स्वरूप 'जीवित श्राद्ध' निबन्ध का नाम लिया जा सकता है।

भाषा-शैली

लेखक की शक्ति और अभिव्यक्ति की शैली काफी उन्नत है। फलस्वरूप इन निबन्धों में विषय के साथ शब्दों का प्रयोग भी व्यंग्यात्मक ही हुआ है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

बाबू सुमवमनराय माथुर आखर सार्वजनिक सहायता तथा अनेक विद्वानों री पूजा— वदना सूं पी-एच०डी० री उपाधि लेवण में सुफळ हुया तो वां रो हौसलो बढ़ग्यो के वे लगते - हाथ ई डी० लिट्० री डिगरी भी कब्जे करणे री मन में मवरी कर लीनो।

माथुर साहब डी० लिट्० खातर अनेक विषय सोच्या पण अन्त में तय रैयो के वै पी-एच०डी० लेवण में अनेक नया-नया अनुभव प्राप्त करया है। जे वां पर ई महाप्रबन्ध लिख्यो जावे तो उत्तम हुवै। पछै के देर ही? माथुर साब आपरै चुनिंदा मित्र विद्वानां नै धन्यवाद देवण-खातर अर बांरूं बधाई लेवण-खातर एक साथै ई चाय पर बुला लिया।'[४९]

निष्कर्ष

वर्तमान भारत मे सुधार की नितान्त आवश्यकता है। लेखकों का कर्तव्य

४६ रोहिड़ै रा फूल, पृ. ५२

है कि वे इस ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करें। 'रोहिड़ै रा फूल' मे लेखक ने यही कार्य किया है। उसने कोई सीधा उपदेश न देकर एक ढग से अपना अभिप्राय पाठकों के दिल मे उतारने का प्रयत्न किया है। जो तथ्य सिद्धान्त रूप में अथवा नीति-वचन के रूप मे कहा जाता है, वह उतना प्रभावशाली नहीं होता, जितना कि वह कथात्मक रूप मे कहने से होता है। इस प्रकार प्रत्यक्ष प्रेरणा की अपेक्षा परोक्ष प्रेरणा का महत्त्व अधिक होता है। साथ ही कोई भी तथ्य यदि किसी रूप में हास्य तथा व्यग्य की रगत के साथ प्रस्तुत किया जाता है तो वह और भी अधिक प्रभावशाली बन जाता है। शर्माजी ने अपने निबन्धो मे इन्ही सब बातों को ध्यान मे रखा है। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि ये निबन्ध बाबू बालमुकुन्द गुप्त के निबन्धो की याद दिलाते हैं; उनका 'शिव शभु का चिट्ठा' अपने समय में बडा लोकप्रिय रहा है। हो सकता है कि उन्ही से प्रभावित होकर लेखक ने अपने ये राजस्थानी निबन्ध प्रस्तुत किये हो।

अध्याय— ६

नाट्य साहित्य : विश्लेषण एवं मूल्यांकन

नाट्य साहित्य का आज का सर्वाधिक लोकप्रिय रूप एकाकी अपने जन्म के कुछ समय पश्चात् ही अत्यन्त लोकप्रिय हो गया। भारतवर्ष मे एकाकी का प्रचलन पाश्चात्य जगत् मे काफी कुछ लोकप्रियता प्राप्त कर लेने के बाद ही हुआ। वैसे तो सस्कृत नाट्य-शास्त्र मे रूपक और उपरूपक के भेदों म एक अ क वाले कतिपय रूपका का उल्लेख भी मिलता है और उनकी रचना भी हुई है किन्तु आज के एकाकी का उनसे कोई सीधा सम्बन्ध नही है। हिन्दी की तरह राजस्थानी ने भी पाश्चात्य साहित्य से प्रेरित होकर ही इस विधा को अपनाया है।[1]

राजस्थानी एकाकी : सर्जन की पृष्ठभूमि

राजस्थानी एकाकी के विकास म सर्वप्रथम नाम आता है प० माधवप्रसाद जी मिश्र के 'बडा बाजार' का।[2] यह रचना शिल्प की दृष्टि से एकाकी के अधिक निकट है। दो दृश्यो एव तीन पात्रो वाला यह एकांकी (वार्तालाप) वि०स० १९६२ मे प्रकाशित हुआ।

प्रारभिक नाटको मे भारतीय एव पाश्चात्य दोनो ही नाट्य शैलियो का प्रभाव परिलक्षित होता है। भारतीय नाट्य शैली का अनुकरण करने वालो मे श्री नारायणजी अग्रवाल ('भाग्योदय नाटक', 'विद्या उदय नाटक', 'अकल बडी कि भैंस' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। दूसरी ओर पाश्चात्य नाट्य शैली से प्रेरित नाटकों की सख्या भी कम नही रही है। इनमे प्रमुख हैं— श्री शिवचन्द्रजी भरतिया एव श्री भगवतीप्रसाद जी दारूका के अधिकाश नाटक।

एक ओर राजस्थानी एकाकी नाटककारों का उद्देश्य सामयिक समस्याओं को उठाकर उनका आदर्शवादी अन्त प्रस्तुत करना रहा है, तो दूसरी ओर राजस्थान के गौरवमय इतिहास के उज्ज्वल प्रसगों पर आधारित एकांकियों का सर्जन करना रहा है।

१ आधुनिक राजस्थानी साहित्य- डा० किरण नाहटा, पृ. ८८

२ वैश्योपकारक, वर्ष-२, अ क- १२, पृ १२८

प्रथम एकांकी की ऐतिहासिक कथावस्तु मे नैणसी और सुन्दरसी के उदात्त चरित्र का निर्वाह सफलतापूर्वक हुआ है। नैणसी कहता है— 'ससार में जीवणो बडी बात कोनी, मरणो बडी बात है । मरणा कोनी जाणैं, जिको जीवणो भी कोनीं जाणैं ।।[13]

'नैणसी री ख्यात' एक अमूल्य ग्रंथ-रत्न है। ख्यात-लेखको मे जोधपुर के नैणसी मुहणोत मुख्य हैं।[14] स्वर्गीय मुशी देवीप्रसादजी ने तो नैणसी को 'राजपूताने का 'अब्बुल फजल' कहा है।[15] 'नैणसी रो साको' मे भी नैणसी के वीर भाव इस प्रकार प्रकटित हुए हैं- 'या कटारी आपणी ख्यात लिखसी, म्हारा वीर। जद मान घणी सूरवीरा रैं सिर पर च्यारू मेर सू आ बणती अर कोई सूळो मारग न मिल पावतो तो वैं कांई करता ? साको ! अर साका तो गाव - गांव, घर - घर मैं हुया है ।"[16]

राजस्थान मे 'साका' करने वाले वीरो एव 'जोहर' की ज्वाला मे अक्षय मुस्कान से इतिहास के सुनहरे पृष्ठों को गौरवान्वित करने वाली वीर रमणियो का स्मरण करते हुए नैणसी ने कहा—' .. ..थां साको करणियैं उण नरदेवा नैं याद करो, जिका आप रैं गढ रा दरवाजा खोल र वैरियां री लाय मे विलीन हुया। या जमहर री उण नर देविया रो ध्यान करो, जिकी राजी खुशी चितावां मे कूदी। सुन्दरसी, आज आपा साको करा हा।'[17]

इसमे दो पात्र हैं— नैणसी और सुन्दरसी। इनमें नायकत्व का निर्णय करना अति कठिन है। यद्यपि यह एकाकी दुःखान्त है परन्तु राजस्थानी साहित्य की यह विशेषता है कि इसमे वीर और श्रृंगार तथा वीर और करुण का अद्‌भुत सम्मिश्रण देखा जाता है। हसते-हसते बलिदान होने वालों के मन मे दुःख का लेश मात्र भी नही होता। वे तो अति प्रसन्नता से स्वय मृत्यु का वरण करते हैं। आन पर मरने वाले वीर स्वर्ग - गमन करते हैं और इसीलिए यह अलौकिक शुभ अवसर माना जाता है। मृत्यु का यह वरण 'अमरफळ' है। स्वय सुन्दरसी कहता है— 'या ख्यात कोनी, यो तो साकैं रो अमरफळ है।[18]

---

१३ नैणसी रो साको, पृ ७
१४ राजस्थानी साहित्य का इतिहास- डा. पुरुषोत्तम मेनारिया, पृ. २४०
१५ ओसवाल जाति का इतिहास, पृ. ५१
१६ नैणसी रो साको, पृ. ७
१७ वही, पृ. ७-८
१८ वही, पृ. ८

दूसरे एकाकी मे 'सुपियारदे' अपने होने वाले बहनोई नरवद की जिद् पर उसका 'आरता' करती है। यह बात उसके पति को अखरती है और वह उसे अपमानित करता है। सुपियारदे नरवद को बुलाकर उसके साथ गुप्त रूप से चली जाती है और उसका पति नरसिंघ झल्लाता रह जाता है। एक छोटी सी घटना और कितना भयकर परिणाम ?

'सुपियारदे' एकाकी मे पाच दृश्य हैं। इसमे नायक है, जैतारण का सरदार नरसिंह व नायिका उसकी पत्नी सुपियारदे। सुपियारदे के अन्तर्द्वन्द्व का इसमे स्वाभाविक वर्णन हुआ है। इसम 'त्रिया-चरित्र' का रूप साकार है। नरबद के साथ भागने पर नरसिंह सुपियारदे के प्रति घृणा से भर जाता है। वह नरवद से वैर लेन के लिए सन्नद्ध होता है। नरवद उसकी दृष्टि मे कुत्ता है— 'सांखली दगो देयगी। नरबद चोर ज्यू आयो अर साखली नै ले भाग्यो। इस्यो वैरो हुवै तो राड रो नाक काट लेवता।[19] ...... नरवद भी कोई मिनख है कुत्तो म्हारी जूठी पातळ चाटण,नै त्यार हुयो।'[20]

नरसिंह साखली की हर चीज को जलाकर उसका नाम - निशान ही मिटा देना चाहता है—

'नरसिंघ— (झिरोखै माय सू झाकर जोर सू) राड री चिता जळाय दो। सारी चीजा बाळ दो, राड रो निसान मिटाय दो।'[21]

श्री अनूप सस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर की हस्तलिखित प्रतियो मे सुपियारदे की बातें मिलती हैं। नैणसी ने भी विस्तार से इसकी कहानी दी है। सुपियारदे रूण के स्वामी सीहड साखले की पुत्री थी। उसकी सगाई तो मडोवर के स्वामी नरवद के साथ हुई थी परन्तु जब मेवाड के राणा मोकल ने मडोवर राव रणमल को दिलाकर नरवद को अपना कृपा-पात्र बना लिया तो साखले ने उसका विवाह जैतारण के स्वामी नरसिंह सिंधल के साथ कर दिया। पश्चात् सुपियारदे की छोटी बहन से नरवद का विवाह इस शर्त पर तय हुआ कि मडप के तोरण पर नरवद का 'आरता' सुपियारदे करेगी। सुपियारदे ने आरता किया, जिसके फलस्वरूप सिंधल ने उसको अनेक कष्ट देने प्रारम्भ किये। इस पर नरवद जैतारण आया और

१६ नैणसी रा साका (एकांकी सुपियारदे), पृ १६

२० वही, पृ. १६

२१ वही पृ. २०

लागो जिसी म्हारी दुरगत करी, राम अण री भी इसी ई करसी......यो म्हारो सराप...... (बालो बन्द हुवै है)'[24]

सती रो संकट

'सती रो संकट' मे रतनसी मिघल ने अपनी बेटी की सगाई का नारियल पहिले तो खेतसी को भेज दिया और बाद में बालीसा सरदार सूरजमल के बेटे सगरा को भेज दिया। बालीसों की बरात आई। परन्तु खेतसी अचानक सगरा को मारकर भाग गया। सूरजमल इस पर अड गया कि सगरा के साथ अविवाहिता लाडकुंवर सती कराई जाय। इस कलह से बचने के लिए लाडकुंवर ने जल कर प्राण त्यागे। कैसी जिद् और कैसी घातक परम्परा!

इस एकांकी मे तीन दृश्य हैं तथा छह पात्र हैं। इसमें प्रमुख पात्र है—रतनसी। वह जालोरे का स्वामी है। सोमागदे उसकी रानी है लाडकंवर उसकी पुत्री है। वह कुंवारी ही सती होती है। उसकी सगाई सगरा के साथ हो चुकी थी। भावी संकट को टालने के उद्देश्य से लाडकंवर ने आत्म बलिदान कर दिया। वह युद्ध की विभीषिका से बचाने के लिए कहती है—'हां, पछै घणा माथा कटसी अर घणा घायल तड़फड़ासी। घणी सुहागणा काळा पैरसी अर घणा टाबर रुळसी...... कुंवारी कन्या नैं काठ चढणो पड़सी।'[25]

अन्त में वह सगरा के साथ सती हुई? उसके ये अन्तिम मार्मिक उद्गार द्रष्टव्य हैं—'बापजी सा, मैं सारी बातां समझ लीनी है। आप नैं मैं घणी ही तकलीफां देई पण अब और तकलीफ कोनी देवूं। जुध सूं बालीसा तो कटसी ई, पण मिघल भी सावत कोनी रवै। एक मिनख खातर इसी विनास-लीला क्यूं? आप राड मेटो अर बालीसां नैं म्हारो सन्देस भेजो। 'म्है सागरै साथै सती कोनी हुवा पण बळस्या जरूर।'[26]

बेटी जमाई

जालोर के राजा कान्हडदे ने अपनी पुत्री बीरमती का विवाह जैसलमेर के रावल लाखणसेन के साथ किया। विदाई के समय लाखणसेन बीरमती को छोड़ कर चला गया। बीरमती को बाद में विदा किया गया। इस अपमान से दुःखी होकर उसने रास्ते में घिनला के ठाकुर नीबा सीमाळोत को वरण कर लिया। कालान्तर में

---

२४ नैणसी रो साको (राजदण्ड), पृ. ५६

२५ नैणसी रो साको (सती रो संकट), पृ. ६३

२६ वही, पृ. ६४

छोटी बहिन कोमलकवर के विवाह पर वीरमती और नीबा को बुलाया गया। कान्हडदे के खबास राजडिया का पिता किसी समय नीबा के हाथ से मारा गया था। उसने नींबा को भोजन करते समय कत्ल कर दिया। अफसोस इस बात का है कि यह हत्या कान्हडदे की जानकारी मे हुई।

प्रस्तुत एकाकी मे चार दृश्य हैं। इसमे छह पात्र है। रावल कान्हडदे[27] इसका प्रमुख पात्र है। कपूरदे उनकी रानी है।

बेटी और जमाई को देखकर कपूरदे की मनोकामना पूरी हुई। वह 'आज म्हारो देसडलो सुरगो म्हानै लागसी........'[28] गीत गा रही थी कि उसे 'जमाई (जामातृ नीबाजी) पर किये गये घातक वार की सूचना कान्हडदे ने दी। यह दुखद् अन्त असह्य था। वीरमती ने पिता को फटकारा।[29] उसका अन्त करण अभिशाप देने लगा— 'यो कांई जुलम करायो ?............ सिघ री मोत गादडै रै हाथा करवाई। घूळ पडी रजपूती मे।..... ......पण ऊपरलो देखै है। एक दिन यो पाप जाळोर नै भेळ देवेलो।'

कान्हडदे भी अन्त मे पश्चाताप करता है— 'यो पाप म्हारै ई सिर चढ्यो मर काळस भी लागी। आखर यो काम भी बुरो बण्यो......'

धरम संकट

'धरम सकट' मे दला जोइया (प्राचीन यौधेय) ने मालदे द्वारा निष्कासित उसके छोटे भाई वीरम राठोड को अपने यहा शरण दी परन्तु उसने उपद्रव करने शुरू कर दिये। वीरम को समझाने दला उसके गाव बडेर गया। रात को दला सो गया तो वीरम ने अपनी रानी मागळियाणीजी के सामने दोका गहलोत द्वारा दूसरे दिन दला की हत्या करने की साजिश प्रकट की। मागळियाणीजी ने रात को दला को जगाकर भगा दिया। पति की कृतघ्नता और पत्नी की कृतज्ञता दोनों ही देखने योग्य है।

प्रस्तुत एकाकी मे तीन दृश्य हैं। इसमे चार पात्रों (दलो जोइयो, सरूपदे, वीरम राठौड और मांगळियाणीजी) मे वीरम को नायक तथा मांगळियाणीजी को नायिका माना जा सकता है। 'वीरमायण, (बादर ढाढी द्वारा रचित 'वीरमायण'[30] में वीरम का आदर्श नायकत्व प्रतिपादित हुआ है परन्तु प्रस्तुत एकाकी मे उसकी

२७ रावल कान्हडदे की अक्षय कीर्ति की गाथा पण्डित पद्मनाभ द्वारा रचित— कान्हडदे प्रबन्ध मे गुम्फित है।

२८ नैणसी री साको (बेटी-जमाई) पृ. ६३

२९ नैणसी री साको (बेटी-जमाई), पृ. ६४

३० राजस्थानी भाषा और साहित्य- डा० हीरालाल माहेश्वरी, पृ. ७४

कृतघ्नता का कालुष्य दृष्टगत होता है। मागळियाणीजी की कृतज्ञता का आदर्श यहा भारतीय संस्कृति का एक उदाहरण है। वीरम ने भी एक बार दले जोइया को रावजी की घात से बचाया था।[31] दला के उपकार को याद करके मागळियाणीजी वीरम से कहती है— 'पण राज, दलो आपा नै बिखै माय सहारो दीन्यो, बसबा नै ठोड बताई। यो भी तो उणरो उपगार है।'[32]

इस पर वीरमदे कहता है कि उपकार दोनों ओर से हुआ है। अत बराबर हुए। जब वीरम नही मानता तो मगळियाणीजी रात्री मे जाकर दला को 'बीरा' (भाई) कहकर सबोधित करती हुइ सावधान करती है— ''आज थारै प्राण पर घात है। जै भागणो बण सकै तो ई नाहर गे धुरी सू बेगो भाग। नी तो काल दिन बस मैं चाली (जावै है)।'

दला को विश्वास नहीं होता। वह धम सकट मे पड जाता है। वीरम उसका बैरी अर मगळियाणीजी धम बहिन। उसका अन्तर्द्वन्द्व इस प्रकार उद्वेलित हुआ है—

दलो (माथै पर सू उठ'र) ई भैण री उपगार म्हारै माथै ओर चढ्यो। (रूक र) वीरम रो इसो भरोसो तो कानी हो। पण मिनख बुराई पर उतरै जद धरम करम नै कद विचारै ? आज वीरम म्हारो बैरी है अर मगळियाणी धरम भैण। आछया धरम सकट आयो।[33]

अपमान मार

अपमान भार मे जोधपुर का कुवर (फलोधी का स्वामी नरा सुजावत) अपनी मां के अपमान का बदला पोकरण के ठाकुर खींवसी से लेता है। रामकरण पुरोहित खींवसी के यहा नरा से नाराजी का बहाना करके पोहकरण चला जाता है और अपनी चतुराई से पोहकरण पर नरा का अधिकार करा देता है।

तीन दृश्यो म रचित प्रस्तुत एकाकी मे चार पात्रो के अतिरिक्त राजपूत, सिपाही, चाकर, दम आदि भी प्रकट होते हैं। प्रथम दृश्य मे लिखमादे पोहकरण के ऐश्वय की बात सुनकर निश्वास छोडने लगती है। उसका पुत्र नरा (नरो सूजावत) भोजन करना बन्द करके मा को इसका कारण पूछता है। कुछ आनाकानी के बाद

---

३१ नैणसी रो साको (धरम सकट), प, १००
सदभ- ह० प्र० A Descriptive Catalogue of Rajasthani MSS pt I, Asiatic Society Calcutta)
३२ नैणसी रो साको पृ १००
३३ वही पृ, १०२

मा (लिखमादे) बतलाती है कि पोहकरण के अधिपति खींवसी ने मेरी सगाई के नारियल (विवाह प्रस्ताव) को अस्वीकृत कर दिया था। उसने मेरी निन्दा की थी तथा मेरा अपमान किया था। पर मेरी मौसी के साथ उसने विवाह कर लिया। यह सुनकर नरा उसी समय खींवसी से बदला लेने का प्रण कर लेता है परन्तु लिखमादे जीतने का उपाय बतलाकर धैर्य से कार्य करने का परामर्श देती है।

द्वितीय दृश्य मे राजपुरोहित का पोहकरण-दरबार मे स्थान पाने का वर्णन है। वहा उसकी ससुराल है। खींवसी को सूचना मिलती है कि नरा ने राजपुरोहित जी का अपमान करके फलोधी से निकाल दिया है। अतः वह पुरोहितजी को ससम्मान दरबार मे बुलवाता है और कहता है—

'गरू महाराज, आप किणी बात रो विचार मतना करो। रजवाड़ा मे ऊंची-नीची हुवती आई है। आप पोहकरण मे बसो। दरबार मे आपनै पूरो सनमान मिलसी। राजसूं आपरी आजीविका रो इन्तजाम हुसी।'[34] यह सुनकर राजपुरोहित कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

तृतीय दृश्य मे पोहकरण विजय का वर्णन है। खींवसी जोगराम गांव मे रात्रि के समय दारू पीने में मस्त है। 'दारूड़ा-मारूड़ा' के दौर मे उसे नरा के पोहकरण पहुंचने व दुर्ग-विजय का समाचार मिलता है। उसे यह भी बतलाया जाता है कि राजपुरोहित ने हरामखोरी करके गोठ की खबर नरा को पहुचायी है तथा दुर्ग-द्वार खुलवा दिये हैं। नरा सूजावत का कब्जा पोहकरण पर हो जाता है। इस प्रकार उसने अपनी मा के अपमान का बदला लिया।

अन्त मे खींवसी कहता है— 'जुलम हुयो। (रूक'र) बामण मराय दीन्या वो इणी काम खातर पोहकरण आयो हो। देस-निकाळो तो एक नाटक हो।'[35]

निष्कर्ष

'नैणसी रो साखो' में राजस्थानी इतिहास के विविध कथानकों के आधार पर ११ एकांकी प्रस्तुत किये गये हैं। यह ध्यानस्थ है कि राजस्थान सिंध, गुजरात और मालवा प्राचीन काल से सांस्कृतिक इकाई रहे हैं। फलतः यहां की 'वातों' (कहानियों) और 'ख्यातों' (इतिहासों) में इस समस्त सुविस्तृत भू-भाग के व्यक्तियों का इतिवृत प्रस्तुत किया गया है। इस सम्बन्ध में 'नैणसी री ख्यात' उल्लेखनीय है।

लेखक ने राजस्थान के इसी प्रथम इतिहासकार नैणसी के जीवन पर इस

३४ नैणसी रो साखो (पतमान - भीर), पृ. १०६

३५ नैणसी रो साखो, पृ. ११२

सग्रह का प्रथम एकाकी 'नैणसी रो साको' लिखा है, जिसमे ध्वनित होता है कि ये सभी एकाकी विशेष उद्देश्य से लिखे गये हैं और वह उद्देश्य है राजस्थान के विविध ऐतिहासिक पात्रो को सर्वथा स्वाभाविक रूप मे मच पर उपस्थित करना। इस बात का कोई आग्रह नही रहा है कि पात्र इस रूप म आदर्श ही हो। इनमे अपनी चारित्रिक विशेषताओं के साथ कमजोरिया भी हैं सभी पात्रो का मनोवैज्ञानिक चरित्र चित्रित है।

प्रस्तुत सग्रह के प्राय एकाकी दु खान्त हैं। अत यथार्थ चित्रण की ओर लेखक का विशेष ध्यान रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानो लेखक ने भारतीय प्राचीन नाटय परम्परा से हटकर अपने ये एकाकी अग्रेजी नाटय सिद्धान्तो के प्रभाव से लिखे हैं। साथ ही यह भी पूरा ध्यान रखा गया है कि इनम स प्रत्येक एकाकी का मच पर सफलतापूर्वक अभिनय किया जा सके।

वर्तमान युग मे प्राय. वे ही साहित्यिक विधाए पाठको को विशेष प्रिय होती हैं, जो आकार म विशेष बडी न हो यही कारण है कि लेखक न राजस्थानी उपन्यास न लिखकर राजस्थानी कहानियां लिखी हैं और किसी नाटक का निर्माण न करके ये एकाकी ही विरचित किये हैं।

अध्याय—७

अन्य-साहित्य

राजस्थानी बात साहित्य : एक अध्ययन (शोध-प्रबन्ध)

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध डा० मनोहरजी शर्मा ने डा० कन्हैयालालजी सहल के निर्देशन मे लिखा है। इसे चार खण्डों म विभक्त किया है।

प्रथम खण्ड

प्रथम खण्ड मे 'बातो' की प्राचीन परम्परा का विवेचन किया गया है। प्रारम्भ मे 'बात' का स्वरूप एव परिचय में भारतवर्ष म कहानी की प्राचीन परम्परा का दिग्दर्शन कराया गया है। ऋग्वेद में प्राप्त पुरुरवा,[1] ययाति[2], यदु[3], तुर्वसु[4] आदि राजाओं से सबधित आख्यानो मे 'बात' (कहानी) के सकेत ढूढे गये हैं। इसी क्रम म उपनिषदों की रूपकात्मक कहानियों मे 'नाचिकेता की कथा'[5] और देवताओं की शक्ति परीक्षा की कथा[6] का उल्लेख किया गया है।

उपर्युक्त प्रसग म रामायण, महाभारत, बौद्ध जातकों के साथ ही प्राकृत के 'वसुदेवहिंडी' (वसुदेव चरित) मे कहानी का रूप निर्देशित किया गया है।[7] 'पचतत्र' 'हितोपदेश' आदि की चर्चा करते हुए अपभ्रंश तक की कथाकृतियो का विवेचन किया गया है— 'अपभ्रंश के बाद आधुनिक भारतीय आर्य - भाषाओं का विकास प्रारभ होता है, इन्हीं में राजस्थानी भी सम्मिलित कर ली गई है।

इसी खण्ड म 'बात' का स्वरूप विवेचित किया गया है तथा राजस्थानी गद्य की विविध विधाओ की सृजनात्मक पृष्ठभूमि का लेखक ने सांगोपाग वर्णन किया है। इसके आग बातों का इस प्रकार वर्गीकरण किया गया है—(१) विषयानुसार वर्गीकरण, (२) कथानक के अनुसार वर्गीकरण, (३) घटना, कार्य आदि के अनुसार वर्गीकरण, (४) लौकिक तत्व के अनुसार वर्गीकरण और (५) कुछ विशिष्ट बात।

---

१. ऋग्वेद— १०-६५ २. वही १०-६३ ३. वही १०-६२

४. वही १०-४६ ५. कठोपनिषद्। ६ केनोपनिषद्।

७. राजस्थानी बात साहित्य एक अध्ययन पृ. १-२

बातो का रूप विकास एव लोक कथाओ की परम्परा विवेचन करते हुए बातो के वतमान रूप की सोदाहरण समीक्षा भी की गई है।

द्वितीय खण्ड

इस खण्ड का शीर्षक 'रचना-तत्र' रखा गया है। इसमे राजस्थानी बातो के कथानक पात्र और चरित्र-चित्रण कथोपकथन तथा उद्देश्य का विवेचन किया गया है। बातों के नामकरण, प्रारभ, मध्य तथा अन्त को भी सोदाहरण विवेचना की गई है। बातों म चरित्र - चित्रण, कथोपकथन और उद्देश्य की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए उनके स्वरूप, प्रकार आदि का सागोपाग विवेचन किया गया है।

तृतीय खण्ड

तृतीय खण्ड मे 'लोक-चित्रण' के अन्तर्गत समाज, देवी देवता, लोक-विश्वास व्यापार एव कृषि, पशु-धन, उत्सव-मनोविनोद आदि का विस्तृत विवेचन किया गया है। यह विवरण प्रस्तुत ग्रथ मे सर्वाधिक विस्तृत है और तत्कालीन राजस्थान के सम्पूर्ण जीवन की चित्रपटी सी प्रस्तुत कर देता है। यह राजस्थान का उत्तर मध्य-काल है, जिसे लेखक ने अपने सोदाहरण विवेचन द्वारा मानो प्रत्यक्ष कर लिया है।

चतुर्थ खण्ड

चतुर्थ खण्ड 'भाषा-शैली' से सम्बन्धित है। राजस्थानी बातो मे साहित्यिकता एव क्षेत्रीय झलक का सही अकन इसमे किया गया है। इस खड मे 'बातो' के 'गद्य-स्वरूप' का निरूपण करते हुए उनमे 'पद्य के प्रयोग' की समीक्षा भी की गई है।

अन्त मे 'उपसहार' लिखा गया है। लेखक के अनुसार— 'राजस्थानी बातों की अपनी कुछ सीमाए हैं पर तु उनके अध्ययन का महत्व बहु विध है। उनका साहित्यिक महत्व तो स्पष्ट हो है। इसके साथ ही उनमें तीव्र जीवन-धारा है, जिसका रस समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकता है। जीवन का प्राण वान तत्व सस्कृति है। अत सास्कृतिक दृष्टि से भी बातो का महत्व कम नही है। इसके अतिरिक्त बातो पर इतिहास छाया हुआ है। इस दिशा में विवचन करने से उनमें अनेक सार सूचनाओ का मिलना स्वाभाविक हैं। राजस्थानी बातो का महत्व इन चारो ही रूपों में प्रकाशित किया जाना आवश्यक है।'[८]

राजस्थानी 'बात साहित्य' से सम्बन्धित प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में लेखक के अनुभव, ज्ञान एव तन्मयता की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है। इस ग्र थ मे राजस्थानी

८ राजस्थानी बात साहित्य एक अध्ययन, पृ २२६

बातो का सांगोपांग विवेचन करते हुए जो निष्कर्ष निकाला है, वह इस प्रकार है—

राजस्थानी बातों का प्रारम्भ विक्रम की सतरहवीं शती से प्रकट होता है परन्तु इनके लिखे जाने की प्रक्रिया ने अठारहवीं शती से विस्तार प्राप्त किया है और ये किसी रूप म आज तक लिखी जाती रही हैं। राजस्थान की लगभग इन चार शताब्दियों की इस साहित्य - सामग्री का महत्त्व साधारण नहीं है।

इस साहित्य सामग्री म कथावस्तु के साथ ही प्रचुर पद्य-प्रयोग भी है। इन पद्यों का अपना स्वतंत्र महत्त्व है। इनमे बहुत बडी सख्या म सरल सुभाषित हैं, जो दैनिक जीवन व्यवहार मे अनेक रूपो मे उपयोगी हैं।

बातो का गद्य परिमार्जित तथा पुष्ट है। उसकी अभिव्यंजना बडी मार्मिक है। साथ ही वह प्रसाद-गुण सम्पन्न भी है। जिस प्रकार बातें कही जाती थी, उसी प्रकार किसी अंश मे सवार-सजाकर वे लिख दी गई। अत: उनम लोक-व्यवहार मे प्रयुक्त होने वाले शब्दों का वृहद् सग्रह सहज ही हो गया। यदि बातो की शब्दावली का कोश रूप मे सकलन कर दिया जाय तो वह भाषा की शक्ति और समृद्धि मे असाधारण वृद्धि करने वाला सिद्ध होगा।

बातो की लेखन-शैली सर्वथा स्वतत्र तथा साथ ही समर्थ है। कई बातें ऐसी भी देखी जाती हैं, जो विशेष रूप मे लिखी गई हैं और सभवत उनका मौखिक रूप उस प्रकार का न रहा हो। बातों की शैली मे एक प्रवाह है। साथ ही बातो मे आश्चर्यजनक नाटकीयता भी है।

राजस्थानी बातो मे तीव्र रसधारा है, जो पाठक के रोम-रोम को आप्लावित कर देती है। वीर एव शृगार- ये दोनो प्रमुख रस बातो मे व्याप्त हैं। इनके साथ ही प्रेमरस का परिपाक भी बडा मार्मिक है। वहा प्रकृति की गोद मे पलने वाले निश्छल एव सरल प्रेम का ऐसा उज्ज्वल रूप द्रष्टव्य है, जो अन्यत्र कम ही मिलता है।

राजस्थानी बातों म मानव-चरित्र का आदर्श चित्रण ही नहीं हुआ, वहा उसके यथार्थ का प्रकाशन भी है। अनेक परिस्थितियों मे पडकर मनुष्य कैसा प्रभाव ग्रहण करता है और किस रूप मे परिवर्तित होता है, यह तत्त्व भी बातो मे अनेकदा चित्रित हुआ है।

बातो की वस्तु और चरित्र मे विशेष आकर्षण है। वे अधिकाशत: मौलिक हैं। अत वे साहित्य-प्रसार हेतु बडे उपयोगी हैं।

बातो का ऐतिहासिक महत्व भी ध्यातव्य है। ऐसी बातें भी अनेक हैं, जो ख्यात तुल्य हैं और वे इतिहास के रूप मे ही प्रस्तुत की गई हैं।

बातो में वर्णित नारी-समस्या विशेष ध्यान देने योग्य है। वहा सती का सम्मान तो सर्वत्र है ही, परन्तु विभिन्न परिस्थितियो मे पड़ी हुई नारी के जीवन का प्रश्न भी तो विचारणीय है।

बातो मे साम्प्रदायिक सद्‌भावना श्रद्‌भुत है। वहा साम्प्रदायिक भिन्नता होकर भी विचित्र एकता है।

साहित्य मे व्याप्त सांस्कृतिक तत्त्वो का महत्त्व सर्वोपरि है। ये तत्त्व ही समाज को सबल बनाये रखते हैं और इन्ही से इतिहास का निर्माण होता है। राजस्थानी साहित्य और उसकी प्रेरणा से विनिर्मित यहा के इतिहास के गौरव का कारण उनमें व्याप्त सांस्कृतिक तत्त्व ही हैं।

यहा जीवन का मोह नही है, आत्म-सम्मान जीवन का उद्देश्य है। वैर-शोधन तो बातो मे 'परम-धर्म' है। एतदर्थ आत्म बलिदान के लिए हर समय व्यक्ति कमर बाधे तैयार बैठा दिखलाई देता है। पात्रो द्वारा विशेष नियमो का धारण किया जाना राजस्थानी बातो का प्रमुख तत्त्व है।

राजस्थानी बातो मे आदर्श पात्रो का चित्रण बड़ी सख्या मे हुआ है और उनको यहा की जनता ने ऐतिहासिक भी माना है। ऐसी स्थिति मे वे अनुकरणीय चरित्र के रूप में सामने आते हैं। बातो में 'सूरां पूरा अर सतवादियां' की महिमा प्रकट हुई है। वहां 'जूझार वीरो' तथा 'सतियो की जीवन-गाथा है, जिन्होने 'जौहर' जैसे व्रत का अनुष्ठान किया है। जिस प्रकार इन वीर सतियो के स्मारकों से राजस्थान की धरती छाई हुई है, उसी प्रकार उनकी गुण कीर्तनमयी बातो का प्रवाह भी यहा उमडता रहा है। इस प्रवाह मे रस-मग्न होकर न जाने कितने वीर 'जूझार' हुए होगे और न जाने कितनी महिलाएं सती हुई होगी। राजस्थानी बातों का प्रधान स्वर आत्म-सम्मान की भावना है। कर्त्तव्य पालन हेतु बलिदान होने के लिए सर्वथा सन्नद्ध रहना इनका सांस्कृतिक - सन्देश है।

अन्य ग्रंथ

डा० मनोहरजी शर्मा ने हिन्दी के माध्यम से राजस्थानी भाषा-साहित्य का गौरव प्रकट करने के लिए अन्य भी कई ग्रन्थ लिखे हैं। यह भी एक प्रकार से उनका राजस्थानी भाषा अथवा साहित्य को योगदान ही है। अत सक्षेप मे उन ग्रन्थों के सम्बन्ध मे भी यहां कुछ चर्चा करना आवश्यक है—

१ लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा

इस ग्रथ मे डा० मनोहरजी शर्मा के विविध विषयो पर लिखे गये विस्तृत

लेखो का सग्रह है परन्तु इनमे प्रधानता राजस्थानी लोक-साहित्य और राजस्थानी बात-साहित्य विषयक लेखो की है। यह ग्रन्थ स्वर्गीय डा० वासुदेवशरणजी अग्रवाल की पुण्य स्मृति मे प्रकाशित किया गया है। स्वर्गीय डा० साहब द्वारा प्रस्तुत भारतीय लोक-संस्कृति विषयक मूलमूत्र 'लोके-वेदे च' को अधिक से अधिक स्पष्ट करने हेतु यह एक विशेष प्रयत्न हैं। कहना न होगा कि ये सभी लेख राजस्थानी भाषा साहित्य अथवा जीवन के सम्बन्ध मे लिखे गये हैं परन्तु इन सब का मूल स्वर भारतीय संस्कृति विषयक है, जिसे विद्वान लेखक ने उदाहरण देते हुए बड़े विस्तार के साथ स्पष्ट किया है। इस प्रकार इस सग्रह के लेखो मे प्राचीन भारतीय लोक-जीवन को आधुनिक भारतीय जन-जीवन के साथ किसी रूप मे सम्बद्ध दिखलाया गया है। जीवन-धारा को जोडने वाला यह स्वर्ण-सूत्र भारत का प्राचीन साहित्य और अर्वाचीन लोक-साहित्य है, जिसमे राजस्थानी लोक-साहित्य मे से विविध उदाहरण चुने गये है।

इस प्रकार यह लेख सग्रह गभीर विद्वतापूर्ण होने के साथ ही अत्यन्त रोचक व आकर्षक भी है।

२ राजस्थान निबन्ध-संग्रह

इस सकलन ग्रथ मे भी उपर्युक्त ग्रथ के समान ही डा० मनोहरजी शर्मा के विविध लेखो का सग्रह है, जो गभीर और साथ ही विस्तृत भी है। इस सग्रह मे कुछ लेख राजस्थान की पुरा-सामग्री विषयक हैं तो कुछ प्राचीन राजस्थानी साहित्य की महिमा प्रकट करने वाले हैं। सभी लेखो में डा० शर्माजी की विद्वत्ता और उनका परिश्रम प्रकाशमान है। राजस्थान के गौरवमय अतीत को प्रत्यक्ष देखने के लिए ऐसे ग्रथ बड़े सहायक सिद्ध होते हैं।

३ रससिद्ध रामनाथ कविया

श्री रामनाथ कविया राजस्थानी भाषा के एक रससिद्ध कवि हो चुके हैं। विशेषता यह है कि आपकी रचनाएं अधिक नही है, फिर भी वे बडी लोकप्रिय हैं। यहा तक कि इनके दोहे अथवा सोरठे कई लोगो को कण्ठस्थ हैं। इनकी रचनाओ मे करणी माता की स्तुति, करणा बावनी और पाबूजी के सोरठे सम्मिलित हैं। इन रचनाओ का पाठ-सशोधन, अर्थ चिन्तन तथा विवेचन प्रस्तुत पुस्तक मे बडी योग्यता और गहराई के साथ किया गया है। लोक-प्रचलन के कारण इस कवि के छन्दो मे जो पाठान्तर हुआ है, उसके विषय मे विस्तृत पाद-टिप्पणियां दी गई हैं। कई अन्य कवियो की रचनाएं भी इस कवि की कविता मे घुल-मिल गई है। इस विषय मे भी विस्तार से प्रकाश डाला गया है। सम्पूर्ण पुस्तक विवेचनायुक्त होने के साथ ही

अत्यन्त सरस व रोचक भी है। 'राजस्थानी साहित्य-समिति (बिसाऊ)' के अन्तर्गत स्थापित 'महाकवि ईसरदास आसन' से दिया गया विस्तृत अभिभाषण ही 'रससिद्ध रामनाथ कविया' नाम से स्वतंत्र पुस्तक के रूप मे समिति की ओर से प्रकाशित किया गया है।

४ चन्द्रसखी की लोक-प्रचलित पदावली

राजस्थान मे 'चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि' के प्रयोग वाले पद बहुत बड़ी सख्या में लोक-प्रचलित हैं। कहना न होगा कि चन्द्रसखी मूलत. पुरुष थे। ये ब्रज मे निवास करते थे। उन्होने ब्रजभाषा मे अनेक पद लिखे हैं, जिनके सम्बन्ध मे 'श्री प्रभुदयाल मित्तल' का अनुसधान-कार्य प्रसिद्ध है, परन्तु राजस्थान में 'चन्द्रसखी' के नाम से गाये जाने वाले पदो की प्रामाणिकता भले ही सिद्ध न हो परन्तु उनकी सख्या बहुत बडी है। डा० मनोहरजी शर्मा ने काफी लम्बे समय तक इनको लोक मुख से श्रवण करते हुए लिपिबद्ध किया है और फिर इनका सग्रह छपवा भी दिया है। इन पदों मे श्री कृष्ण की व्रजलीलाओ का बडा सरस चित्रण हैं और ये राजस्थानी महिला-समाज के जीवन का अ ग बने हुए है। साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कई महिलाए पद के अन्त मे 'चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि' का प्रयोग न करके 'मीरा के प्रभु गिरधर नागर' का प्रयोग भी करती है। डा० शर्माजी ने इस सम्पूर्ण सामग्री पर 'चन्द्रसखी' की लोक-प्रचलित पदावली, एक पर्यालोचन पुस्तक मे विस्तार से चर्चा की है। यह पुस्तक भी राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ से प्रकाशित हुई है।

५ राजस्थानी हरजस

श्री संगीत भारती, बीकानेर के अन्तर्गत स्थापित 'श्री कृष्णानन्द व्यास आसन' से दिया गया यह एक विस्तृत अभिभाषण है। यहा हरजस का अभिप्राय श्रीकृष्ण और श्रीराम के जीवन से सम्बन्धित उन पदों से है, जो लोक - गीतो की तरह राजस्थान मे प्रचलित हैं तथा यहा के महिला-समाज और पुरुष - वर्ग द्वारा पुण्य-क्षणो मे गाये जाते हैं। इनकी सख्या बडी है परन्तु अभिभाषक ने इनमे से चुन हुए हरजसो पर ही चर्चा की है। विशेष बात यह है कि इन हरजसो का सगीत पक्ष भी बडा आकर्षक व मधुर है।

६ राजस्थानी कथागीत : एक पर्यालोचन

यह पुस्तक भी डा० मनोहरजी शर्मा का एक अभिभाषण है, जो लिखित रूप मे तैयार करके 'राजस्थानी शोध-सस्थान, चौपासणी, (जोधपुर) मे भाषण के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। यह सम्पूर्ण अभिभाषण शोध संस्थान की मुख-पत्रिका

'परम्परा' के भाग (५३-५४) मे सन् १६८० मे प्रकाशित हुआ है और आकार मे काफी विस्तृत है। इसमे राजस्थान के चुने हुए उन लोकगीतों का सोदाहरण विवेचन किया गया है, जिनमे किसी रूप मे कोई कथासूत्र अवश्य है। कहना न होगा कि राजस्थान मे इस प्रकार के कथात्मक लोकगीत भी बहुत बडी सख्या मे गाये जाते हैं, जिनके पात्र किसी रूप मे अपनी विशेपता रखते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि राजस्थान के विस्तृत भू-भाग मे जिन नर-नारियो ने कोई विशेप कार्य कर दिखाया है, उनके सम्बन्ध मे कवि-कोविदो ने तो अपनी रचनाएं प्रस्तुत की ही हैं परन्तु साथ ही जन-साधारण मे भी उनके 'गीत' गाये गये हैं। वे गीत आज भी बडे चाव से गाये जाते हैं। इनमे महिला-पात्रो विपयक गीत बडी सख्या मे है। यह ध्यातव्य है कि इन गीतो मे आदर्श के साथ ही यथार्थ जीवन भी चित्रित हुआ है। सम्पूर्ण ग्रन्थ तीन खण्डो मे विभक्त है।[9]

६ तीन खण्ड है— १ पौराणिक कथागीत २ ऐतिहासिक कथागीत और
३ कल्पित कथागीत

-: सम्मतियां :-

प. मनोहर शर्मा के राजस्थानी साहित्य को दिए योगदान के संबंध मे शोधपूर्ण विस्तृत ग्रन्थ लिखकर डॉ सोमनारायण पुरोहित ने अत्यन्त सराहनीय कार्य सम्पन्न किया है। श्री पुरोहित का यह साहित्यिक अवदान अभिनन्दनीय है। ग्रन्थ के द्वारा डॉ. मनोहर शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सहज ही प्रत्यक्ष दर्शन किए जा सकते हैं।

आचार्य श्री बदरीप्रसाद साकरिया,
विद्यानगर (गुजरात)

लेखक का उद्देश्य डॉ मनोहर शर्मा की उन सभी रचनाओं का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करना रहा है, जो राजस्थानी भाषा मे लिखी गई हैं। लेखक ने इन सभी कृतियों पर विस्तार से समीक्षात्मक प्रकाश डाला है और साथ ही उदाहरण भी दिए है। इस प्रकार यह ग्रथ डॉ मनोहर शर्मा के राजस्थानी साहित्य के सम्पूर्ण योगदान का पूरा परिचय कराने मे समर्थ है और साथ ही रोचक भी है। सम्पूर्ण ग्रथ कई अध्यायो में विभक्त है और सरल तथा सुबोध हिन्दी मे लिखा गया है। आशा है, इसका साहित्य-जगत् मे अच्छा स्वागत होगा और इससे इसी प्रकार के अन्य ग्रन्थो के प्रकाशन हेतु प्रेरणा भी मिलेगी।

डॉ. दिवाकर शर्मा

श्री सोम नारायण पुरोहित द्वारा विरचित "डॉ. मनोहर शर्मा का राजस्थानी साहित्य को योगदान" पढकर चित्त प्रसन्न हो गया। डॉ. मनोहरजी शर्मा जैसे महान् मनीषी एव विख्यात विद्वद्रत्न के समग्र साहित्य का विशद् विवेचन होने से प्रस्तुत ग्रथ राजस्थानी साहित्य के अध्येताओ और शोधार्थियो के लिए

डॉ. शक्तिदान कविया